वर्ष-23 ज्येष्ठ-आषाढ़-श्रावण अगस्त2018 अंक-8 प्रकाशन उज्जैन

मूल्य 10/- रुपये

प्रकाशन हर माह की 8 तारीख को

मासिक प्रकाशन

आगमोद्धारक

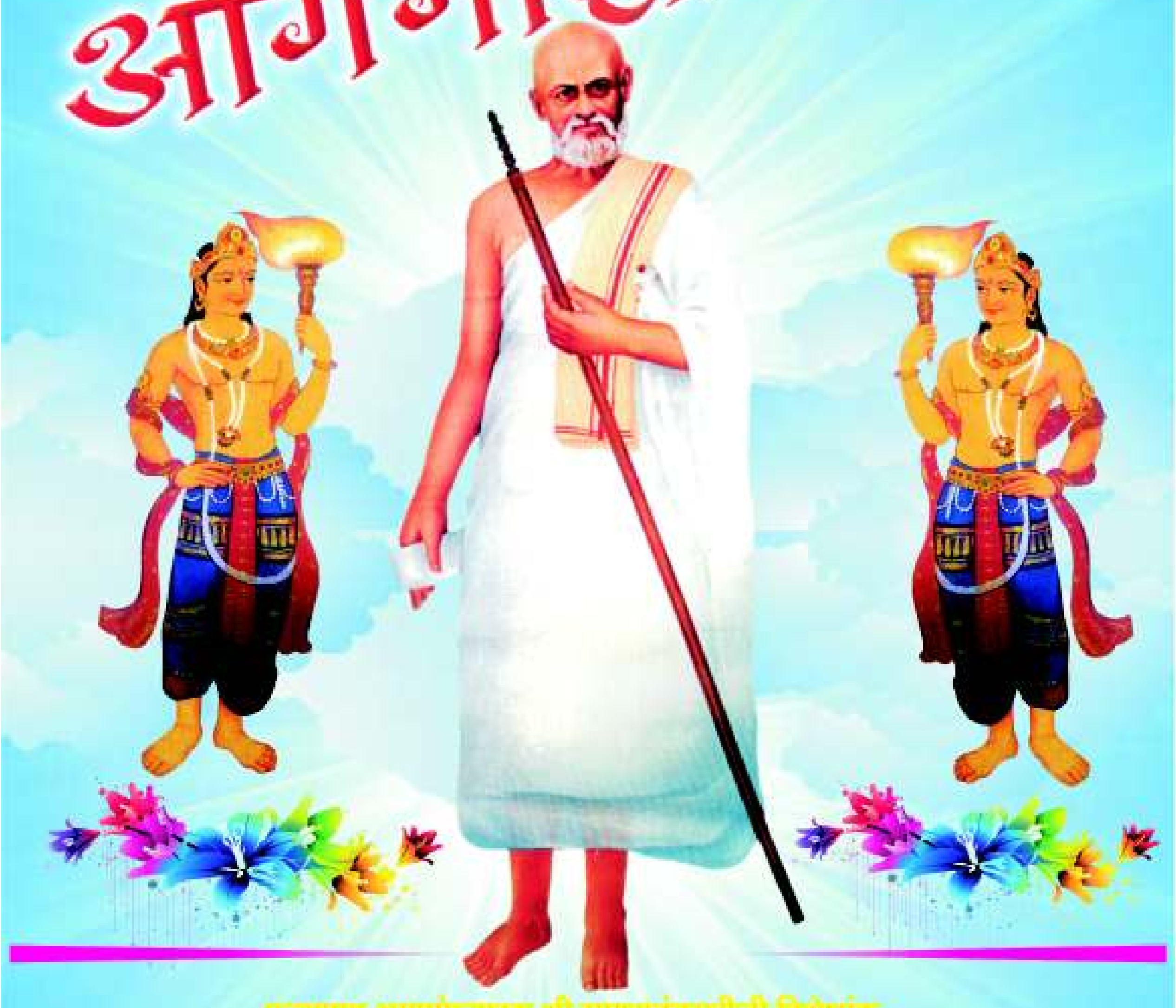

पूज्यपाद आगमोध्दारक श्री सागरानंदसूरीजी विशेषांक

आगम आरस अद्भुत है,
इसमें आत्मा स्पष्ट दिखती है।
जिसने इस विरासत को बतलाया,
उन सागरसूरी के चरणों में शीश झुकाये।।

धन्य अहोभाग्य हमारे कि इस विषम पंचम आरा में सर्वज्ञ प्रभु की अमृत वाणी की विरासत के रूप में आगम ग्रंथ हमें ज्ञानी गुरु भगवंतों के श्रीमुख से सुनने को मिलते हैं। इससे ही हमारे विवेक का दीपक सतेज बना रहेगा।

आगमोद्धारक

नमो नाणस्स नमो नमः

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन
उज्जैन का जैन हिन्दी मासिक

प्रधान सम्पादक
डॉ.सुभाष जैन, उज्जैन

सम्पादकीय कार्यालय
डॉ.सुभाष जैन
46, सखीपुरा, उज्जैन-456001 (म.प्र.)
मोबा. नं. 94250-91012
E-mail-Subash_3333@yahoo.co.in

इन्दौर कार्यालय
प्रफुल्लकुमार जैन ''पप्पू''
1073, सुदामानगर, फूटीकोठी रोड़
इन्दौर-452009 (म.प्र.)
5057087, 5057067
मोबा. नं.-98260-10089

सदस्यता

आगमोद्धारक के सदस्य बनने वाले श्रीमानों से निवेदन है कि सदस्य के लिये शुल्क राशि बैक ड्राफ्ट/चैक/M.O. से श्री अभ्युदय फाउण्डेशन, उज्जैन के नाम से सम्पादकीय पते पर भिजवाये। अन्य नाम से सदस्यता राशि स्वीकार नहीं की जायेगी। - **डॉ.सुभाष जैन**

अरिहंत भगवंत के नाम स्मरण से, सागरोपमों तक जो दुःख भोगने पड़ते हैं, वे क्षण-भर में नष्ट हो जाते हैं परन्तु यह बात इस प्रकार है कि- नाम स्मरण में भावना का पुट लगा हुआ हो। भाव बिना का नाम स्मरण तो वंध्या स्त्री के समान है। जैसे वंध्या स्त्री से पुत्र की आशा निरर्थक है वैसे भाव रहित नाम स्मरण से कर्मक्षय की आशा निरर्थक है।

दिव्य आर्शीवाददाता
प.पू.मालव भूषण आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

मार्गदर्शक एवं प्रेरक
प.पूज्य आचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन, उज्जैन
अध्यक्ष- भाई श्री प्रफुल्लजी जवेरी, मुंबई (महा.)

शाश्वत संदेश

नाणेण जाणई भावे, दंसणेण य सद्दहे।
चारित्तेण निगिण्हाइ, तवेण परिसुज्झई॥

मनुष्य ज्ञान से जीवादि पदार्थो को जानता है, दर्शन से उनका श्रद्धान करता है, चारित्र से (कर्मास्त्रव का) निरोध करता है और तप से परिशुद्ध होता है।

- उत्तरा. सूत्र, 28.35

पाथेय

हे प्रभु ! तुम्हारी वाणी अत्यन्त मधुर एवं निष्पक्ष है एवं तुम्हारे असीम धैर्य की गरिमा से भरपूर है। इस वाणी में नहीं है अधिकार का किंचित भी लेश, नहीं है स्वेच्छा चारिता का आदेश। यह परम शुद्ध एवं निर्मल है एक शीतल झोंके के समान। जब वह वाणी गुनगुनाती है, तो कई बेसुरे वाद्यों के वादन में, ले आती है संगति, समस्वरता एवं लयतान। जो जन सुन पाता है इस वाणी के गायन को, जो श्वॉस लेता है इसकी तरंगित हवाओं में, जिनमें निहित है गहन शांति, सौंदर्य एवं पवित्र सुगन्ध, तो उसकी सत्ता से अनेक बेसुरे भद्दे मिथ्या भ्रम हो जाते है दूर, अथवा रुपान्तरित हो जाते है एक आनन्दमयी स्वीकृति में। इस वाणी के स्वरों मे झलकता है एक महान सत्य।

शुल्क सोपान

स्तम्भ	11,511/- रुपये
आजीवन	1000/- रुपये
पांच वर्षीय सदस्य	301/- रुपये
एक वर्षीय सदस्य	80/- रुपये
एक प्रति	10/- रुपये

नोट- आगमोद्धारक में प्रकाशित रचनाओं से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वर्ष-23 आषाढ़-श्रावण अगस्त 2018 अंक-8

विषय-सूची

1- शाश्वत संदेश, पाथेय	3
2- विषय सूची	4
3- श्रुतज्ञान उपासक : आगमोद्धारकश्री (सम्पादकीय)- डॉ.सुभाष जैन	5
4- रात्रि भोजन से अनेक हानियां -आ.श्रीमद् विजय जिनोत्तम सूरीश्वरजी म.	6
5- वो सुबह कभी तो आयेगी-चन्द्रकांत कडिया, सागरजी बनने की तैयारी कपड़-वंज से श्री सिद्धगिरी की गोद में, सागर का जन्म महोत्सव-सूरत में एक अद्‌भूत प्रसंग	7-8
6- प्राचीन तीर्थ कुंभारियाजी	9-11
7- धर्म की आराधना का मूल मंत्र है स्वयं की खोज- आचार्यश्री विश्वरत्नसागरजी म.	12
8-पाप की सजा भारी-प.पू.आचार्य श्री अरुणविजयजी म.सा.	13-14
8- मैं अनाथी-पू.आ.श्रीमद् विजयमुक्ति/ मुनिचन्द्रसूरीश्वरजी म., श्री मगनभाई भगत	15-16
9-सागर दीक्षा : आंबादेवीजी का दिव्य संकेत और संदेश	17-18
10-सूर्य नगरी में आगमोद्धारकश्री को सूरीपद, ताम्र पर सचित्र कल्प सूत्र	19
11-सागर और शिलात्कीर्ण एवं ताम्रपत्र आगम, करोड़ो की कीमत का हीरा, कार्य सिद्धि के लिये सात उपान	20
12-चार्तुमास का निर्णय हो चुका था फिर भी....	21
13-आगमोद्धारकश्री की जीवन महक.... चंद्रप्रभासागर (चित्रभानु), त्रिपुटी	22
14-सागरजी के गुरुदेव : पूज्य आगमज्ञाता मुनिप्रवर श्री झवेरसागरजी म., आगम रतन मंजुषा	23-25
15-सागर का जन्म महोत्सव-सूरत में अद्‌भूत प्रसंग, कथ्यम्.... पूज्य सागरजी म.	26
16-सागरजी महाराज अर्थात् जंगम पुस्तकालय, आगमधारी आगम वाचनादाता आगमिक प्रवर व्याख्याता सागरजी महाराजा की कुछ विशिष्टाएं	27
17- 24 तीर्थकर के नाम का अर्थ	28
18-आगमोद्धारक भविष्य फल अगस्त -2018- अनु दीपक जैन	29
19-वर्गपहेली- 282	30
20-ज्ञान गंगोत्री- 282- पंन्यास प्रवर मृदुरत्नसागरजी म.	31
21-शासन-समाचार	32-41
22-हमारे तीज त्यौहार, सादर आमंत्रण, सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है	42

संपादकीय

श्रुतज्ञान उपासक : आगमोद्धारकश्री

जिसने *ब्राह्यत्व की उपलब्धि के लिये राग द्वेष आदि अंतरंग एवं ब्राह्य परिग्रह का परित्याग कर विशुद्ध श्रमणत्व को स्वीकार किया, जिनका यश सूर्य की किरणों की भांति पूरे जैन जगत में फैल गया जो अतीत के गौतम,मुनीन्द्र, यशोभद्र,आदि महान आत्माओं के पदचिन्हों का अनुगामन कर जैन जगत में अमरत्व प्राप्त किया ऐसे पूज्यपाद आगमोद्धारकश्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराजा (पूज्यपाद श्री सागरानंद सूरीजी महाराज) अपनी तपस्वी प्रेरणा तेजोवलय और आभामंडल की सशक्ता एवं प्रभाव से धर्मचक्र की भांति जय घोष से जैन जगत हमेशा ही गुजांनमय बना रहेगा। आत्म कल्याण के साथ धर्म, समाज की दशा को निहार कर दिशा देनेवाला साधक स्वरुप सर्वजनहिताय व्यक्तित्व हमेशा उपकारी बना रहेगा।*

जब देश में चारों ओर धर्म विहिनता, हिंसा और वैचारिक प्रदुषण का समाज में व्याप्त हो गया था तब ही श्रमणत्व संस्कृति के संरक्षक के रुप में श्री सागरजी म.सा. जैसे महापुरुष का उद्भव होता है जो वैचारिक और धार्मिक क्रांति के द्वारा जनमन को आंदोलित कर ऐसा परिवर्तन ला देते है कि जिसमें श्रुतज्ञान के प्रति, धर्म के प्रति आस्था तथा जीवन सदाचरण की ओर प्रवृत्त हो जाता है। ऐसी विरल विभूति के प्रति हमारा सिर आस्था और विश्वास से नत्मस्तक हो जाता है। प्रखर व्यक्तित्व के धनी पूज्यपाद श्रीसागरजी महाराजा सार्थक शब्द, शिल्पी, अचिन्त्य प्रज्ञाधारक आगमवेत्ता और श्रमण समुदाय के कुशल संगठक के रुप में हमारे सामने आते है। आपश्री का जीवन बहुमुखी व्यक्तित्व का परिचायक है, आपका जीवन प्रवाह उत्कर्ष त्याग का अनुपम उदाहरण है। सम्यग्य दर्शन-ज्ञान-चारित्र की प्रभावना करनेवाला आपका जीवन धर्म और शासन प्रभावना को समर्पित जिनवाणी के महान उपासक के रुप में हमारे सामने प्रस्तुत होता है।

अल्प गुरु सानिध्य में रहनेवाले चारित्र चक्रवृती पूज्यपाद श्री सागरजी महाराज ने अपने गुरु मुनिपुंग पूज्यपाद झवेर सागरजी महाराजा का अमर आर्शीवाद पाकर शिष्यत्व ग्रहण किया था जो आपने अपने कार्यो से अतीन्द्रिय, चैतन्यपथ पर अग्रेसर होते हुए शासन प्रभावना का ऋण उतारने का प्रयास किया है। अपने श्रमणत्व जीवन का पूर्ण पालन करते हुए पूज्यपाद श्री सागरजी महाराजा भोर के सूर्य के समान अपनी रश्मियों को बिखरते हुए जिनशासन की राह में आनेवाले अंधेरों को अपनी फैली भुजाओं में समेटते हुए ऐसे लगते है कि सम्पूर्ण जैन जगत की सभी समस्याएं दूर कर उसका उद्धार करने के लिये ही इस महामना ने साक्षात जन्म लिया था। पूज्यपादश्री अपने सम्पूर्ण जीवनकाल में मोहमाया के भौतिक छलिया रेगिस्तान में, आध्यात्म का पाठ पढ़ाते, करुणा के अग्रणी दूत बनकर हर आम आदमी के आस्था, श्रद्धा, गुरुभक्ति के महास्तम्भ, जिन शासन के प्रहरी लगते है परमात्मा के ऐसे देदीष्यमान पुजारी के गुणों का व्याख्यान करना असंभव है।

मानव जन्म से नहीं कर्म से महान बनता है। फूल खिलते है सह जाते है, लोग आते है और चले जाते है। बस यादें रहते है, वही जो कुछ कर गुजरते है। पूज्यपाद श्री सागरजी म.सा. के बचपन में ही आपश्री के कुछ करने का दृढ संकल्प सामने दिखाई देता था जैसे आपश्री का जन्म ही जिनशासन के उत्थान के लिये ही हुआ था, शासन के लिये कुछ करने की चाहत ने आपश्री के जीवन को संकल्पित बना दिया, देव गुरु धर्म और दर्शन ज्ञान चारित्र के प्रति अथाह श्रद्धा और गुरु के आशीष ने पूज्यश्री को महान बना दिया। मां की शिक्षा और पिता, परिवार के संस्कार पूज्यश्री के जीवन मूल्य बन गये। श्रुतज्ञान के प्रति अपार श्रद्धा और भक्ति ने आपश्री को आगमोद्धारक बना दिया, इस युग में ऐसा आगमवेत्ता, आगम ज्ञाता और कोई दिखाई नहीं देता है। आगम के उद्धारक ने आगम की इस यात्रा को जैन जगत में विस्तार देकर आगम ग्रंथों को महानता की श्रेणी में ला दिया है यही नहीं श्रमणत्व एक ऐसी परम्परा को जन्म दे दिया जो सागर समुदाय के नाम से श्रमण की महान परम्परा का परिचायक बन गई है जिसने सागर नाम को अमर कर दिया है।

छोटे कद लेकिन बड़ा व्यक्तित्व धारण करनेवाले पूज्यपादश्री सागरजी महाराजा सर्व शक्ति मान अलौकिक शिखर पुरुष के रुप में सामाजिक ही नहीं बल्कि धार्मिक जटिलता पैदा करने वाले लोगों का पुरजोर विरोध कर उन्हें आगम सम्मत समाधान प्रदान करते थे, आपश्री के सम्पर्क में आने के बाद संसारी क्या साधु संत भी पूज्यश्री के भक्त बन जाते थे। अनेक साधु संत पूज्यश्री का विरोध करने के बाद भी उनका सम्मान हृदय से करते थे। पूज्यश्री ने अपना व्यक्ति गत हित कभी नहीं साधा न ही अपने नाम के लिये काम किया। पूज्यश्री अकेले नहीं चमके बल्कि अपने शिष्य समुदाय-गुरुकुल को भी योग्य शिक्षा दी जिससे विभिन्न क्षेत्रों में उन्होंने नाम कमाया यही कारण है कि सागर समुदाय में अनेक महान गुरु भगवंतों का खजाना हमें दिखाई देता है, आज जैनत्व भी पूज्यश्री के योगदान को समझ रही है।

पूज्यश्री की जिनशासन के प्रति समपर्णता, श्रुतज्ञान के प्रति साधना हम सबके लिये प्रेरणास्पद है, मोक्ष मार्ग के पथिक बने पूज्यश्री के अवतरण दिवस पर मैं यह कहना चाहूंगा कि पूज्यश्री मेरे लिये आस्था के मुकुट है जिन्हें मैंने अपने मस्तक पर धारण कर रखा है। श्रमणत्व के सरंक्षक अध्यात्म के अनंत प्रकाश सम्यक दृष्टा को हम सब सादर स्मरण करते हुए भावांजलि अर्पित करते हुए कामना करते हैं कि हमें भी अज्ञान सरिता से पार उतारकर प्रकाशलोक के दर्शन करवाये। यही अभयर्थना।

- डॉ. सुभाष जैन

रात्रि भोजन से अनेक हानियां

* आ.श्रीमद् विजय जिनोत्तम सूरीश्वरजी

सूर्यास्त के पश्चात रात्रि में भोजन करना धार्मिक दृष्टि से तो त्याज्य है ही, स्वास्थ्य और आरोग्य की दृष्टि से भी बहुत हानिकारक है। पहले हम धार्मिक दृष्टि से विचार करे तो जैन धर्म में साधु और श्रावक के लिये रात्रि भोजन करना सर्वथा निषिद्ध है। सामान्य गृहस्थ के लिये भी त्याज्य है। वैदिक ग्रंथों में तो रात को भोजन करना मांस खाने के समान महा दोषपूर्ण बताया है।

सूर्यास्त के पश्चात बहुत से सूक्ष्म जीव पैदा होते है। सूर्य का ताप उन जीवों को उत्पन्न होने से रोकता है। परन्तु रात को वायुमंडल ठंडा होने के कारण अनेक प्रकार के सूक्ष्म जीव उत्पन्न हो जाते हैं। बिजली के तेज प्रकाश में भी वे दिखाई नहीं पड़ते। भोजन के साथ वे भी खाये जाते है। इससे भयंकर जीव हिंसा भी होती है। इसलिये रात्रि भोजन महापाप है। कहा है-

उलूक-काक-मार्जार-ग्रंथ-शम्बर-शूकराः।
अहि-वृश्चिक गोधाश्च जायन्ते रात्रि भोजनात्॥
- योगशास्त्र प्रकाश

रात्रि भोजन पाप के फलस्वरुप मनुष्य मरकर उल्लू कौआ, बिल्ली, गीध, सूअर, सांप, बिच्छू, गोह व छिपकली आदि क्षुद्र तिर्यचों के रुप में जन्म लेता है। नरक में जाने पर वहां भी परमाधार्मिक यमदेव भयंकर यातनाएं देते हैं।

विज्ञान मानता है कि सूर्य की रोशनी से शरीर में रोग प्रतिकारक शक्ति बढ़ती है। सूर्य की प्राण ऊर्जा से खाया हुआ भोजन शीघ्र हजम हो जाता है। इसी कारण तो डॉक्टर लोग हृदय रोगियों को, श्वास-दमा, मधुमेह आदि के मरीजों को तथा जिनकी पाचन शक्ति कमजोर है, उनको रात में भोजन करने का मना करते हैं।

आयुर्वेद ग्रंथों के अनुसार हमारे शरीर में हृदय एवं नाभि, ये ऊर्जा के दो विशेष केन्द्र हैं, इन्हें 'कमल' की उपमा दी है। सूर्य-प्रकाश के अभाव में 'कमल' मुर्झा जाता है। इसी प्रकार सूर्यास्त होने पर हृदय-कमल एवं नाभि-कमल संकुचित हो जाते है-

नाभि पद्म संकोचश्चण्डरोचिरपायतः।
अतो नक्तं न भोक्तव्यं सूक्ष्म जीवादनादपि॥
- योगशास्त्र

हृदय-कमल संकुचित होने पर रक्त संचालन कमजोर पड़ता है और नाभि-कमल संकुचित होने पर पाचन तंत्र शिथिल हो जाता है जिससे खाया हुआ ठीक से हजम नहीं होता और शरीर में रक्त संचरण भी कम पड़ जाता है। क्योंकि रात को ऑक्सीजन की कमी हो जाती है, उसके अभाव से हृदय, नाभि आदि सभी अंग शिथिल पड़ जाते हैं।

सूर्य प्रकाश के अभाव में भोजन में अनेक प्रकार के वैक्टीरिया तो उत्पन्न होते ही है, अनेक प्रकार के सूक्ष्म जीव जो एक हजार वॉट में विद्युत प्रकाश में भी साफ दिखाई नहीं पड़ते, वे भोजन में आकार गिरते हैं। यदि भोजन के स्थान पर प्रकाश की कमी हुई तो अनेक प्रकार के मक्खी-मच्छर, कीड़े आदि भोजन के साथ ही पेट में चले जाते हैं। जिनके कारण अनेक प्रकार की भयंकर बीमारियां हो जाती है। जैसे-

मेघांपिपीलिका हन्ति, यूका कुर्याज्जलोदरम्।
कुरुते मक्षिका वन्ति, कुष्ट रोगं च कोलिकः।
कण्टको दारुखण्डं च वितनोति गलव्यथाम्।
व्यंजनान्तः निपतित स्तालु विध्यति वृश्चिकः।
विलग्श्च गले बालः स्वरभंगाय जायते।
इत्यादयो दृष्ट दोषाः सर्वेषां निशि भोजने।
- योगशास्त्र

भोजन के साथ चींटी खाने में आ जाये तो स्मरण शक्ति मंद होती है। जूं से जलोदर जैसा महारोग, मक्खी खा लेने से उलटी, मकड़ी व छिपकली से कुष्ट रोग होता है। काँटा या लकड़ी का टुकड़ा गले में अटक जाने से सांस रुक सकती है, सब्जी आदि में बिच्छु आदि आ जाये तो तालु में छेद हो जाता है। बाल गले में फंस जाने से स्वर भंग हो जाता है। रात को भोजन करने वालों को इस प्रकार की सैकड़ों तकलीफें घर बैठे ही आ जाती है।

श्री पन्नवणा सूत्र- *श्री समवायांग सूत्र का यह उपांग है। यह उपांग सभी से बड़ा है और रत्नों का खजाना कहकर इस आगम की महिमा वर्णित है। इसके विषय अति गहन है, वस्तु द्रव्यानुयोग से भरपूर है, इसमें नवतत्व की प्ररुपणा है। लेश्या, समाधि और लोकस्वरुप आदि का स्पष्टीकरण से वर्णन दिया गया है। मूल श्लोक 4454 और हरिभद्रसूरिजी रचित 3728 श्लोक प्रमाण वृत्ति है।*

वो सुबह कभी तो आयेगी

✽ चन्द्रकांत कडिया

अहमदाबाद के नरोड़ा गांव के समीप का एक विस्तार। हाउसिंग बोर्ड के कम आय वाले परिवारों के लिये मकानों की एक बड़ी कालोनी। कालोनी में आर्थिक रुप से लगातार संघर्ष करती हुई भिन्न-भिन्न जाति और धर्म के परिवारों का एक पंचरंगी समूह निवास करता है। इस कालोनी में अन्दर प्रवेश करें तो एक कच्चा उबड़-खाबड़ रास्ता और कहीं-कहीं पानी से भरे खड्डे। अत्यधिक निम्न स्तर की क्वालिटी से बने ये मकान। यहां प्रथम मंजिल पर एक छोटी सी रुम में मात्र 33 वर्ष की उम्र की एक विधवा जैन श्राविका पूर्णिमाबहन अपने दो बच्चों के साथ बहुत ही संघर्षपूर्ण जीवन जी रही है।

पति ऑटो रिक्शा चलाते थे। फेफड़ेकी बीमारी, पांच वर्ष में धीरे-धीरे इस बीमारी ने काफी गंभीर रुप धारण कर लिया। फेफड़े की टी.बी. धीरे-धीरे शरीर को कमजोर बना रही थी। मृत्यु पूर्व एक वर्ष तक बिस्तर में ही रहना पड़ा। बड़ी बेटी उस समय नवमी कक्षा में पढ़ती थी। बेटा पहली कक्षा में। अस्पताल में काफी सघन इलाज की जरुरत थी परन्तु घर की परिस्थिति ऐसी थी कि वे अस्पताल में जाकर इलाज नहीं करवा सके। दो छोटे बच्चों को संभालने का उत्तरदायित्व, अस्पताल में रहें तो पति के साथ रहने की जवाबदारी और आर्थिक बोझ तो अधिक से अधिक गहरा बनता ही जा रहा था। न चाहते हुए भी घर पर बिस्तर में पड़े-पड़े जो कोई दवाईयाँ अथवा इलाज उपलब्ध हो सका किया और इसी विवशता में एक-एक दिन गुजारने लगे। अन्त में जुलाई 2010 में पति की मृत्यु हो गई।

ससुराल में एक जेठजी है, सासुजी नहीं है, किसी का साथ भी नहीं है। मायके में भी कोई अच्छी स्थिति नहीं थी। पिताजी को बीमारी के कारण अपना एक पैर कटवाना पड़ा था। छोटी बहन की शादी में पिताजी को अधिक खर्च करना पड़ा, जिससे लेनदारों की संख्या काफी बढ़ गई थी इसलिये वाघेश्वर की पोल (कटला) में पिताजी जहां रहते थे वहां से उन्हें स्थानांतरण करना पड़ा। किरायेदार का अधिकार छोड़ने की राशि (पाघड़ी) प्राप्त हुई। यहां से वे सारंगपुर की तलिया की पोल में देरासर के एक मकान में किराये पर रहने गये।

पूर्णिमाबहन जिस किराये के छोटे से रुम में रहती है, उसका किराया महीने का रुपये 1200/- है। नरोड़ा के मुख्य देरासर में भाता विभाग (प्रसाद बनाने का विभाग) में कुछ समय पूर्णिमा बहन ने कार्य किया किन्तु महिने में 10 दिन से ज्यादा वहां काम मिलता ही नहीं था इसलिये उन्होंने कुरियर कंपनी में नौकरी शुरु की। नौकरी का समय सवेरे 10 से दोपहर 2 बजे तक और शाम को 4 से रात 8 बजे तक का। मासिक वेतन रुपये 2000/-। इसके अलावा आय का अन्य कोई साधन नहीं। मकान मालिक को प्रत्येक महीने की पांचवीं तारीख को रुपये 1200/- की रकम किराये के रुप में अचूक चुकानी ही पड़ती है, एक दिन भी आगे-पीछे नहीं चल सकता।

पूर्णिमा बहन जिस कुरियर कम्पनी में नौकरी करती है वहां से महीने के रुपये 2000/- का वेतन ही मिलता है। बड़ी बेटी ग्यारहवीं कक्षा में पढ़ती है। दसवीं कक्षा में उसने मात्र 40 प्रतिशत अंक ही प्राप्त किये थे। पोषणक्षम आहार के अभाव में बेटी शारीरिक रुप से अत्यधिक कमजोर हो गई है फिर भी घर से नजदीक की एक ज्वेलरी की दुकान में दोपहर एक बजे से रात आठ बजे तक नौकरी करने जाती है। वहां से रुपये 1500/- का वेतन मिल जाता है, इस आय में से रुपये 1200/- किराये के रुप में चले जाते हैं। किराया नियमित चुकाया जा सके, इस कारण बेटी को नौकरी करने की अनिवार्यता खड़ी हुई है।

पूर्णिमा बहन जब आठवीं कक्षा में थी तभी से खाखरे वगैरह बनाने का काम अपने मायके में किया करती थी। पिताजी के नादुरुस्त स्वास्थ्य की वजह से मायके में भी उन्हें खूब संघर्ष करना पड़ा था और वह संघर्ष आज दिन भी उत्तरोत्तर चालू ही रहा है।

गैस का एक सिलेण्डर हो तो तीन-चार महिने चल सके इसके लिये एक समय का भोजन ही जरुरत के अनुसार बना लेती है। गैस सिलेण्डर समाप्त हो जाये तो काले बाजार में से लगभग 400/- के सिलेण्डर को रुपये 700/- में खरीदना पड़ता है। घर में यदि दो सिलेण्डर हो तो यह परिस्थिति दूर की जा सकती है किन्तु....

पूर्णिमा बहन को निरन्तर यह चिन्ता सताती रहती है कि रुपये 2000/- की आय में कब तक अपनी गृहस्थी की गाड़ी चला सकेगी। सिलाई मशीन यदि घर में लायी जावे तो उससे आवक खड़ी की जा सकती है, गैस का यदि एक और सिलेण्डर हो तो रात को खाखरे बनाकर आवक प्राप्त की जा सकती है

किन्तु यह व्यवस्था आज दिन तक नहीं हो सकी है, बेटी को कम्प्यूटर की ट्रेनिंग लेने की भी इच्छा है।

बेटा स्कूल से आता है तब पूर्णिमा बहन या उनकी बेटी घर पर होते नहीं है। पड़ैास में एक मराठी परिवार रहता है वह इस समय दरमियान बेटे का ध्यान रखता है।

पूर्णिमा बहन सोचती है कि जो संघर्ष मुझे करना पड़ा वह मेरी बेटी को न करना पड़े। उनका आत्म विश्वास रत्तीभर भी डगमगाया नहीं है परन्तु किसी का भी साथ न होने के कारण स्वयं की परिस्थिति सुधारने के लिये किस कार्नर से पुरुषार्थ प्रारंभ किया जाये यह उनको समझ में नहीं आता।

हम सभी मिलकर प्रार्थना करें और संकल्प करें कि कैसे भी बस शीघ्र ही घर में सिलाई मशीन आ जाये, गैस का दूसरा सिलेण्डर मिल जाये, बेटी अपनी इच्छानुसार कम्प्यूटर की ट्रेनिंग ले सके और दो टाइम पोषणयुक्त भोजन प्राप्त हो सके, कुछ इस प्रकार की आर्थिक व्यवस्था हो जाये।

पूर्णिमा बहन सकल संघ को जय जिनेन्द्र प्रस्तुत कर रही हैं।

सागरजी बनने की तैयारी कपड़-वंज से श्री सिद्धगिरी की गोद में

पिताश्री की आज्ञा मिल ही गई थी हेमचंद्रभाई के दिमाग में सब कुछ स्थिर था। घर से निकलकर कहां किस दिशा में जाऊंगा यह विचार करने की उन्हें कोई जरूरत नहीं थी इसलिये आपने कपड़वंज छोड़कर सीधे सौराष्ट्र का मार्ग पकड़ा। हेमचंद्र भाई को बचपन से ही तीर्थाधिराज श्री शत्रुंजय गिरीराज की छत्रछाया में जाने की भावना रहती थी। श्री सिद्धगिरी पर दादा के दरबार में पहुंचने का आनंद उन्हें जितना मिलता था वैसा आनंद उन्हें कहीं नहीं मिलता था। यहां पहुंच कर वे यही सोचने लगे कोई जैन साधु विचरते मिल जाये, कोई आचार्य से भेंट हो जाये कि उनके पास दीक्षा ग्रहण कर सकूं। पूज्यश्री सागरजी म.सा. के सिद्धगिरी के प्रेम ने ही शायद आगम मंदिर की स्थापना का योग बनाया होगा। पूज्यश्री ने वरद हस्ते ही पालीताना में सर्वप्रथम बार आगम मंदिर की स्थापना करने में आई थी।

सागर का जन्म महोत्सव- सूरत में एक अद्भुत प्रसंग

विक्रम संवत 2004 की आषाढी अमावस्या वृहस्पतिवार दिनांक 5/8/1948 का मंगलमय दिवस सूर्यपुर (सूरत) के आंगन में पूज्यपाद प्रातःस्मरणीय आगमोद्धारक श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराज की 74वें जन्म महोत्सव प्रसंग पर हुआ स्वर्ण महोत्सव के रूप में याद किया जाता है। इस मंगलमय प्रसंग पर ताम्रपत्र जैनागम मंदिर में आंगी पूजा भावना श्री अनंतनाथजी मंदिर में आंगी पूजा व्याख्यान में लड्डू की प्रभावना रखी गई थी।

इस अवसर पूज्य आगमोद्धारश्री ने लगभग एक घंटा 10 मिनट व्याख्यान दिया था और फरमाया था कि हीरे की कीमत जानकार ही करता है,बालक नहीं, बच्चा उसे कांच की गोटी ही समझता है। बच्चा उसके वास्तविक स्वरूप को जाने बगैर देखता है जबकि जवेरी हीरे के स्वरूप को देखकर समझता है। व्याख्यान की समाप्ति के बाद पूज्य गुरुदेव के जीवन पर श्राविका बहनों ने एक ऐसी गहुली का गान किया जिसमें उनके सम्पूर्ण जीवन की झलक मिलती थी। गहुली सुन श्रीसंघ आनंदित हो गया। इसके बाद सेठ श्री डाकोरभाई वकील ने गुरुदेव की यशोगान से आनंद ला दिया। उन्होंने कहा कि -व्याख्यान में कहा गया कि सिद्ध वस्तु का विवेचन करने की जरूरत नहीं होती है जैन गगन में पूज्यपाद आगमोद्धारक श्री एक सिद्ध प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित अजोड़ आचार्यश्री है। समस्त जैन संघ और सूरत के जैन संघ आपश्री की 74वीं वर्षगांठ के शुभ अवसर पर दीर्घायुष्यवान हो ऐसी इच्छा है। इसके बाद सुश्रावक धर्म परायण डाकोरभाई दयाचंदमलजी ने बताया कि- शासन प्रभावक श्री देवार्दिकगणि सश्रमण के बाद आगम की अमूल्य विरासत चतुर्दिक संघ को प्रदान कर और सुस्थिर बनाकर पूज्य आगमोद्धारक आचार्य देवेश ने वर्तमानकालीन आचार्यों में कीर्तिरूप नदी के प्रवेश बगैर यशसागर भरा गया उसे जैन शासन में अखण्डित रखने का आपश्री ने विशिष्ट कार्य किया है उपसंहार करने के लिये पूज्यपाद प्रातःस्मरणीय श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराज के परम विद्वान सुशिष्य पन्यासप्रवर श्री चंद्रसागरजी गणि जी ने पूज्य गुरुदेव के गुणगान किये एवं अपना सारगर्भित व्याख्यान दे सर्वमंगल का श्रवण कराया ओर संघ विसर्जन हुआ।

प्राचीन तीर्थ कुंभारियाजी

गतांक से आगे....

श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिरः-

श्री महावीरस्वामी भगवान के मंदिर के पूर्व की ओर श्री पार्श्वनाथ भगवान का भव्य और विशाल मंदिर है। इस मंदिर की आकृति श्री नेमिनाथ भगवान के मंदिर जैसी है। इस मंदिर की पश्चिम दिशा का द्वार पेढ़ी के आगे के चौक में आता है और उस द्वार से विशेष आवागमन होने के कारण उत्तर दिशा का द्वार बंद रखा जाता है।

इस मंदिर का मूलगर्भगृह, गूढमंडप, छह चौकियां, सभामंडप, श्रृंगारचौकियां दोनों ओर की मिलाकर 24 देहरियां एक आला और शिखरबंधी निर्मित है। पूरा मंदिर संगमरमर पत्थर से निर्मित है।

मूलगर्भगृह में मूलनायक श्री पार्श्वनाथ भगवान की सुंदर परिकरयुक्त एकतीर्थी प्रतिमा बिराजमान है उसके ऊपर श्री विजयदेवसूरि द्वारा प्रतिष्ठा किये जाने का संवत् 1675 का लेख है।

गूढ़मंडप में श्री शांतिनाथ तथा श्री पार्श्वनाथ प्रभु की परिकरयुक्त दो कायोत्सर्ग प्रतिमाएं हैं। उनके ऊपर संवत् 1176 के लेख है। बायें हाथ की ओर तीन तीर्थी वाला एक रिक्त परिकर स्थापित है। उसमें मूलनायक की मूर्ति नहीं है। परिकर से अलग हुई 3 कायोत्सर्ग प्रतिमाएं और एक माता अंबाजी की भी मूर्ति है।

छह चौकियों में दोनों ओर के दो आलों में से एक आले में पूरा परिकर, स्थंभों के सहित तोरण आदि पर सुंदर नक्काशी की गई है।

गूढ़मंडप और सभामंडप के झुम्मर, छह चौकियों का अग्रभाग, छह चौकियाँ और सभा मंडप के चार स्थंभ, एक तोरण, दोनों ओर की बीच की एक देहरी के द्वार झुम्मर सिर के शिखर और प्रत्येक गुंबद में सुन्दर नक्काशी की गई है। स्तंभों पर देवियों, विद्याधारियों तथा अन्य की नक्काशी है।

मंदिर में उत्तर दिशा के द्वार से प्रवेश करने पर दांये हाथ की ओर मकराणा के नक्काशीदार दो स्तंभों पर मनोहर तोरण है। उनमें से एक स्तंभ पर संवत्-1181 का लेख है। गूढमंडप के स्थंभ और बनावट महावीरस्वामी भगवान के मंदिर जैसी है परन्तु श्री शांतिनाथ भगवान के मंदिर की तरह इसमें केवल चार तोरण है जिसमें से देवकुलिका के बरामदे के सामने स्थित सीढ़ियों के ऊपर की ओर इस समय एक ही बचा है। इसमें नेमिनाथ भगवान के जिनालय की तरह झुम्मर के आसपास बाँस की जालियां लगाई हुई हैं। देवकुलिका के बाहर का भाग तथा गूढमंडप का एक भाग अर्वाचीन है। सीढ़ियों के साथ लगे हुए दो स्तंभों के मध्य एक पुरानी बारसाख गूढमंडप की पश्चिमी दीवार पर चुनी गई है परन्तु यह द्वार बंद नहीं किया गया है। दीवार की दूसरी ओर ऐसी ही बारसाख लगाने का प्रयत्न किया गया हो ऐसा अनुमान होता है। चूंकि दीवार के आगे दो स्तंभ खड़े किये गये हैं।

मूल देवगृह की बारसाख पर सुंदर नक्काशी काम किया गया है परन्तु उसके ऊपर बाद में गुजराती रीति के अनुसार रंग रोगान का कार्य किया गया है।

श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिरः-

श्री महावीरस्वामी भगवान के मंदिर के आगे मार्ग छोड़कर पास में श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर स्थापित है। उसकी रचना भगवान महावीर स्वामी के मंदिर जैसी ही है। इस जिनालय के पूर्व और पश्चिम तथा उत्तर की और से द्वार विशेष कार्य के अतिरिक्त बंद ही रहते हैं। केवल पूर्व की ओर के द्वार से ही आवागमन होता है।

यह मंदिर मूलगर्भगृह, गूढ़मंडप, छह चौकियों, सभामंडप मुख्य द्वार के दोनों ओर स्थित 16 देहरियों और 10 आलें गोखरों तथा शिखर से सुशोभित है। मंदिर के पीछे का भाग खाली है। तीनों द्वारों की श्रृंगार चौकियां आदि सभी संरमरमर पत्थर से बने हुए हैं। मूलगर्भगृह में मूलनायक श्री शांतिनाथ भगवान की परिकर विहीन प्रतिमा बिराजमान है।

गूढ़मंडप में परिकर से अलग हुई 4 कायोत्सर्ग प्रतिमाएं, 2 इन्द्र की और 1 हाथ जोड़कर खड़े हुए श्रावक की मूर्ति है। ये सब गूढ़मंडप में अलग रखी गई है।

मूलनायक के नीचे की गादी पर संवत् 1302 का लेख है परन्तु वह गादी जीर्णोद्धार के समय वहां लगाई गई होगी ऐसा लगता है। आरासण के श्रावकों ने वह गादी तैयार करवाई है और उसमें श्री पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा के प्रतिष्ठित किये जाने का उल्लेख है। जबकि मूलनायक श्री शांतिनाथ भगवान है।

छह चौकियों में गूढ़मंडप के मुख्य द्वार के दोनों ओर सुंदर नक्काशी वाले दो गोखर है उनमें से एक में एकतीर्थी का केवल परिकर लगाया हुआ है।

छह चौकियों और सभामंडप के गुंबद तथा स्थंभों पर आबू पर स्थित देलवाड़ा के मंदिरों जैसी सुंदर नक्काशी उत्कीर्ण की गई है। उनमें भी छः स्तंभों में विशेष नक्काशी की गई है।

छह चौकियों और सभामंडप की दोनों ओर की छतों के 12 खंडों में भी आबु-देलवाड़ा के मंदिरों जैसे ही विभिन्न प्रकार के सुंदर भावचित्र उत्कीर्ण किये गए हैं। छत में जो भावचित्र उत्कीर्णित है उनमें विशेषतः पंचकल्याण के साथ तीर्थंकरों के विशिष्टजीवन प्रसंग, कल्पसूत्र में वर्णित घटनाएं स्थूलभद्र का प्रसंग आदि भावचित्र उत्कीर्ण है। उन्हें समझाने के लिये प्रत्येक के नीचे लेख लिखे हैं। प्रत्येक देहरी और आलों में प्रस्तरासन और परिकर है उनमें से कुछ देहरियों के अलग हुए भाग जहां-तहां रखे हुए हैं। इस मंदिर की देहरियों की प्रतिमाओं पर संवत् 1087 संवत् 1110 तथा उन देहरियों पर और उनके अंदर के प्रस्तारसनों की गादियों पर संवत्-1138 के लेख हैं। यह मूल मंदिर तो संवत् 1087 या इससे पूर्व का निर्मित हो ऐसा ज्ञात होता है।

यहां के मंदिरों मे से मिले हुए लेखों में इस विभाजन के लेख सबसे प्राचीन लगते है। उनमें संवत् 1087 का लेख सबसे प्राचीन है।

मंदिर में बांये हाथ की ओर कोने में चतुर्द्वार की देहरी में समवसरण के आकारवाले सुंदर नक्काशीदार प्रस्तरासन के नीचे दो खंडों में चारों दिशाओं में तीन-तीन जिनप्रतिमाएं उत्कीर्णित की गई है। उसके ऊपर एक ही पत्थर में तीन गढ्युक्त चतुर्मुख (चार प्रतिमावाला) समवसरण रखा हुआ है। उस पर लेख लिखा हुआ है।

इस मंदिर की निर्माणशैली यहां के श्री महावीर स्वामी भगवान के जिनालय जैसी ही है। अंतर मात्र इतना है कि ऊपर की कमान के दोनों और भगवान महावीरस्वामीजी के मंदिर की तरह तीन नहीं अपितु चार आले हैं। इन प्रत्येक आलों में संवत् 1138 के लेख है और एक लेख संवत् 1146 का है इसके अलावा मंडप के आठ स्थंभ, जो अष्टकोणाकृति में है वे झुम्मर को आधार देते हैं। उसके ऊपर चार तोरण है। ये सभी तोरण टूट गये हैं। मात्र पश्चिम की ओर का अवशेष बचा हुआ है।

पीछे के खाली भाग में एक देहरी है, उसमें नंदीश्वर की संरचना की हुई है, कुछ छोटी-छोटी मूर्तियां भी है परन्तु अधिकांशतः खंडित हो गई है। बाहर के चबूतरे पर आले की दीवार पर लगाई गई मूर्ति सूर्य यक्ष की है। उसे कुछ लोग 'गणपति की मूर्ति' भी कहते हैं उसके दोनों ओर दीवार में कुछ अन्य मूर्तियां भी लगाई गई है उसमें एक मूर्ति चामरधारी की है। इस शांतिनाथ भगवान के मंदिर में वस्तुतः सर्व प्रथम मूलनायक श्री ऋषभदेव की मूर्ति प्रतिष्ठित होगी। मुनि श्री जयंतविजयजी की पुस्तक कुंभारिया के परिशिष्ठ में दिये हुए संवत् 1148 के लेखांक- 28 (14/6) में इस मंदिर का श्री मदादिजिनालये ऐसा उल्लेख किया गया है। इसके अतिरिक्त संवत् विहीन लेखांक, 30 (150) में ऋषभालये ऐसा उल्लेख मिलता है अर्थात् संवत् 1148 के बाद किसी समय यहां मूलनायक की प्रतिमा में कोई बदलाव हुआ होगा।

श्री संभवनाथ भगवान का मंदिरः-

श्री नेमिनाथ भगवान के जिनालय के दक्षिण में लगभग दो सौ वर्ग की दूरी पर श्री संभवनाथ भगवान का मंदिर स्थित है। सभी मंदिरों की अपेक्षा इस मंदिर की संरचना भिन्न हो और प्रमाण में छोटी भी है। यह मंदिर मूलगर्भगृह, गूढ़मंडप श्रृंगारचौकी, कोट तथा शिखरयुक्त है। मंदिर में प्रदक्षिणा मार्ग-परिक्रमा नहीं है। पत्थर का बना है। प्रत्येक दरवाजे पर प्रायः नक्काशी की गई है और शिखर पर भी नक्काशी की गई है। मूलगर्भगृह में मूलनायक श्री संभवनाथ भगवान की मूर्ति बिराजमान है। उसे एक प्राचीन वेदी पर स्थापित किया गया है। कुछ लोग इस मूर्ति पर सिंह का लांछन होने के कारण इस मूलनायक श्री महावीरस्वामी की मूर्ति भी मानते है परन्तु इस समय यह मंदिर श्री संभवनाथ का मंदिर कहा जाता है। प्राचीन ग्रंथों और 'तीर्थमालाओं' में संभवनाथ के मंदिर का उल्लेख नहीं है। वस्तुतः प्राचीनकाल की चित्रशैली में सिंह की आकृति घोड़े जैसी ही होती है अर्थात् यह मंदिर 'श्री महावीरस्वामी का मंदिर' होगा ऐसा लगता है।

गूढ़मंडप के एक गोखर में परिकर के साथ पंचतीर्थी की एक प्रतिमा स्थापित की गई है। गूढ़मंडप के प्रत्येक गोखार में मूर्ति रहित खाली परिकर है तथा एक श्रावक-श्राविका की युगल है।

आरासण के इन चार मंदिरों का शिल्प-स्थापत्य, स्थंभ, कमान, छतों में आलेखित भावचित्र और संरचना आबू पर स्थित देलवाड़ा के विमलवसही मंदिर जैसी है अर्थात् संवत् 1087 में विमलवसही की प्रतिष्ठा हुई उसमें एक वर्ष पूर्व यहां के शांतिनाथ भगवान के मंदिर से मिले पहली देहरी के संवत् 1087 के लेख के आधार पर कहा जा सकता है इस समय

से पूर्व ही आरासण में मंदिर निर्माण का कार्य प्रारंभ हो गया था।

उपलब्ध ऐतिहासिक उल्लेखः-

ये मंदिर किसने बनवाये, इस विषय में कोई निश्चित कथन नहीं मिलता, तथापि श्री शीलविजयजी अपनी तीर्थमाला में लिखते हैं किः-

'आरासणि छिं विमलविहार, अंबादेवी भुवन उदार' (देखिए, प्राचीन तीर्थमाला भाग-1, पृष्ठ-103, कड़ी-31)

श्री सौभाग्यविजयजी ने भी संवत्-1750 में रचित 'तीर्थमाला' में लिखा है- 'आरासण आबुगढे जे नर चढें रे विमलवसी विसतार'

और फिर खीमाकृत 'चैत्य-परिपाटी' गाथा-17 में बताया गया है कि-

आरासणि अरबद शिरे, वंदु विमलविहार

(जैन युग पुस्तक-04 अंक : 6-8, पृष्ठ- 252)

'विजय प्रशस्ति महाकाव्य' सर्ग-21, श्लोक की 60 वीं टीका में भी इसी बात का समर्थन मिलता है। ये सभी उल्लेख इन सभी मंदिरों को मंत्री विमलशाह द्वारा निर्मित किया हुआ बताते हैं।

यहां 11 वीं शताब्दी के द्वितीय चरण में नन्नाचार्य-गच्छ के आचार्य सर्वदेवसूरि ने 12 वीं शताब्दी के द्वितीय चरण मे वादीन्द्र देवसूरि ने, बृहद्, चंद्र और महाहड़ आदि गच्छों के सूरि मुनियों ने भी प्रतिष्ठादि की है। यहां संवत् 1148 (ई.सं.1092) में थारापद्र गच्छीय यशोदेवसूरि ने आरासणगच्छ भी स्थापित किया था।

मांडवगढ़ के मंत्री पेथड़शाह के पुत्र झांझण संवत् 1340 (ई.स.1264) में यहां संघ लेकर यात्रार्थ आए थे उसके बाद एकाध दो दर्शकों में खरतरगच्छीय आचार्य जिनचंद्रसूरि (तृतीय) और उसके बाद युगप्रधान आचार्य जिनकुशलसूरि संघ के साथ संवत्-1379 (ई.स.1323) में वंदनार्थ आए। इसके अलावा 15 वीं शताब्दी की तथा 17 वीं शताब्दी की, कुछ चैत्यपरिपाटियों में इस तीर्थ के विद्यमान मंदिरों के नाम सहित उल्लेख मिलता है।

आरासण में सोलंकियों के शासन के पश्चात् राजा भीमसेन द्वितीय के मिलने वाले संवत्-1263 (ई.स.1207) के लेख के बाद से या उसी समय में आबू की इतिहास-प्रसिद्ध परमार राजा धारावर्षदेव का शासन रहा होगा ऐसा अभिलेखों पर से जानने को मिलता है।

13 वीं शताब्दी के अंत में हुए मुस्लिम आक्रमणों का आरासण भी शिकार हुआ। उसकी देवप्रतिमाएं खंडित हुई और नगर लगभग नष्ट हो गया। 14 वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में त्रिसंगमक (त्रिशृंगमक) के राणा महिपालदेव के आरासण पर के शासन के पश्चात गांव तथा देवमंदिर क्रमशः वीरान हो गए, तथापि 15 वीं शताब्दी में कुछ जैन यात्री आरासण आते रहे होंगे, वैसा विवरण है।

जीर्णोद्धार–

श्री विजयसेनसूरि के उपदेश से तारंगा, शंखेश्वर, सिद्धाचल, पंचासर, राणपुर, आरासण और वीजापुर इत्यादि के मंदिरों का उद्धार संवत् 1369 से 1676 तक हुआ।

इस तीर्थ के कार्यभार का संचालन मुंबई वासी सेठ रायचंद के आधीन आया। उसके बाद अहमदाबाद के नगर सेठ ने भी इस तीर्थ के कार्यभार के संचालन का उत्तरदायित्व संभाला और अंत में दांता का श्री संघ यहां के कार्यभार का संचालन करने लगा।

संवत्-1957 (ई.स.1901) में यहां यात्रियों के लिये धर्मशाला बनी थी। पश्चात संवत् 1976 (ई.स.1920) के वर्ष में आचार्यश्री विजयनेमिसूरीजी यहां पधारे। इन भव्य जिनमंदिरों की दुर्दशा देखकर उनको बहुत दुःख हुआ।

आचार्यश्री ने उनका जीर्णोद्धार करवाने का निर्णय किया। उन्होंने अहमदाबाद के सेठ आणंदजी कल्याणजी पेढ़ी के सदस्यों को कुंभारियाजी में बुलाया। सभी एकत्रित हुए और संवत् 1976 (ई.स.1920) में दाता श्रीसंघ ने कुंभारिया की व्यवस्था के संचालन का कार्य सेठ आणंदजी कल्याणजी पेढ़ी को सौंप दिया।

ई.स.1921 के आसपास जीर्णोद्धार का कार्य प्रारंभ हुआ। गर्भगृह और सभामंडपों को साफ करवाया। आरासण की खान से संगमरमर पत्थर निकलवाया गया। कुशल कारीगरों द्वारा पुराने और टूटे हुए भागों को सुधरवाना शुरु किया। पुराने स्तंभ, पाट आदि को कोई क्षति ना पहुंचे इस प्रकार से नवीन कार्य होने लगा। यह काम निरंतर तीन वर्षो तक चलता रहा। संवत् 1990 (ई.स.1934) में पुराने ध्वज-दंडों के स्थान पर नये ध्वज-दंड चढ़ाये। इस प्रकार पेढ़ी ने कार्यभार-संचालन संभाला तब से इस तीर्थ के जीर्णोद्धार में लाखों रुपये खर्च किये और संचालनतंत्र को भी व्यवस्थित किया। इस तीर्थ के पूरे परिसर का नये सिरे से विकास कार्य किया।

(स्व.प्रो.मधुसुदनभाई ढाकी द्वारा लिखित पुस्तक में से)

धर्म की आराधना का मूल मंत्र है स्वयं की खोज

✽ आचार्य श्री विश्वरत्नसागरजी म.

मानव का जन्म, परमात्मा का शासन मिलने के बाद क्या करना चाहिये ? जिस प्रकार डॉक्टर की पढ़ाई, इंजीनियर की पढ़ाई, सी.ए. की पढ़ाई के बाद डिग्री प्राप्त होती है जिससे आप उस क्षेत्र मे कार्य आसानी से कर सकते हो लेकिन मानव की डिग्री मिलने के बाद हम क्या कर रहे। गहराई से सोचने समझने की बात है, धर्म की आराधना का मूल मंत्र है, स्वयं की खोज, जो व्यक्ति स्वयं की खोज नहीं कर पाता वह हमेशा असफलता की राह पर बढ़ता रहता है। यह बात मुंबई महानगर ठाकुर द्वारा जैन स्थानक भवन में अपने प्रवचन के माध्यम से कही। आचार्यश्री की सामैया प्रार्थना सभा से प्रारंभ होकर सुरेशभाई कोठारी के यहां पगले के साथ मांगलिक प्रवचन हुए। वहां से विभिन्न मंदिरों के दर्शन करते हुए श्री जैन स्थानक उपाश्रय में गये, बीच मे जगह-जगह अपने गुरुदेव का स्वागत व अगवानी स्थानक श्री संघ द्वारा की गई। आपने आध्यात्मिक प्रवचन मे आचार्यश्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा ने कहा कि -आप कौन है, जिस पहचान को लेकर हम जीवन व्यापन कर रहे वह आप नहीं है क्योंकि पहचान के लिये नाम लेते है, जैसे मैं चांद हूं, मैं एक ईमानदार हूं। सारी उम्र गुजर गई, पढ़ाई, सोने, बिजनेस, सांसारिक कार्यो में जिंदगी नहीं जाती है। मैं भगवान महावीर के शब्दों को बताने आया हूं। विज्ञान ऐसा मानता है कि व्यक्ति का शरीर एक निश्चित उम्र के बाद चेंज हो जाता है। आप एक आत्मा है, सिद्ध थे, बुद्ध से निरंकारी, निराकार, अजर अमर के स्वामी हो, आप संसार में अकेले आये थे लेकिन बाद में परिवार रिश्ता, मित्रता बनाई उसके थोड़े समय बाद में आप अकेले जायेंगे। राग आंशिक भी न करें जिस व्यक्ति ने मोह, रागदशा से दूर होने का प्रयास किया वह आत्मसाक्षात हो गया। कभी विचार आया कि संसार के लिये बहुत किया लेकिन अपनी आत्मा के लिये क्या किया। यह शरीर नश्वर है, ऐसा विचार कभी मन में आया, मैं शरीर नहीं हूं, प्रद्गल हूं, मैं एक आत्मा हूं, मुझे असली शरीर प्राप्त करना है, धर्म बोल रहा है कि मानव तू एक आत्मा है, तेरा जन्म जन्मो-जन्मो का कल्याण करने के लिये हुआ है। आत्मा से परमात्मा बनने की प्रक्रिया है, जैन शासन व धर्म की एक मंदिर से जुड़े संत को स्थानक में प्रवचन के लिये लाये। यह दिल की बात है। आत्म तत्व प्राप्त संत आपस में मिलते है तो मन गद्-गद् हो जाता है। हमारे गुरुदेव आचार्यश्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा ने अपने गुरुनगर राजगढ़ (धार) (म.प्र.) में एक-एक स्थानकवालों के घर पर पगले किये और स्थानक भवन के लिये पानड़ी करवाई और स्थानक बनवाया। स्थानक व मंदिर का दूध, पानी जैसा मिलन है, पथ भले ही अलग हो लेकिन भाव व वेष तो महावीर ही है। मैं स्थानक बनाने वाले मुनियों को प्रणाम करता हूं क्योंकि अगर यह एक स्थान नहीं बनवाते तो आप और हमारा मिलन नहीं होता। प्रवचनकार मुनिराज श्री तीर्थरत्नसागरजी म.सा. ने जीवन क्या है ? जीवन कर्मो का बंधन है, जीवन सासों की डोर है और जीवन पानी का एक बुलबुला है। जीवन में सुख और आनंद क्या है ? सुख बाहर शरीर से जुड़ा है, लेकिन आनंद आत्मा से जुड़ी हुई है। संसार मे दुःखी होने का कारण मैं हूं। जीवन में लक्ष्य एक होना चाहिये। जहां इच्छा एक होती है तो जीवन आनंदमय बन जाता है लेकिन मानव आज के बारे में नहीं सोचता है लेकिन कल की चिन्ता के पीछे सोचते-सोचते एक दिन में चला जाता है। आचार्यश्री का मुंबई महानगर में स्थानक भवन में चौथा प्रवचन हुआ। यह एक आश्चर्य की बात है।

एक अद्भुत छःरि पालित संघ

विक्रम संवत 1976 में सूरत के प्रसिद्ध श्रेष्ठ श्री जीवणचंद्र नवलचंद्र जवेरीजी द्वारा पूज्यपाद जीवंत आगम ज्ञानकोष के सागर पूज्य आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराज की पवित्र पावन निश्रा में श्री सिद्धाचल महातीर्थ पालीताणा का संघ निकाला था। इस संघ के बाद आप पूज्यश्री का मंगल चातुर्मास सिद्धगिरी में ही हुआ। उस समय याने आज से लगभग 81 वर्ष पूर्व इस चातुर्मास में दो लाख रुपये से अधिक का खर्च हुआ था। इस संघ में 700 श्रावक श्राविका और साधु-साध्वीजी थे। सूरत में महावद 8 को संघ ने प्रस्थान किया था, जिसने चैत्य वद 2 के दिन श्री सिद्धाचल की पावन रज को स्पर्श किया था।

पाप की सजा भारी...!

* प.पू.आचार्यश्री अरूणविजयजी म.सा.

गतांक से आगे...!

आत्मा को कर्म का बंधः-

आप सोचेंगे ऐसी अनन्त शक्तिवाली आत्मा अनन्त ज्ञानादि गुणों से परिपूर्ण विशुद्ध आत्मा और आज इसे कर्म के बंधन से बांधकर एक पामर का दीन-हीन हालत में बिचारे की संज्ञा में पड़ा रहना पड़ता है क्या कारण है ? क्या पहले आत्मा शुद्ध थी और फिर कर्म कर्म लगे ? क्या शुद्ध-विशुद्ध आत्मा को कर्म लगे और वह अशुद्ध होकर संसार में आई ? नहीं ! यदि ऐसा कहे तो मोक्ष में गई हुई शुद्ध-बुद्ध-सिद्ध आत्मा को भी कर्म लगेंगे और वह भी अशुद्ध बनकर फिर संसार में आ जाएगी तो फिर ऐसे मोक्ष से भी क्या फायदा? जहां से वापिस कर्म लगे और वापिस आत्मा को संसार में गिरना पड़े यद्यपि चांद सिद्धशिला पर के क्षेत्र में जहां अनन्त सिद्धात्मा, मुक्तात्मा बिराजमान है- वहां भी कार्मण वर्गणा आदि आठों वर्गणाएं है साथ ही एकेन्द्रिय के पृथ्वी-पानी-अग्नि-वायु-वनस्पतिकाय के सूक्ष्म स्वरुप वाले अनन्त जीव भी वहां सिद्धशीला पर है उन्हें जिन वर्गणाओं की आवश्यकता पड़ती है उसे वे ग्रहण करते हैं। ग्रहण करते है इसका मतलब वहां है यह निश्चय हो गया कि नहीं ? अतः आठों वर्गणा वहां पर निश्चित है। वह भी अनन्त संख्या में है। अब आठों का वर्गणा में आठवां क्रम कार्मणा वर्गणा का भी है अर्थात् कार्मणा वर्गणा भी वहां पर भरी पड़ी है और सिद्ध जीव भी है तो फिर उनको क्यों नहीं चिपक जाती ? उन्हें क्यों नहीं कर्म बंधते ? इसका उत्तर यही है कि.... वहां पर सिद्धात्मा में कर्म बांधने का मुख्य कारण-या कार्मणा वर्गणा को अपने में खिंचने की मूलभूत शक्ति राग-द्वेष की वृत्ति ही नहीं है ? मोक्ष मे न कर्म है न शरीर, न राग है न द्वेष, न सुख है न दुःख, न जन्म है न मरण, न मन है न वचन इत्यादि आत्म-गुणातिरिक्त बाहरी वस्तु कुछ भी नहीं है।

जीव के मुख्य दो भेदः-

मुक्त (सिद्ध)	संसारी
अशरीरी	सशरीरी
सर्व कर्मरहित	सर्व कर्म सहित
जन्म-मरण रहित	जन्म-मरण सहित
मन-वचन रहित	मन-वचन सहित
राग-द्वेष रहित	राग-द्वेष सहित
सुख-दुःख रहित	सुख-दुःख सहित
आयु-प्राण-योनि	आयु-प्राण-योनी
गति रहित	गति सहित

इस तरह जीव के यदि मुख्य दो भेद करें तो इन दो में मुख्य अन्तर इस प्रकार का रहेगा। अतः मुक्तात्मा जो मन-वचन-शरीर रहित है, कर्म रहित है और मुख्य तो राग-द्वेष रहित ही है तो फिर कर्मबंध का सवाल ही कहां रहा ? और जब कर्मबध ही नहीं है तो फिर संसार मे वापिस आने का या वहां से गिरने का प्रश्न ही खाड़ा नहीं होता और जब वहां से गिरती ही नहीं है इसका अर्थ ही यह हुआ कि सिद्धात्मा-मुक्तात्मा मोक्ष में सिद्ध शिला पर अपने निश्चित स्थान पर आकाश प्रदेश पर अनन्त काल तक स्थिर रहती है। अब रही बात संसारी जीव की।

संसारी जीव को कर्म का बंधः-

जैसे सोना खान में से निकला तब कैसा मिट्टी के साथ मिश्रित था ? हीरा खान में से निकला तब कैसा रफ, गंदा था ? उसी तरह निगोद यह जीवों की खान है ! जैसे हीरे की खानमें से हीरे निकलते है। वैसे ही निगोद में से जीव निकलते है। निगोद की प्राथमिक मूलभूत अवस्था से ही जीव मात्र कर्म मलयुक्त ही है ? ऐसा नहीं है कि पहले आत्मा शुद्ध थी और फिर कर्म लगे और अशुद्ध बनी ? नहीं ! खान में से निकला सोना पहले से ही जैसे- कर्ममल युक्त है वैसे ही आत्मा निगोद की खान में पहले से ही कर्म मल युक्त ही है ! कब से कर्म लगे है ? अनादि काल से लगे हुए है अनादि का अर्थ ही आदि रहित है। फिर पहले मुर्गी की पहले अंडा ? पहले वृक्ष या बीज ? का प्रश्न खाड़ा होगा। वैसे ही पहले आत्मा या कर्म ? पहले कर्म या आत्मा ? कर्म तो आत्मा जन्य नहीं है। आत्मा से ही कर्म जन्य है। जगत में जड़-चेतन दोनों पदार्थों का अस्तित्व अनादि-अनन्त काल से ही है। पहले से ही दोनों तत्व है। इसलिये पहले-पीछे का प्रश्न ही नहीं खड़ा होता ? जिस दिन से आत्मा संसार में है उसी दिन से कर्मसंयुक्त ही है। कर्म सहित ही है। इसमें शंका नहीं है। इसे अनन्तकाल बीत गया है ! और जिसकी कोई आदि ही नहीं है वह अनादि अनन्तकाल है ! अतः अनादि अनन्तकाल से आत्मा और कर्म (जड़और चेतन) मूल-भूत अस्तित्व में है ही और दोनों संयुक्त है। अतः आत्मा संसार में कर्म से बंधी हुई ही है। कर्म सहित ही है।

राग-द्वेष मोहवश कर्मबंधः-

आत्मा जब से संसार में है तब से सशरीरी ही है। शरीर में ही है। शरीर ही आत्मा के रहने के लिये मात्र आधार पात्र

है ! बिना शरीर के तो कोई भी आत्मा संसार में रह ही नहीं सकती । बिना शरीर की अशरीरी आत्मा तो सिद्धात्मा-मुक्तात्मा कहलाएगी। अतः संसारी हो और अशरीरी हो यह तो कभी भी संभव ही नहीं है। सूर्य उदित हो और रात हो यह कभी भी संभव नहीं है । उसी तरह आत्मा बिना शरीर के संसार में रहे यह संभव ही नहीं है ! जैसे ग्लास, कटोरी, थाली, बाल्टी, थेली, कोठी, घड़ा या टंकी जिस किसी भी आधार पात्र में पानी रहे तो ही रह सकता है। अन्यथा द्रव पदार्थ पानी बिना आधार के कभी भी नहीं रह सकता। उसी तरह चेतन द्रव्य आत्मा बिना शरीर के कभी भी नहीं रह सकती !अब शरीर कैसे बना ? किसने बनाया ? न तो किसी ईश्वर ने बनाया है न किसी अदृश्य शक्ति ने ! आत्मा ने ही अपने रहने के लिये घर रुप में शरीर बनाया है। अब यह शरीर तो जड़ पुद्गल का पिण्ड है । पार्थिव है । औदारिक आदि शरीर योग्य वर्गणा को खींचकर इकट्ठी करके शरीर बनाया है । ये वर्गणा आहारादि में से मिली आहार लेकर पुद्गल का पिण्ड है । पार्थिव है । औदारिक आदि शरीर योग्य वर्गणा को खींचकर इकट्ठी करके शरीर बनाया है। ये वर्गणा आहारादि में से मिली आहार लेकर पुद्गल के परमाणुओं से शरीर बनाया । अब शरीर बनाया तो उसके द्वार-खिड़की आदि भी बनाने आवश्यक है अतः इन्द्रियां बनाई । इन्द्रियां बनाई तो श्वासोच्छवास आदि की आवश्यकता पड़ी तो वे ग्रहण की इस तरह जैसी-जैसी जरुरी पड़ी वैसी चार, पांच या छः पर्याप्तियां जीव ने पूरी की। इन छहों पर्याप्तियों को पूरी करने के लिये जीव ने भिन्न-भिन्न वर्गणाओं के समूह का आश्रय लिया और उन-उन वर्गणाओं के समूह को खींच-खींचकर आत्मा ने वह-वह पर्याप्ति पूर्ण की और उसमें रहना लगी !

परन्तु यह सोचिए कि इन वर्गणाओं को खिंचने के लिये आत्मा को किसकी आवश्यकता पड़ी ? जब कि आत्मा ने अपने मूलभूत यथार्थ आत्मगुणों की एक तरफ उपेक्षा करके स्वस्वरुप से बाहर विभावदशा में गई। तो क्यों गई ? क्योंकि देहादि की रचना करने आदि की इच्छा हुई। बाहरी वर्ण-गंध-रस-स्पर्श युक्त पुद्गल के प्रति आकर्षण यही जीव का राग भाव था। आकर्षण-प्रत्याकर्षण ही राग-द्वेष की वृत्ति रही। जीव ने इस राग-द्वेष की वृत्ति से जिस कार्मण वर्गणा को खिंची और अपने अन्दर समाविष्ट की और एक-एक आत्मप्रवेश पर अनन्त अनन्त कार्मणा वर्गणा का ढींग खड़ा किया वे ही कर्म कहलाए। जैसे दूध-चा-के तपेले पर ढक्कन रख कर ढांक दिय जाते है, जैसे घर में टाईल्स पर धुल के रज कण छा जाते है उसी तरह आत्मा ने स्वभाव को भूलकर विभाव दशा में जाकर जिस कार्मणा वर्गणा को ग्रहण की वह आत्मा के एक-एक प्रदेश पर छा गई और अनन्त काल बीत गया इस क्रिया में। आज तो प्रत्येक आत्मा के एक-एक आत्म प्रदेश पर अनन्त-अनन्त कार्मणा वर्गणा का ढिग हो गया है। यही कर्म है। ये कर्म आत्मा ने खुद ने बांधे है। राग-द्वेष की क्रिया (प्रवृत्ति) से ही बांधे है। वंदित्तु में कहा है-

''एवं अट्ठविहं कम्मं रागदोस समज्ज्ञिअं'' - ''राग-द्वेष से उपार्जित किये हुए आठों कर्म'' और प्रशमरतिकार भी स्पष्ट कहते है कि-

रागद्वेषोपहतस्य केवलं कर्मबन्ध एवास्य।
नान्यः स्वल्पोऽपि गुणोऽस्ति यः परत्रेह च श्रेयान् ॥

राग और द्वेष से युक्त जीव को केवल कर्म बंध ही होता है। इसके सिवाय थोड़ा भी गुण नहीं होता है अर्थात् राग-द्वेष की प्रवृत्ति में ऐसा थोड़ा सा भी फायदा नहीं होता है जो इस लोक और परलोक में लाभकारी कल्याणकारी हो। अतः इस राग-द्वेष की प्रवृत्ति में पड़ने से जीव आत्मा के ऊपर एक ऐसे आवरण की जाल बिछा देता है जो आत्मा के सभी गुणों ढांक देता है। आच्छादित कर देता है और फिर आत्मा के गुण नहीं लेकिन बाहर का आवरण मात्र दिखाई देता है। जैसे सूर्य के सामने बादल छा जाने से अब सूर्य नहीं बादल दिखेंगे। चा-दूध के तपेले पर ढक्कन आने से अब सिर्फ धूल ही दिखेगी। यही दशा जीव की होती है। आठ तपेलों पर रखे गए आठ (आवरण) आच्छादक-ढक्कनों की तरह आत्मा के आठ गुणों पर आठ आवरण आ जाते है। ये आठ आवरण ही आठ कर्म के नाम से पहचाने जाते हैं।

आठ गुणों के आवरक 8 कर्म-

आत्मा के आठ गुण आठ कर्म

1-अनन्त ज्ञान गुण का आच्छादक-ज्ञानावरणीय कर्म
2-अनन्त दर्शक गुण का आच्छादक-दर्शनावरणीय
3-अनन्त चारित्र गुण का आच्छादक-मोहनीय कर्म
4-अनन्त वीर्य गुण का आच्छादक-अंतराय कर्म
5-अनामी-अरुपी गुण का आच्छादक-नाम कर्म
6-अगुरु-लघु गुण का आच्छादक-गोत्र कर्म
7-अनन्त (अव्याबाध) सुख गुण का आच्छादक-वेदनीय कर्म
8- अक्षयस्थिति गुण का आच्छादक-आयुष्य कर्म

(आगे और भी है...!)

मैं अनाथी

✻ पू.आ.श्रीमद् विजयमुक्ति/मुनिचन्द्रसूरीश्वरजी म.

जंगल में एक वृक्ष के नीचे मैं ध्यानस्थ खड़ा था। अकेला होने पर भी मुझे अकेलापन नहीं लग रहा था। मैं अंदर की दुनिया में खो गया था। अन्दर का ऐश्वर्य जिसे देखने को मिल जाये वह कभी बाहर के ऐश्वर्य से प्रभावित नहीं होता। अन्दर ही इतना आनन्द भरा है कि उसका पता चल जाये तो बाहर कहीं दौड़ने की जरुरत ही नहीं रहती। आनन्द अंदर ही है, बाहर कहीं भी नहीं- ऐसी मेरी प्रतीति दिन-प्रतिदिन दृढ़ बनती जा रही थी।

महात्मन्! यहां जंगल में अकेले क्यों खड़े हो ? यहां क्या कर रहे हो ?

मेरे कानों में शब्द पड़े।

मैंने आंख खोलकर देखा तो मेरे सामने विशाल रिसाले के साथ राजा खड़ा था। मैं देखाते ही पहचान गया- अरे यह तो राजा श्रेणिक !

उसने मुझे आश्चर्य पूर्वक पूछा- मुनिवर ! युवा वस्था में यह क्या कर रहे हो ? आपके पास अद्भूत रुप है। छलकता यौवन है। चमचमाता लावण्य है। इस अवस्था में जंगल में ध्यान ? इस अवस्था में संसार का त्याग ? अभी तो संसार भुगतने का समय हैं। अभी तो संसार भोगना चाहिये। संन्यास तो बुढ़ापे की चीज है। समय-समय पर सभी शोभा देता है। बूढ़ा भोग भोगे वह शोभा नहीं देता, वैसे ही युवान संसार छोड़े व ह भी शोभा नहीं देता। सभी चीजें अवसर ही अच्छी लगती है। वर्षाऋतु में किसान बाहर जाये और ग्रीष्म ऋतु में खेती करें तो ?

यह संसार कितना सुहाना है ! आपको तो नसीब ने छूटे हाथों रुप-लावण्य प्रदान किया है। उसे क्यों व्यर्थ गंवा रहे हैं ? जीवन का इसके पूर्ण स्वरुप से आस्वाद लो। फिर आप स्वयं पक्व बनेंगे। वैराग्य पक्व बनेगा। पका आम अपने आप वृक्ष से गिर जाता हैं।

आपको देखकर मुझे बारबार प्रश्न हो रहा है- आपने संसार क्यों छोड़ा ? कौन सा कारण था ?

राजा के सभी प्रश्न मैं सुनता रहा। फिर मैंने मर्म भरा जवाब दिया।

मैं अनाथ था। अनाथों को संसार छोड़ने के सिवाय दूसरा कौन सा रास्ता है ! अनोखों का अनाथाश्रम संयम है। अरे ! मुनिराज ! यह क्या बोले ? आप अनाथ थे ? चलो.... कोई बात नहीं। अब आप अनाथ नहीं है, सनाथ है। आज से मैं आपका नाथ बनता हूं।

आप स्वयं अनाथ हो। मुझे कैसे सनाथ बनाओगे ? जो स्वयं डूब रहा हो वह दूसरों को कैसे तारेगा ? जो स्वयं अंध है वह दूसरों को कैसे रास्ता बताएगा ?

क्या बात कर रहे हो महाराज ? मैं अनाथ ? लगता है आपने मुझे पहचाना नहीं है। मैं मगध का सम्राट हूं। राजगृही मेरी राजधानी है। मेरे पास अपार वैभव है। विशाल सेना है। वफादार सेवक हैं। विनीत परिवार है। प्यारा अन्तःपुर है। प्रेमी प्रजाजन है। इतना मेरा वैभव.... फिर भी मैं अनाथ ? महाराज ! आप तो हद करते है। आप भी आ जाईये मेरे साथ। मैं आपको ऋद्धि-समृद्धि से भरपूर बना दूंगा। राजा के एक-एक शब्दों में हुंकार भरा हुआ था।

मैंने कहा- यह तो मैं भी जानता हूं कि आप मगध के सम्राट हो। वैसे तो मैं भी वत्सदेश के सम्राट कौशाम्बी नरेश का पुत्र था। राजकुमार को क्या कमी हो सकती है ? फिर भी मैं अनाथ बना। राजन् ! मेरी कथा सुनने जैसी है।

स्नेही माता-पिता ! प्यारी सुशील पत्नी ! स्नेहल स्वजन ! विनीत सेवक वर्ग ! मदमस्त यौवन ! सभी अनुकूल सामग्री मुझे मिली थी। किन्तु एक दिन मैं भयंकर रोगग्रस्त

श्री मगनभाई भगत

पूज्य प्रवर आगमोद्धारक श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी के पिताश्री श्री मगनभाई धर्म में एकदम चुस्त जिनशासन के प्रति दृढ़ मनुरागी, तत्व ज्ञानी और प्रबल वैरागी बन सके ऐसी योग्यता के धनी थे पूज्य मुनिवर्य श्री झवेरसागरजी महाराज (पूज्य सागरजी महाराज के गुरुदेवजी) जो आगम धुरंधर, शासन द्वेषियों को हराने वाले वादि विजेता महामुनि थे।ऐसे मुनिश्री के सम्पर्क में श्री मगनभाई निरंतर रहते थे। उनसे तत्वचर्चा पत्र व्यवहार बार-बार दर्शन करते जाना आदि कारणों से श्री मगनभाई का जीवन पूर्ण रूप से धार्मिक बन गया था। इसके कारण वे सब लोगों की नजर में भगत के नाम से प्रसिद्ध हो गये थे। पूज्य गुरुदेव श्री झवेरसागरजी भी श्री मगनभाई को भगत के उच्चारण से ही सम्बोधित करते थे और यही नाम पत्र व्यवहार में भी सम्बोधित करते थे।

बना। व्याधि की वेदना इतनी भयंकर थी कि शब्दों में मैं वर्णन नहीं कर सकता। मैं तड़फने लगा।

मेरे माता-पिता ने तुरन्त ही बड़े-बड़े वैद्यों को, हकीम वगैरह को बुलवाये। मेरा उपचार शुरु हुआ, पर सफल न हुआ। तिलमात्र भी वेदना कम नहीं हुई। मैं दिन-रात पानी बिना की मछली की तरह तड़पने लगा। मेरे माता-पिता ने मांत्रिकों, भूवाओं, ज्योतिषियों इत्यादि अनेक निष्णातों को बुलाये, लेकिन रोग हटने का नाम ही नहीं ले रहा था। बिस्तर में वेदना से तड़फते हुए सभी देख रहे थे.... लेकिन सब लाचार थे। दर्द में तो कोई कैसे सहभागी बन सकते?

मेरे स्नेही माता-पिता, स्नेहल स्वजन, प्यारी पत्नी.... वगैरह तमाम निर्निमेष देख रहे थे परन्तु सभी लाचार थे। जिंदगी में पहली बार मैंने अनाथता का अनुभव किया।

रोग, जरा और मृत्यु- ये तीन ऐसी वस्तु है जो भलभले को लाचार बना देती है, अनाथ बना देती है। किन्तु तीनों में से एक का भी आगमन होने पर ही यह तत्व समझ में आता है। इसके पहले तो आदमी हवा में उड़ता रहता है। अपने पर बीतती है तभी समझ में आता है। बूढ़े क्यों धर्म की ओर मुड़ते हैं? तीनों में से एकाध चीज ने उनको घेर लिया होता है। युवान क्यों धर्म की तरफ नजर भी नहीं करता? तीनों में से एक भी चीज उसे दिखाई नहीं देती है।

कुछ यौवन में रोगग्रस्त बनते हैं और मन भोग में योग की तरफ मुड़ता है। रोग भी आर्शीवादरुप बनता है जब मन धर्म की ओर मुड़ता हैं।

मेरी भी सोचने की दिशा अब पलट चुकी थी। अब तक मैं रंग-राग में ही डूबा हुआ था। इसीलिये दूसरा कोई विचार ही नहीं आता था। विचार की सभी खिड़कियां बन्द थी। उस समय पहली बार ही विचार का एक दरवाजा खुला। मेरे बन्द दिमाग में एक नया उजाला हुआ।

कैसा सुंदर शरीर.... लेकिन अचानक ही रोग से ग्रस्त हुआ? इतने सारे स्वजन होने पर भी क्या मैं अनाथ? सचमुच ही धर्म के बिना कोई नाथ नहीं हो सकता। मेरी अन्तर्दृष्टि खुलने लगी।

मैंने अब धर्म की शरण में जाने का दृढ़ निश्चय किया। यदि धर्म बिना किसी का भी शरण नहीं मिल सकती ऐसा हो तो क्यों जीवनभर उसकी ही शरण न लूं।

छः महिने के रोग से व्याकुल, दम घोंटनेवाला अनुभव होने से धर्म को ही एक मात्र शरणरुप देखती मेरी आत्मा ने दृढ़ संकल्प किया, यदि आज की रात मेरा रोग मिट जाये तो मैं सुबह दीक्षा ले लूंगा।

मेरे संकल्प का चमत्कार तो देखो! जैसे मैंने संकल्प किया वैसे तुरन्त ही वेदना घटती गई, रोग घटता गया। सुबह तक तो वेदना एकदम गायब! शरीर एकदम तन्दुरुस्त! चमत्कार हो गया.... नहीं? किन्तु इसमें चमत्कार जैसा कुछ भी नहीं है। आपका मन जब शुभ विचार, शुभ संकल्प करने लगता है तब अन्दर जबरदस्त आंदोलन पैदा होते हैं। शुभ विचारों का जबरदस्त असर होता है। इसके कारण कर्मो में भी फर्क पड़ता है। अशुभ कर्म शुभ में परिवर्तित हो जाते है। जब हम शुभ विचार करने लगते है तब चारों ओर से शुभ विचारों को आमंत्रण देते हैं। चारों तरफ सभी प्रकार के विचार घुम रहे हैं। हम जैसे विचार करते है वैसे विचार स्वाभाविक ही आकर्षित हो जाते हैं।

शुभ विचारों में रोग मिटाने की अद्‌भूत शक्ति होती है। ज्यादातर हमारे रोग अशुभ विचारों के कारण उत्पन्न होते हैं। निषेधात्मक विचार पद्धति से उत्पन्न हुए होते है। जब विधेयात्मक विचार करते है तब रोग अपने आप दूर भाग जाते हैं। इसीलिये ही आपको आशावादी और विधेयात्मक विचार वाले लोग रोगी दिखाई देंगे।

सुबह होते ही मैं तो दीक्षा के लिये तैयार हो गया। ऐसा नहीं कि अब तो रोग चला गया है.... अब दीक्षा-बीक्षा जाने दो। संकल्प तो मन में ही किया था न! किसको पता चलनेवाला था? नहीं.... ऐसे सत्वहीन विचार मुझे मंजूर नहीं थे।

सुबह होते ही मैं संयम-पंथ पर चल पड़ा। राजन्! मुझे रोकने के लिये मेरे स्वजनों ने बहुत प्रयत्न किये परन्तु मैं एक का दो न हुआ। कदम उठाया वह पीछे हटने के लिये नहीं।

मेरी अनाथता मुझे बराबर समझ में आ चुकी थी।

श्रेणिक राजा मेरी बात सुनकर मेरे चरणों में झुक पड़े- मुनिवर! आपने मुझे अनाथ-सनाथ का अर्थ बराबर समझाया। आपकी व्याख्या के अनुसार यथार्थ में सारा जगत अनाथ है। बड़े-बड़े चक्रवर्ती भी अनाथ है। धर्म जिसे नहीं मिला वे सभी अनाथ है। महात्मन्! आज आपके समागम से मुझे धर्म का बोध हुआ। मुनिजी! आपके चरणों में अगणित वन्दन!

राजा अपने स्थान पर गया। मैं पुनः ध्यान-दशा में लीन हो गया।

सागर दीक्षा : आंबादेवीजी का दिव्य संकेत और संदेश

परमपूज्य पूज्य श्रीझवेरसागरजी महाराज ने रात्रि का प्रतिक्रमण करने के बाद प्रश्नादेश के मंत्र को स्वप्न विद्या की साधना गुरुगम के प्रमाण से साधकर हेमचंद्रभाई की दीक्षा के लिये जिज्ञासा रख चार दिशा में खड़े खड़े तीन तीन माला गिनकर उर्ध्व विरासत में एक माला और अर्द्ध पद्मासन में एक माला और सिद्धासन में एक माला गिनकर स्वप्नादेश के मंत्र के साथ जिज्ञासा लिखित पत्र वींदिया के नीचे रखकर पश्चानुपूर्वी से 27 नवकार गिनकर सो गये।

12.30 बजे रात्रि को पूज्यश्री की आंखे अचानक खुल गई। तो पूज्यश्री ने देखा कि -एक दिव्य दैदिप्यमान तेजस्वी तीव्र अद्भुत प्रकाश का अनोखा नजारा उनकी आंखों के सामने था अत्यधिक तेजस्वी प्रकाश में कुछ भी देख पाना संभव नहीं था पर वह प्रकाश बहुत ही शीतलता शांति प्रदायक था। पूज्यश्री ने कुछ ही समय में अपने को संयमित स्वस्थ्य किया और नवकार महामंत्र की दो पक्की माला गिनी। जब सामने नजर गई तो देखा कि व्याख्यान पाट के पास दिव्य तेजस्वियता से परिपूर्ण व्यक्तित्व के रूप में एक देव जिनका दिव्य व्यक्तित्व जगमगाते गोलाकार आभामण्डल के साथ रत्न मणियों की जोरदार चमक से चमकते मुकुट से शोभित था, हाथ में एक पुष्प का गुच्छा लिये हुए प्रकट हुए हैं।

देव ने अपनी सुमधुर कोमल वाणी में पूज्यश्री को कहा - 'आपने शासन के काम के लिये स्वप्नादेश ओर प्रश्नादेश को मिश्रित कर जिज्ञासा का खुलासा मांगा है। यह विद्या अम्बाजी के मंत्र वाली है। आपकी निष्ठा ओर शासन भक्ति ने देवी आंबाजी को आकर्षित किया है। किसी कारण से स्वयं प्रत्यक्ष न आकर यही जिन मंदिर में विराजमान श्री मणिभद्र दादाजी को संदेश पहुंचाने का कहा, किन्तु श्री मणिभद्रदादाजी को आपका आमंत्रण नहीं होने से अंबाजी देवी ने संदेश मेरे साथ में भिजवाया है जो यह है- यह कह प्रकट हुए देव ने फूल के गुच्छे के नीचे एक तेज प्रकट करने वाला अद्भुत दिखाई देने वाला नीले रंग का पत्र निकाला जिस पर श्वेत अक्षरों में यह लिखा हुआ था-

'मा मुज्झह ! एसो हि भावुगप्पा परमो सासणोज्जायकारी हविस्सइ ! जिणागमागमाणं समुद्धारओ हो ही।'

इसके बाद देव ने पुनः कहाकि- यह फूल का गुच्छा उन पुण्यात्मा को देना ओर इसके सामने रात्रि में 11 से 1 बजे के बीच **'ऊँ ह्रीं क्लीं सौं हस्क्लह्रीं णमो जणसासणस्स'** इस मंत्र की तीन माला जरूर गिने।

महासुद पंचमी का दिन दीक्षा के लिये सर्वश्रेष्ठ है, यह मत भूलना। इतना कहकर देव ने पुष्प का गुच्छा थाली में रखा और अदृश्य हो गये।

पूज्य मुनिश्री झवेरसागरजी महाराज ने मगन भगत को उठाया - हेमचंद्रभाई भी जाग गये थे पर **अनाहूतो न वदेद्** की नीति के अनुसार जगते हुए भी सोते रहे।

पूज्यश्री ने मगन भगत को जो घटना हुई थी उसकी जानकारी दी और देव द्वारा कहे गये शब्दों को बत्ती के मद्धिम

करोड़ों की कीमत का हीरा

अहमदाबाद में चार्तुमास सम्पन्न कर पूज्य पंन्यास प्रवर श्री आनंदसागरजी महाराज अपनी जन्म भूमि कपड़वंज पधारे यहां संत अपार उत्साह और उमंग के द्वारा भव्य अगवानी हुई लोगों के अतिउत्साह को देखकर पूज्यश्री ने कहाकि- आप मुझ पर इतनी प्रीति मत रखो, मेरी काया पर इतना राग मत करो, मैं वीर भगवान के सिद्धांतों का प्रचार कर रहा हूं, आपको वीर प्रभु के सिद्धांतों पर ही राग रखना है और जिससे बन सके उसे इस मार्ग को ग्रहण करना चाहिये, उस पर प्रीति करें, यह धर्म है। यहां से आपश्री का विहार सूरत की ओर हुआ। सूरत में प्रथम बार आपश्री का आगमन होने से अपूर्व सत्कार के साथ आपका सामैय्या निकाला गया। पूज्यश्री सागरजी महाराज की मुखमुद्रा शांत और ज्ञानप्रिय थी उस पर अनुपम तेज झलकता था, आपकी सुन्दर आँखों से जैसे जैनत्व का प्रकाश सूरत की स्वर्ण भूमि को प्रकाशवान कर रहा था। आपका आगमन प्रथम बार ही सूरत नगर में हुआ था पहली ही नजर में सूरत के रत्न पारखीयों ने पूज्यश्री को परख लिया था कि यह श्री आनंदसागर करोड़ की कीमत का हीरा है। बाद में तो सूरतवालों से पूज्य श्री सागरजी महाराज का इतना गहरा सम्बन्ध हो गया था कि ऐसा लगता था कि सागरजी महाराज को सूरत से जुदा करना-अलग करना ऐसा है जैसे आत्मा का शरीर से अलग होना है।

प्रकाश में लिखवा लिये।

अब पुष्प के गुच्छे को श्वेत वस्त्र को ढंक कर उसे अलमारी में ताला लगाकर रख दिया।

मगन भगत (हेमचंद्रभाई के पिताश्री) ने सामायिक लेकर इस अद्भुत देवी संकेत से अपने कुल को चमकाने वाला सुपुत्र होगा यह जानकर अनोखे आनंद में रहते हुए पांच पक्की माला गिनी।

सुबह चार बजे हेमचंद्रभाई को उठाकर सामायिक कराई विविध काउसग्ग कराये ओर फिर दूसरी सामायिक में राई प्रतिक्रमण कराया। फिर गुरु वंदनकर मंदिरजी के दर्शन कर आये।

मेरी दीक्षा के विषय में क्या हुआ ? यह जानने की इच्छा और इंतजार में हेमचंद्रभाई थे। मगन भगत के बैठते महीने का पहली स्नात्र पढ़ाई। फिर गुरुदेव के पास आकर सवा पांच रुपये से ज्ञान पूजा की। हेमचंद्रभाई के द्वारा एक सोना मोहर से ज्ञान पूजा कराई। वासक्षेप हाथ में लेकर विनय से पूछा- साहेब ! कृपा कर इस बालक पर करुणा कर हमारी जिज्ञासा को तृप्त करिये। यह पूछने पर पूज्यश्री ने संक्षिप्त में बात कर पहले लिखे गये पत्र को हेमचंद्र भाई को बताया।

फिर विधिपूर्वक वंदन कर वायणा संदिसा आदि तीन आदेश मांगते प्रातःकाल में हेमचंद्रभाई के दाहिने कान में वासक्षेप पूर्वक गुरुमंत्र का दान करने की पद्धति से हेमचंद्रभाई को पहले मंत्र दिया।

बाद में बताया कि महासुद 1, 2, 3 तीन रात 12.30 बजे बाद इस मंत्र की सात नवकार वाली गिनना है। मगन भगत ने निर्विघ्न रूप से पुत्र की दीक्षा सम्पन्न हो इस भावना से तीन आयंबिल करें और उवसग्गहरम् की रोज 21 माला गिनने की आराधना करने का संकल्प लिया। पूज्य झवेरसागरजी महाराज ने उनकी भावना साकार रूप ले इस भाव से मंत्रिक वासक्षेप डाला।

इसके बाद व्याख्यान में चारित्र प्रसंग की चर्चा आगेवान के समक्ष रखी ओर पूज्यश्री ने हुई बात को संक्षेप में बतलाया। मगन भगत ने एकमात्र यह बात कही कि- मेरी संतान को जिन शासन की चरणों की सेवा में समर्पित करने के लिये मैं लाया हूं। आप कृपा कर मेरी बात को स्वीकार कर मेरे उल्लास में वृद्धि अभिवृद्धि करने की कृपा करें। ऐसी मेरी आपसे प्रार्थना है। संघ के आगेवान लोगों ने विचार कर बताने का कहकर बात को जान लिया।

दोपहर में श्रीसंघ के आगेवान एकत्रित हुए। संघ के मगन भगत से योग्य तरीके से सब चर्चा की और पूज्यश्री कहे उस दिन दीक्षा देने का निश्चय कर सभी लोग पूज्य मुनिप्रवर गुरुदेव श्री झवेरसागरजी महाराज के पास आये।

पूज्यश्री के पास श्रीसंघ के आगेवानों ने आकर विनंति की कि- हमने हमारी रीति से सभी जानकारी प्राप्त कर ली है। अब आप कहे उस मुहुर्त पर दीक्षा दिलाने के लिये श्रीसंघ तैयार है।

पूज्य गुरुदेव ने महासुद 5 के दिन को सर्वश्रेष्ठ दिन बतलाया। यह सुनते ही श्रीसंघ ने हर्षोल्लास के साथ उच्च स्वर में जिन शासन देव की जय के उद्घोष से वातावरण गुंजित कर दियां इसी मुहूर्त पर दीक्षा देने का निश्चय हो गया।

ताम्रपत्र पर आगम

शिलालेख के रूप में आगम ग्रंथों को उत्कीर्ण करवाने के बाद आपश्री की मेघाशक्ति में यह बात आई कि शिला पर उत्कीर्ण आगम शिलालेख को एक स्थान से दूसरे स्थान ले जाना आसान नहीं है। समाधान के रूप में आपश्री ने ताम्रपत्र पर आगम उत्कीर्ण करने के विचार को सार्थकता प्रदान की। सुरखा मजबूती और एक स्थान से दूसरे पर आवश्यकता पड़ने पर और आई कठिन परिस्थिति में दूसरे स्थान पर ताम्रपत्र ले जान आसान होगा। इस विचार को मूर्त रूप देने के लिये आपश्री की पावन निश्रा में 1997 में कार्य आरंभ हुआ।

ताम्रपत्र आगम के लिये वि. सं. 2002 की वैशाख वद 11 को श्री आगमोद्धारक संस्था के लिये फण्ड के साथ गुरुदेव के उपदेश से सूरत में संस्था की स्थापना हुई। इसके साथ ही सूरत के गोपीपुरा में श्री वर्धमान जैन ताम्रपत्र आगम मंदिर के निर्माण का निश्चय हुआ। जिस स्थान पर आगम मंदिर का निर्माण किया गया उस भूमि का भी एक महत्वपूर्ण महत्व है। विक्रम संवत 1986 में इसी स्थान पर पूज्य आगमोद्धारक श्री के उपदेश से नवपद आराधक समाज देश विरति धर्म आराधक समाज और जैन सोसायटी इन तीन संस्थाओं का सम्मेलन एक साथ हुआ था। इस आगम मंदिर में 45 आगम को ताम्रपत्र पर उत्कीर्ण कर लगाया गया है।

सूर्य नगरी में आगमोद्धारकश्री को सूरीपद

शिखरजी तथा अंतरीक्ष तीर्थ मिली विजय ने पूज्य आगमोद्धारक पंन्यास प्रवर श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराजों को जैन जगत में भारी प्रसिद्धी मिल गई थी, सारे देश में पूज्यश्री को बहुत ही आदर और सम्मान के साथ देखा जाने लगा था। अंतरिक्ष तीर्थ से पूज्यश्री ने सूर्यनगरी (सूरत) की ओर विहार आरंभ किया, यह जानकारी मिलते ही सूरत में अपार उत्याह का वातावरण बन गया, चारों ओर पूज्यश्री के कार्यो की चर्चा चलने लगी थी। पूज्य आगमोद्धारकश्री को आचार्य पद पर विराजमान करने की चर्चा ने और उत्साह बढ़ा दिया था। पूज्यश्री ने सूरत में तीन चातुर्मास कर रखे थे, इन चातुर्मास में पूज्यश्री की विद्वता शास्त्रज्ञान का अत्यधिक प्रभाव श्रीसंघ में था ही, शासन सेवा करने की सूरतवासियों में जानकारी थी। जब पूज्यश्री ने सूरत छोड़ा था तो सूरतवासी यही समझते थे कि पूज्यश्री को जाने के बाद सूर्य नगरी का धर्म सूर्य अस्त हो गया है और अब जब आगमोद्धारक श्री वापस सूरत लौट रहे थे तो सूरतवालों के मन में आचार्यश्री का आचार्य पद प्रदान करने का अपार उत्साह उमंग पैदा हो गया था, इस दिव्य प्रसंग को देखने की लालसा सबके दिल में मचलने लगी थी। पूज्य आगमोद्धारकश्री को आचार्य पद प्रदान करने का संयोग बन गया था पर इन महात्मा को इस बात का कोई बहुत मतलब नहीं था क्योंकि इन महात्मा के प्रत्येक अंग में धर्मप्रेम और सिर्फ धर्मप्रेम ही बसा हुआ था। आपश्री को आचार्य पदवी मिले या न मिले उन्हें इसकी कोई इच्छा नहीं थी, पूज्यश्री की शासन सेवा आचार्य पदवी से कहीं बड़ी थी। आपने तो जैन जगत के सामने यह सिद्ध कर दिया था कि जैन धर्म के तत्व कितने महान है। धर्म की गहरी जानकारी लोगों को प्रदान करने गुरू को अब जब गुरू भक्ति का मौका सामने आया तो गुरूभक्त अपना धर्म कैसे भूल सकते थे? और सूरत का संघ इस को भूल जाये यह तो हो ही नहीं सकता।

सूरत श्रीसंघ ने आचार्य पद प्रदान करने का दृढ़ निश्चय कर तैयारियां आरंभ कर दी। आचार्य पदवी से सूरत में यादगार समय आने वाला था, एक ऐसा प्रसंग जो कभी न भुलाये, जिसका वर्णन करना संभव नहीं हो सकता है, क्योंकि सूरतवासियों ने जो शासन और गुरू भक्ति दर्शाई थी वह अद्भूत थी। पूज्यश्री के प्रति जो अपार भक्ति का भाव सूरतवासियों में था उसे कोई भी शब्दों से, किसी भी कलम से लिखना संभव नहीं है।

सूरतवासियों ने आचार्य पदवी की तैयारी से आकाश-पाताल, रात दिन एक कर दिया था इस पुण्यवंत अवसर की तैयारी में सब जी जान से जुड़ गये थे। श्री नेमुभाई की वाड़ी में इस प्रसंग पर श्री सिद्धाचल महातीर्थ, सुस्वर्णमय मेरू पर्वत, श्री सम्मेद शिखरजीकी रचना बनाई गई थी। यह रचना इतनी सुन्दर बनाई गई थी कि देखनेवालों को लगता था कि वह वास्तव में तीर्थ क्षेत्र में ही है। अद्भूत अनोखे और अपार उत्साह से भरे वातावरण में सभी धार्मिक रीति रीवाज और परम्पराओं को ध्यान में रखकर बाल ब्रह्मचारी पूज्य आचार्य देवेश श्री विजय कमल सूरीश्वरजी महाराज ने अपने सुहस्त इस आचार्य पद प्रदान धर्मोत्सव को शोभायमान बनाते हुए अपने सुहस्ते चारित्र नायक आगमोद्धारकश्री को आचार्य पद प्रदान किया। उस दिन से एक समय पूर्व के हेमचन्द्र भाई, मुनि आनंदसागर और पंन्यास प्रवर श्री आनंदसागरजी अब आचार्य श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराज बन गये तब से लेकर आज तक आपश्री का गौरववंत नाम धर्म सेवा और शास्त्र उद्धारक के रूप में अखंडिक रूप से निरन्तर चल रहा है। यह भी निश्चित है कि आगमोद्धारकश्री की परम पवित्र कीर्ति, तेजस्वीता जैन धर्म में हमेशा-हमेशा अमरता के रूप में विद्मान रहेगी।

अपूर्व आनंद से आगमोद्धारकश्री की आचार्य पदवी का यह धर्मोत्सव विक्रम सवंत् १९७४ की वैशाख शुक्ल दसमी के दिन सम्पन्न हुआ। पदवी कार्यक्रम सम्पन्न होने के उपरांत परम पूज्य आगमोद्धारक आचार्य देवेश श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराज (श्री सागरजी महाराज) ने मुंबापुरी अर्थात् मुंबई की ओर विहार किया था।

ताम्र पर सचित्र कल्प सूत्र

ताम्रपत्र पर ही प्रताकार में सचित्र श्री कल्पसूत्र (वारसा) भी पूज्य आगमोद्धारकश्री ने बनवाया है। इस कल्पसूत्र में रेखाचित्र भी बनाये गये हैं। यह कल्पसूत्र आज भी आसानी से आप जैनानंद पुस्तकालय सूरत में तीन पेटियों में रखे हुए देख सकते हैं। शिला पर उत्कीर्ण आगम ग्रंथ 60 गुणा 24 इंच के बनवाये गये हैं और ताम्रपत्र पर 36 गुणा 15 इंच की साइज में बनवाये गये है। शिला पर उत्कीर्ण आगम ग्रंथ के अक्षरों से ताम्रपत्र पर उत्कीर्ण आगम ग्रंथ के अक्षर कुछ छोटे हैं।

ताम्रपत्र पर उत्कीर्ण आगम

शिला पर उत्कीर्ण आगम ग्रंथ में से कर्म प्रकृति के अलावा अंग, उपांग, पयना, छेद, मूल, नंदी ओर अनुयोगद्धार ताम्रपत्र पर उत्कीर्ण किये गये हैं ये श्री वर्धमान जैन ताम्रपत्रागम मंदिर सूरत में दीवालों पर सुरक्षा के साथ लगाये गये हैं।

सागर और शिलात्कीर्ण एवं ताम्रपत्र आगम

परम पूज्यपाद आगमोद्धारक श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराज जैसे अलौकिक गुणनिधान महापुरुष ने अपनी सम्पूर्ण जिंदगी में जैन जगत को अनमोल धरोहर तीर्थंकर परमात्मा की अमृत वाणी के संग्रह कोष आगम शास्त्रों को पुन र्जीवित कर अद्भुत साहित्य आराधना की है। उन पूज्यश्री की एकाग्रता तथा कार्य परायणता से ही आज विद्वानों को जैन साहित्य का बहुत बड़ा भाग सुलभ है। वे अपनी धुन के इतने पक्के थे कि कोई भी आरंभ किया काम अकेले ही पूरा करने में कभी भी नहीं चुके और न ही हिचके। उनकी चिर-साहित्योपासना आज हमारे पास विविध रूप में विद्यमान है। आपश्री महापुरुष ने शासन की परिस्थिति और श्रवण संस्था की पवित्रता उसकी उच्चता के परमाधार स्वरूप मूलभूत तत्वों का सच्चा निदान कर अथाह परिरम, अतुल ज्ञान और अदम्य उत्साह के बल पर अकेले ही प्रेस कापी, सुधारना, प्रुफ संशोधन प्रस्तावना लेखन से लेकर प्रकाशनीय आर्थिक व्यवस्था आदि बोझ को सफलतापूर्वक उठाकर बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध (विक्रम संवत 1970) में जैन शासन के श्री चरणों में श्रवण संस्था की सेवा में आगम ग्रंथों की पवित्र पावन विरासत को योग्यता सम्पन्न अधिकारी श्रावण लाभ ले सके इस दृष्टिकोण से योजना पूर्वक समर्पित किया है।

आगम वाचना देने के उपरांत आपश्री ने आगम छपवाये, आगमोद्धारक नाम को सार्थक करते हुए दिगम्बरों की इस बात को झूठा सिद्ध किया कि आगम नष्ट हो गये हैं। आपश्री ने जो आगम ग्रंथ अप्राप्त की स्थिति में पहुंच गये थे उन्हें पहले कागज पर व्यवस्थित नकल करवाई। फिर विचार किया कि ये आगम ग्रंथ अगर शीला पर उत्कीर्ण हो जाये तो अमर हो जाएंगे। शिला टूट भी जायेगी तो उत्कीर्ण आगम मिलेंगे ही। सम्राट अशोक ने भी अपने राज्यकाल और किये उत्थान के कामों के लिये शिला लेख लिख वाये थे। पर यहां से परमाघर तीर्थ का प्रभु की वाणी के सुरक्षित करने वाला महान कार्य था। भविष्य में शिला उत्कीर्ण आगम अपनी कहानी खुद कहेंगे। इस विचार के साथ आपने आर्य सम्पन्न करने का निश्चय किया। आगे और विचारों में प्रगाढ़ता आने से आगम मंदिर निर्माण की परिकल्पना ने जन्म लिया, जिसे आश्री ने अपने जीते जी सार्थक कर दिखाया।

करोड़ों की कीमत का हीरा

अहमदाबाद में चार्तुमास सम्पन्न कर पूज्य पंन्यास प्रवर श्री आनंदसागरजी महाराज अपनी जन्म भूमि कपड़वंज पधारे यहां संत अपार उत्साह और उमंग के द्वारा भव्य अगवानी हुई लोगों के अतिउत्साह को देखकर पूज्यश्री ने कहाकि- आप मुझ पर इतनी प्रीति मत रखो, मेरी काया पर इतना राग मत करो, मैं वीर भगवान के सिद्धांतों का प्रचार कर रहा हूं, आपको वीर प्रभु के सिद्धांतों पर ही राग रखना है और जिससे बन सके उसे इस मार्ग को ग्रहण करना चाहिये, उस पर प्रीति करें, यह धर्म है। यहां से आपश्री का विहार सूरत की ओर हुआ। सूरत में प्रथम बार आपश्री का आगमन होने से अपूर्व सत्कार के साथ आपका सामैय्या निकाला गया। पूज्यश्री सागरजी महाराज की मुखमुद्रा शांत और ज्ञानप्रिय थी उस पर अनुपम तेज झलकता था, आपकी सुन्दर आँखों से जैसे जैनत्व का प्रकाश सूरत की स्वर्ण भूमि को प्रकाशवान कर रहा था। आपका आगमन प्रथम बार ही सूरत नगर में हुआ था पहली ही नजर में सूरत के रत्न पारखीयों ने पूज्यश्री को परख लिया था कि यह श्री आनंदसागर करोड़ की कीमत का हीरा है। बाद में तो सूरतवालों से पूज्य श्री सागरजी महाराज का इतना गहरा सम्बन्ध हो गया था कि ऐसा लगता था कि सागरजी महाराज को सूरत से जुदा करना-अलग करना ऐसा है जैसे आत्मा का शरीर से अलग होना है।

कार्य-सिद्धि के लिये सात सोपान

1- क्या चाहिये ? कैसा बनना है ? वह स्पष्ट करो।

2- ध्येय में बार-बार बदलाव मत करो।

3- संकल्प को श्रद्धा रुपी जल से सिंचते रहो, परमात्मा पर परम श्रद्धा रखो।

4- उसके अनुसार मानस चित्र (स्पष्ट और सुरेख) खड़ा करो।

5- मानस चित्र में मन स्थिर करो।

6- मानस चित्र में जो तुम चाहते हो, वह वर्तमानकाल में हो रहा है, ऐसा देखो।

7- वैसा ही हुआ है, इस तरह से जीवन जीओ।

चार्तुमास का निर्णय हो चुका था फिर भी....

अहमदाबाद देवकीनंदन सोसायटी में वर्ष 2014 के चार्तुमास मे ही चैन्नई साहुकारपेठ में पूज्यपाद मालव भूषण गुरुदेवश्री नवरत्नसागरसूरीजी महाराजा का चार्तुमास होना निश्चित हो गया था पलक पावड़े बिछाये चैन्नई श्री संघ साहुकार पेठ में प्रतीक्षा कर रहा है, 2000 किलोमीटर का पैदल विहार चैन्नई में एक इतिहास रचने की तैयारी कर रहा था। पावस की पहली फुहार से धरती का ताप संताप मिटता है और सम्पूर्ण पृथ्वी के प्राणीमात्र के लिये करुणा भाव धारण करते हुए पुण्यशाली क्षेत्रों में साधु-साध्वी भगवंत चार्तुमास के लिये विराजित होते है, चार्तुमास चैन्नई के साहूकार पेठ के चन्द्राप्रभु श्री संघ में होना यह तो बहुत पहले ही निश्चित हो चुका था, हैदराबाद के आसपास ही चैन्नई के विभिन्न संघ जिसमें वेपेरी संघ आदि के ट्रस्टी आकर गुरुदेव से मिलते थे, कुछ संघ गुरुदेव का चार्तुमास अपने यहां करवाना चाहते थे, वेपेरी संघ भी बहुत ही उत्सुक था। अजीब पेशोपेश की स्थिति थी, गुरु एक ही थे और सब चाहते थे कि चार्तुमास उनके श्रीसंघ में हो जाये। ''प्राण जाये पर वचन न जाये'' के प्रण पर गुरुदेव और जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागरसूरीजी ने सबको अवगत करा दिया था **कि चार्तुमास तो साहुकार पेठ में होगा।** विश्व म.सा. चैन्नई के श्रीसंघों की सब जानकारी से अवगत हो चुके थे, **पूज्यपाद गुरुदेवश्री ने सभी कार्यो की बागडोर विश्व म.सा. के मजबूत कंधों पर डाल दी थी और विश्व म.सा. भी अंतिम निर्णय के लिये गुरुदेव से चर्चा करते थे और आपस में चर्चा करने के बाद ही उचित निर्णय पर पहुंचते थे।** यही स्थिति चैन्नई चार्तुमास में बन रही थी। चैन्नई पहुंचने के पूर्व विहार यात्रा के दौरान गुरुदेव के साथ चर्चा चल रही थी। **गुरुदेव किसी भी रुप में विश्व म.सा. को अलग चार्तुमास नहीं करने देना चाहते थे हर निर्णय के लिये गुरुदेव विश्व म.सा. को ही स्मरण करते थे, यह गुरु और शिष्य के बीच एक अटूट संबंध को दर्शाता था और विश्व म.सा. भी गुरु के पावन चरणों में नत शीश हो गुरु के सच्चे शिष्य बनकर जैन धर्म की पताका को यशस्वी करना चाहते थे।** इसलिये आपश्री ने चैन्नई पहुंचते ही साहुकार पेठ- चुलै, वेपेरी आदि बड़े श्रीसंघों में धर्म का जागरण कर गुरुदेव का परिचय करवा दिया था और **इसका प्रथम उदाहरण चार्तुमास आरंभ होने के पूर्व ही 17 जुलाई को केशरवाड़ी तीर्थ से हुई गुरुदेव की महामांगलिक में हो गया था। विश्व म.सा. ने इस महामांगलिक के द्वारा चैन्नई श्रीसंघ के श्रावक-श्राविका को यह अवगत करा दिया था कि इसबार चार्तुमास के चार माह कैसे रहेंगे। यह भी तैय हो गया था कि विश्व म.सा. का चार्तुमास वेपेरी में होगा लेकिन आप प्रतिदिन व्याख्यान में साहुकार पेठ आयेंगे और यहां से ही सब संघों को मार्गदर्शन भी देंगे, रोज 5 किलोमीटर आना-जाना करना यह भी एक बढ़ा तप हो गया, वेपेरी के श्री रमेशभाई मुथा जिन्हें चार्तुमास समिति के संयोजक बनाया था आपने भी सहमति दे दी,** पंन्यास प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी को वेपेरी में प्रवचन की बागडोर सौंपी गई। यह सब प्रबंध हो जाने से गुरुदेव को प्रसन्नता हुई वे खुश थे कि उनका विश्वरत्न नियमित रुप से उनके सम्पर्क में रहेगा। वैसे गुरुदेव को साहुकार पेठ बहुत ही कठिन लग रहा था। पर्युषण पर्व तक विश्व म.सा. साहुकार पेठ आते रहे गुरुदेव भी कभी-कभार वेपेरीश्रीसंघ आये थे, पर्व के बाद विश्व म.सा. ने गुरुदेव से कहा- म्हारा साहेब अब मुझे थोड़ा ध्यान वेपेरी संघ में भी देने दो ताकि संघ के लोगों को यह नहीं लगे कि यहां का चार्तुमास ठीक नही रहा। वेपेरी में महापर्व के बाद विश्व म.सा. ने धर्म का ऐसा डंका बजाया कि लोग यह कहने पर मजबूर हो गये **कि वेपेरी में वास्तविक चार्तुमास पहली बार पर्युषण पर्व के बाद हुआ है,** रमेशभाई मुथा भी प्रसन्न थे। पूज्य गुरुदेव का मान-सम्मान किसी तरह से कम न हो इसका विश्व म.सा. ने पूरा और विशेष ध्यान रखा, **गुरु के प्रति सच्चा समर्पण सिर्फ शिष्य का ही नहीं था गुरु भी शिष्य पर पूर्ण विश्वास रखते थे, विश्वरत्न सब संभाल लेना यह शिष्य के प्रति गुरु का प्यार देखने लायक था। विश्वरत्नसागर सब कर लेगा, गुरु के इस दृढ़ भाव को विश्व म.सा. ने पूर्ण भी किया, साहुकार पेठ और वेपेरी दोनों श्रीसंघ का चार्तुमास यादगार बनाने में आपने कोई कसर नहीं छोड़ी दोनों संघों के ट्रस्ट मंडल को भी प्रसन्न रखा और गुरुदेव को आत्मबल प्रदान किया,** अपनी योग्यता का विश्व म.सा. ने चैन्नई चार्तुमास भरपूर उपयोग किया और वे इसमें सफल भी हुए और आज भी चैन्नई के श्री संघ आपकी योग्यता का लोहा मानते है, अपना समपर्ण भाव रखते है। श्रमण संस्कृति की परम्परा का निर्वाह करते हुए कुछ अलग और धर्म के लिये विशेष करने का आपश्री का भाव और **युवाओं की एक बड़ी भक्त टोली को जोड़कर उनसे काम लेना यह सबके बुते की बात नहीं है, यह युवा जैनाचार्य ने सिद्ध कर दी है।** गुरु के मान को बढ़ाने के लिये श्री नाकोड़ा और जीरावला महातीर्थ में धर्म जागरण कर आपने सच्चा शिष्यत्व निभाया है। अभी आपके द्वारा कई काम होना है।

आगमोद्धारक श्री की जीवन महक

*चंद्रप्रभासागर (चित्रभानु)

पालीताना में आगम मंदिर की अंजन शलाका प्रतिष्ठा भव्य रुप से सम्पन्न कराकर हम पूज्य आचार्यश्री चन्द्रसागर सूरीश्वरजी महाराजा के साथ विहार कर कपड़पंज आये। कपड़पंज में बहुत ही श्रद्धा और भक्ति के साथ में विनम्रता के साथ कभी न भुलाये इस भक्ति के साथ में यहाँ युवाओं ने उत्साह और प्रेम से, आनंद के साथ पूज्यश्री का स्वागत, अगवानी की।

उन दिनों में पूज्य आगमोद्धारक जी की तबीयत नरम रहती थी, वैद्य की ओर से तरल पदार्थों के सेवन की अनुमति दी गई थी दोपहर में बहुत करके सिर्फ चाय ही लेते इसलिये दोपहर में एक गृहस्थ के यहाँ मैं चाय लेने गया घर के लोगों को एक विवाह समारोह में जाने की उत्सुकता थी चाय लेकर जल्दी से आ गया, चाय महाराजश्री को दी। आपने वापस ली। यह पूरी कहानी बनने में पूरा काम होने में 10 मिनिट से अधिक का समय नहीं लगा तभी एक बहन लगभग भागती हुई आई और बहुत बड़ी गलती हो गई, घबराती हुई अपनी भूल के लिये माफी मांगने लगी ओर कहने लगी साहेब-बड़ी भूल हो गई मैं जल्दबाजी में थी मैंने ध्यान नहीं रखा मैंने जानबुझ कर गलती नहीं की है।बहन की यह व्यग्रता ,घबराना, देखकर में एकदम आश्चर्य से दिग्मूढ़ बन गया मैंने सोचा क्या बात हो गई। मैंने पूछा-बहन। क्या हुआ ? यह धमाल क्यों ? और किस बात की माफी मांग रही हो ? तुम क्या कहना चाहती हो, मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा है। क्या साहेबजी। आपको पता नहीं है क्या ? चाय में शक्कर के स्थान पर मैंने नमक डाल दिया था। इस लिये मैं घबरा कर अधीर बन गई हूँ यह कहकर उसने जैसे विस्फोट कर दिया।

यह सुनकर मेरे आश्चर्य का पार नहीं रहा। यह क्या हो गया मैं विचार में डूब गया।

बहन बोलती ही रही साहेब। मुझे मेरे एक निकट संबंधी की शादी में जाना था। मेरा मन उसमें लगा हुआ था मैं धुन में थी इसी धुन में मैंने शक्कर की डिब्बे के स्थान पर नमक का डिब्बा हाथ में ले लिया और चाय में नमक डाल दिया। यह मेरी भयंकर भूल हो गई है यह गलती मेरे से हो गई जब हमने घर में चाय पी तो हमें पता चला की यह गलती हो गई है।

बहन बोलती ही जा रही थी, उस समय मुझे एक ही विचार आया कि - आचार्य महाराजश्री की इन्द्रिय विजय की गंभीरता का। बहन कहें कि चाय में नमक डल गया है पूज्यश्री ने तो इस बारे में कुछ भी नहीं कहा ? कुछ न हीं कहा यह तो ठीक है, परंतु उनके प्रशांत मुख पर जरा सी भी विकृति नहीं दिखाई दी। चाय पी लेने के बाद भी उनके मुख पर एकदम शांति थी मुख एकदम स्वस्थ्य दिख रहा था।

बहन को सांत्वना देकर मैं आचार्यश्री के पास में गया मैंने अत्यंत विनम्र भाव से विनंती कर कहा- साहेब चाय में शक्कर के बदले नमक डाल दिया गया था, परंतु आपने कुछ भी नहीं बतलाया ?

चेहरे पर गुलाबी हास्य मुस्कान लाते हुये आपने कहा-चाय तो कोई कोई दिन खारी होती है ? इससे पेट साफ हो जाता है, इससे नुकसान क्या होगा ? और खारा पूछे तो खारा और मीठा यह (जीभ का स्वाद बताना इसे कहते है) तो जीभ को ही लगता है पेट में तो सब एक जैसा ही है ना। माल खरीदने वाले व्यापारी से अधिक दलाल तूफान करता है पेट माल खरीदने वाला व्यापारी है और जीभ दलाल है। इसलिये वह तूफान ज्यादा करती है। तूफानी करने वाले के पंजें में कसाई नहीं इसको काबू में रखने का नाम ही संयम है।

यह बात को सुनकर मेरे आँखों से आश्रुधारा बहने के साथ भावों के तेज से चमक उठी, मेरी क्षुद्रता और इनकी महत्ता ? मेरी नोट बुक में से।

त्रिपुटी- आगम ज्योर्तिवादि विजेता पूज्य आगमोद्धारक श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराज संवत 1943 में छाणी पधारे थे, यहां पण्डित गजारामजी शास्त्री के पास आपने शास्त्र अभ्यास किया था। इस समय आपके साथ आपके बड़े भाई पू. मणिविजयजी महाराज तथा श्री विजयनेमि सूरीश्वरजी महाराज भी शास्त्रीजी के पास ही अध्ययन अभ्यास कर रहे थे। इन तीनों महात्मा की संगत से इनकी प्रसिद्धि त्रिपटी के नाम से हो गई थी।

सागरजी के गुरूदेव : पूज्य आगमज्ञाता मुनिप्रवर श्री झवेरसागरजी म.

अनादिकाल से इस जगत में अनेक आत्माएं जन्म धारण करती है और मृत्यु को प्राप्त होती है। जन्म और मरण तो कुदरत का सनातन नियम है। किंतु जन्म उन्हीं पूण्यात्माओं का प्रशंसनीय माना जाता है, जिन्होंने अपना जीवन स्व-पर कल्याण के लिये अर्पण कर दिया हो। पूज्य मुनि महाराज प्रौढ़ प्रतिभाशाली श्री झवेरसागरजी म. उन्हीं मूल्यवान रत्नों में से एक थे। जिस समय मालवा-मेवाड़ का जैन संघ मिथ्याधर्मियों के कुठाराघात सहन करने में अक्षम-असमर्थ सिद्ध हो रहा था, उस समय पूज्यश्री का प्रादुर्भाव हुआ, जिन्होंने अपने तेजस्वी कार्यों से जैन इतिहास को परम ओजस्वी बना दिया।

पूज्यश्री झवेरसागरजी म. का जन्म वि.संवत् 1811 में मेहसाणा में हुआ। आपका जन्म झवेरचन्द्र था। माता-पिता द्वारा प्रदत्त संस्कार तथा पूज्य मुनिश्री गौतमसागरजी म. की प्रभावशाली अमृत देशना से प्रभावित हो, आप संयम अनुरागी बने। आपने वि.संवत् 1913 मगसर शुक्ल 11 के शुभदिन अहमदाबाद में शासनप्रभावना पूर्वक संयम अंगीकृत कर पूज्य श्री गौतमसागरजी म. का शिष्यत्व स्वीकार किया। आपका नामाधिधान मुनिश्री झवेरसागरजी म. किया गया।

दीक्षा के साथ ही आत्मकल्याणार्थ आत तीव्र ध्यान की प्रवृत्ति में आकंठ डूब गये और अल्प समय में ही आवश्यक क्रिया सूत्र, द्रव्यानुयोग, व्याकरण, तर्क, न्यायशास्त्र आदि में पारंगत हो गये। गुरूदेव की विनय वैयावच्च एवं पूर्वजन्म की विशिष्ट आराधना से आपका क्षयोपक्षम इतना तीव्र था कि एक बार आपके कानों पर पड़ा हुआ अथवा अध्ययन किया स्मृति पर चिरकाल के लिये अंकित हो जाता था। प्रातःकाल चार से देर रात्रि ग्यारह बजे तक आपको प्रतिदिन हजारों श्लोक और गाथाओं का स्वाध्याय-पुनरावर्तन करते देख श्रद्धेय गुरूदेव आपमें भावी शासन प्रभावक की कल्पना कर आनंदविभोर हो जाते।

पूज्यश्री झेवरसागरजी म. ने अपने अन्य गुरूबंधुओं के साथ सौजन्य पूर्वक यथोचित विनय मर्यादा युक्त व्यवहार कर सामुदायिक जीवन के आदर्श संस्कारों को अपने जीवन में भलीभांति प्रस्थापित किए। स्वयं के संयम, शील, चारित्र, तप और त्याग तथा शास्त्रानुसारी धर्मप्रवृत्तियों के कारण वे अनेक पुण्यात्माओं के आकर्षण के केन्द्र बन गये। गुरूदेवश्री के साथ ग्रामानुग्राम विचरण के दौरान आपश्री की प्रवचन पटुता तथा प्रभावशाली शब्द शैली से प्रभावित हो, अनेक भव्यात्माएं धर्म-मार्ग में अग्रसर होती।

तीन वर्ष की दीक्षावधि में (वि.संवत 1915) अहमदाबाद चार्तुमास में शासन स्तंभ पूज्यश्री मुक्तिविजयजी म. गणि (मूलचन्दजी म.) के सानिध्य में रहकर अपने शास्त्रों का अभ्यास किया और वर्षों तक पूज्य गणिवर्य श्री मूलचन्दजी म., आगम रहस्य देत्ता पूज्यश्री पद्मविमलजी गणि तथा पूज्य पंन्यास श्री मणिविजयजी दादा की निगरानी में सूक्ष्म अध्ययन कर निपुणता प्राप्त की। अध्ययनकाल के कारण अपने वरिष्ठ श्रमणवर्ग के हृदय में अपना स्थान बना लिया। उस समय पूज्य गणिश्री मूलचन्दजी म.का जैन संघ पर एक छत्र प्रभुत्व था। उनका वचन श्रावकों के लिये सिर आंखों पर था। पूज्य श्री मूलचन्दजी म. ने वात्सल्य पूर्ण व्यवहार से पूज्यश्री झवेरसागरजी म. को जिनशासन के गूढ़ रहस्यों से अवगत किया। तभी तो उस समय यह कहा जाता था कि 'पूज्यश्री झवेरसागरजी म.के ऊपर तो पूज्यश्री मूलचन्दजी म.के चार हाथ है। ठीक वैसे ही कित्येक उन्हें पूज्यश्री मूलचन्दजी म.का शिष्य ही समझते थे।

वि.सं.1927 में गच्छाधिपति श्री मूलचन्दजी म.की आज्ञा से आपश्री ने स्वतंत्र रूप से प्रथम चार्तुमास पाटन में किया। चार्तुमास में थरा निवासी श्री पूनमचंदजी ने आपश्री से प्रेरणा पाकर वि.संवत् 1948 अगहन कृष्णा पूजा के दिन दीक्षा अंगीकार की और पूज्यश्री के प्रथम शिष्य के रूप में प्रस्थापित हुए। आपका नाम मुनिश्री रत्नसागरजी रखा गया। पूज्यश्री झवेरसागरजी म. के पास अनेक दीक्षार्थी आए, किन्तु निस्पृही महात्मा ने सभी को अपने गुरूभाई अथवा पूज्य गच्छाधिपतिश्री के ही शिष्य बनने की प्रेरणा दी।

वि.संवत् 1929 पौष शुक्ल 10 के दिन वल्लभीपुर में श्री केशरीचन्दजी को दीक्षित कर मुनिश्री केशवसागरजी के नाम से

आगम रतन मंजुषा

अंग, उपांग, पयभा, छेद, मूल, नंदी अनुयोग द्वार और बाह्य प्रतिक्रमण सूत्रों के छपवाये गये इनमें से पांच निर्युक्तियों को स्वतंत्र रूप से छपवाया गया है। इसे आगम रत्न मंजुषा कहा जाता है।

अपना द्वितीय शिष्य बनाया। नूतन दीक्षितों को पूज्य गच्छाधिपति श्री मूलचन्दजी म.के पास योगोद्वहन करवाकर बड़ी दीक्षा प्रदान की।

एक बार मालवा जैन संघ के एक प्रतिनिधि ने पूज्य गच्छाधिपतिश्री की सेवा में उपस्थित हो, दर्शन वंदन के उपरांत विनीत स्वर में निवेदन किया-

'मा' राज साहब! हम लोग मालवा से आया हों। जिन मालवा का शास्त्रों में दखाण किया है। मालव देश गहन गंभीर, डग-डग रोटी पग-पग नीर। हमारी विनंती स्वीकारी आप मालवा में पधारो। वाँपे संवेगी साधु मा'राज वाँ नी पधारिया तो वाँपे अधर्म फैली जाएगो। इका वास्ते आप हमारा पे मेहरबानी करी ने कोई अच्छा विद्वान, मुक्ता मा'राज भेजो, जिससे मालवो धर्म से हर्यो भर्यो रे। हम आपका सेवक आपसे आशा राखा हां कि हमारी बात खाली नी जावेगा।'

पूज्य गच्छााधिपतिश्री ने मालवा के श्रावकों की बात ध्यान से सुनी और साधु भगवंत की आवश्यकता महसूस कर आपने कुशल प्रवचनकार समयज्ञ, शास्त्रीविशारद और शुद्ध संयमी पूज्यश्री झवेरसागरजी को मालवा जाने की आज्ञा दी। गर्वाज्ञा 'तहत्ति' कर पूज्यश्री ने अपने शिष्य परिवार के साथ मालवा की ओर विहार किया।

पूज्यश्री ने मालवा में प्रथम चार्तुमास वि.संवत् 1929 में रतलाम का स्थानकवासी तथा वहीं चार्तुमासार्थ विराजमान त्रिस्तुतिक आचार्य विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी म.के विचारों का अपने प्रवचनों में शास्त्र-पाठानुसार खंडन किया और 'आचार-शुद्धि' विषय पर सार्वजनिक प्रवचन प्रदान किया।

चार्तुमास पश्चात मालवा में इतस्ततः विचरण कर आपश्री ने कई प्राचीन जिन मंदिरों का जीर्णोद्धार करवाया। कई जगह सनातनधर्मी, आर्य समाजी, स्थानकवासी तेरापंथी, त्रिस्तुतिक मतावलंबियों के साथ शास्त्रार्थ कर सभी को निरूत्तर किया। वि.संवत् 1931 अगहनविदी-10 को रतलाम से पूज्यश्री की निश्रा में सेमलिया तीर्थ का छ:रिपालित संघ निकला और संघपति श्री गणेशीलालजी को माला परिधान करवायी। तत्पश्चात महिदपुर में भव्य अष्टाहिका महोत्सव करावा कर, पौष बिदी-3 के दिन वहां से श्रीमती जड़ा बहन मंगलचंदजी सोनी की ओर से मक्सी तीर्थ का छ:रिपालित संघ निकला जिसमें 700 यात्री थे। मक्सी तीर्थ में पार्श्वनाथ भगवान के जन्म, दीक्षा कल्याणक के अवसर पर पूज्यश्री की प्रेरणा से 350 सामूहिक अट्ठम तप की आराधना सम्पन्न हुई। वहां से विहार कर पूज्यश्री उज्जैन पधारे। उज्जैन में स्थानकवासी साधुश्री छोगालालजी तथा घासीलालजी म. अपने प्रवचनों में मूर्तिपूजा की अशास्त्रीयता बताकर श्रद्धालु श्रावकों को उन्मार्गगामी बना रहे थे। पूज्यश्री ने अपने प्रवचनों में मूर्तिपूजा की शास्त्रीयता सिद्ध कर विरोधियों के मुंह पर ताले लगा दिये। तदंतर फाल्गुन चर्तुदशी तथा चैत्री ओली की आराधना इन्दौर में करवायी। इन्दौर संघ के अतिआग्रह के कारण पूज्यश्री की इन्दौर में चार्तुमास करने की भावना थी, किंतु रतलाम में स्थानकवासी साधुओं के मिथ्योपद्रवों के कारण पुनः रतलाम की ओर विहार करना पड़ा। वहां पर स्थानकवासियों के अग्रगण्य श्री गणेशीलालजी म. से जाहिर में शास्त्र चर्चा हुई। किंतु कोई निर्णय नहीं हुआ। रूढिचुस्त स्थानकवासी साधु अपनी जड़ मान्यता से न हिले। तथापि पूज्यश्री से प्रभावित हो, और सत्यता को स्वीकार कर स्थानकवासी समुदाय के करीब 250 घर मूर्तिपूजा में दृढ़ विश्वास धारण कर श्रावकाचार में प्रवर्तित हुए।

रतलाम में चार्तुमास में पूज्यश्री ने स्थानकवासी मान्य 32 आगम में मूर्तिपूजा के महत्व को बतानेवाली 'भक्ति-प्रकाश' नामक पुस्तिका प्रकाशित करवायी, जिसका अध्ययन, मननकर अनेकों की आँखें खुल गई और उन्होंने सत्यधर्म का मार्ग अपनाया।

चातुर्मासानन्तर ग्रामनुग्राम शासन प्रभावना के कार्य सम्पन्न कर पूज्यश्री पधारे। इन्दौर में त्रिस्तुतिक आचार्यश्री विजयराजेन्द्र सूरीजी म. और पूज्यश्री के बीच सम्यग्यदृष्टि देव के संबंध में वाक्यों के आग्रह से लम्बी चर्चा हुई परन्तु 'तत्व' तु केवलिनो विदन्ति, कोई निष्कर्ष नहीं निकला।

वि.संवत् 1932 में पूज्यश्री ने इन्दौर चार्तुमास कर सुबह-दोपहर पांच पांच घंटे आगमसूत्रों की वाचना दी। वि.संवत् 1933 महिदपुर चार्तुमास में पूज्यश्री ने आवश्यक सूत्र, दशवैकलिक, उत्तराध्ययन, नंदीसूत्र, अनुयोगद्वार आचारांग आदि ग्यारह अंग तथा भगवती, ज्ञाताधर्मकथा, उपासक दशांक अनुत्तरीपतातिक दशांक, प्रश्न व्याकरण, उववाई, रायपसेणी, जीवाभिगम पन्नवणा आदि आगम सूत्रों की वाचना दी जिसकी पूज्य गच्छाधिपति श्री मूलचन्दजी म.ने भी भूरि-भूरि अनुमोदना की और तभी गच्छाधिपतिश्री की ओर से अचानक उदयपुर प्रस्थान आज्ञा आने से महिदपुर में दम पयन्ना सूत्र की वाचना अधुरी रह गई।

वि.संवत् 1934 में उदयपुर में शानदार चार्तुमास हुआ। पूज्यश्री की प्रेरणा से सेठ श्री किशनाजी ने चैत्र बिदी 3 को केशरियाजी तीर्थ का छ:रिपालित संघ निकाला। इस प्रसंग पर पूज्यश्री ने युगादिदेव श्री ऋषभदेव परमात्मा के जन्म दीक्षा कल्याणक चैत्र बिदी के दिन केशरियाजी में मेला भरने के हेतु

जोरदार प्रचार-प्रसार किया। फ्लतः मेवाड़ मारवाड़ गुजरात के हजारों श्रावक मेले में सम्मिलित हुए। वि.संवत् 1934 चैत्र बिदी-8 से प्रारंभ हुआ यह मेला आज भी ठाठ-बाठ से होता है, जिसमें जैनियों के अलावा हजारों जैनेतर भी धुलेवादादा के प्रति अटूट श्रद्धा लिये हुए भाग लेते है।

पूज्यश्री ने उदयपुर में लगातार 10 चार्तुमास कर अपने सुविशुद्ध संयम से वहां के लोगों पर अद्भूत प्रभाव डाला। चार्तुमास उपरांत इस अवधि में आपने मेवाड़ मालवा के अनेक गांवों में प्रवास कर वहां की समस्याओं का समुचित निदान किया। लोगों में धर्म जागृति पैदा की। सागरशाखा के पूर्व पुरूषों द्वारा प्रस्थापित उदयपुर के ज्ञान भंडार का पुनरूद्धार करवाकर अनेक ग्रंथों का कश्मिरी कागज पर पुनः अंकित करवाया। श्री गोड़ी पार्श्वनाथजी के मंदिर का जीर्णोद्धार करवाया तथा श्री सहस्त्रफणा पार्श्वनाथ के मंदिर में अगल-बगल में प्रतिमाओं की प्रतिस्थापना की। श्री वर्धमान तप आयम्बिल शाला की स्थापना करवायी।

वि.संवत् 1936 उदयपुर में स्वामी दयानंदजी लिखित 'सत्यार्थ प्रकाश' का जोरदार जवाब दिया। लेकिन संवत् 1937 में पुनः आर्य समाजियों ने सिर उठाया। दिल्ली से विद्वान स्वामी सत्यानंदजी को बुलाकर उनके सार्वजनिक प्रवचनों में मूर्तिपूजा का खण्डन शुरू किया। श्रावक वर्ग के अनुरोध पर पूज्यश्री ने सनातन धर्म-बंधुओं को साथ लेकर पत्रिका छपवाई जिसमें आर्य समाज की पोल खोल दी। परिणाम स्वरूप क्रोधित आर्य समाजियों ने जाहिर शास्त्रार्थ काा चेलेंज दिया, जिसे पूज्यश्री झवेरसागरजी ने सानंद स्वीकार कर लिया। राजमहल के चौक में स्वामी सत्यानंदजी तथा श्री झवेरसागरजी म.के बीच वाद-प्रतिवाद प्रारंभ हुआ। मध्यस्थता के रूप में दो जैन, सात सनातनी और छह आर्यसमाजी पंडितों को बैठाया गया। तीन दिन तक निरंतर चर्चा चली और चौथे दिन सत्यानंदजी का अचानक स्वास्थ्य बिगड़ गया। फ्लतः वे उदयपुर से नो दो ग्यारह हो गये। वाद-विवाद अधुरा ही रह गया किंतु विवेकी जनता सत्य से परिचित हो गई। पूज्यश्री झवेरसागरजी म.ने सार्वजनिक रूप से सिद्ध कर दिखाया कि आर्य समाज प्रवर्तक स्वामी दयानंदजी को जैन धर्म का प्राथमिक ज्ञान भी नहीं है।

पूज्यश्री झवेरमलजी का सितारा हमेशा बुलन्द रहा। आपने अनेक स्थलों पर विधर्मियों के साथ वाद-विवाद कर सभी को परास्त किया। इसलिये आप वादी शासन प्रभावक (आठ शासन प्रभाव में वादी प्रभावक तृतीय क्रम पर है) के रूप में प्रसिद्ध है। उदयपुर के लोग तो यहां तक कहते हैं कि 'आर्य समाजियों को मुंहतोड़ जवाब देनेवाले पूज्यश्री झवेरसागरजी म. नहीं होते तो आधा उदयपुर आर्य समाज की चुंगल में फंस जाता।'

वि.संवत 1942 फाल्गुन शुक्ला 10 के दिन भिलवाड़ा से पूज्यश्री की निश्रा में श्री किशनजी ने केशरियाजी तीर्थ का छःरिपालित संघ निकाला। आसोज शुक्ल 10 उदयपुर में आपने उपधान तप की आराधना करवायी जिसमें 505 आराधक शामिल हुए। उपधान तप की मालाा के प्रसंग पर पाँचों बहनों ने भगवती दीक्षा अंगीकार की।

वि.संवत 1943 पौष शुक्ला 7 के दिन उदयपुर से पूज्यश्री की प्रेरणानुसार श्री धनजीसेठ ने राणकपुर तीर्थ का छःरिपालित संघ निकाला।

वि.संवत् 1943 का अंतिम उदयपुर चार्तुमास पूर्ण कर पूज्यश्री अहमदाबाद की अत्यंत श्लाधा की ओर अन्तर के आशीर्वाद प्रदान किये।

वि.संवत 1944 में पूज्य गच्छाधिपति आदि की निश्रा में सेठ श्री दीपचंदजी ने श्री शत्रुंजय तीर्थ का छःरिपालित संघ निकाला। तीर्थ माल पश्चात पालीताना में पूज्य गच्छाधिपतिश्री के सान्निध्य में पूज्य श्री झवेरसागरजी म.की आगम वाचना हुई, जिसे ग्रहण कर साधु-साध्वीयों के अतिरिक्त चतुर्विध संघ भी लाभान्वित हुआ। वि.संवत् 1944 का चार्तुमास आपश्री ने श्रद्धेय गच्छाधिपतिजी के साथ पालीताना में ही किया।

चार्तुमास पश्चात भावनगर आदि क्षेत्रों में शासन प्रभावना के कार्यों को अंजाम दे वि.संवत् 1945 का चार्तुमास बोटाद में किया। संवत् 1946 और 1947 का चार्तुमास लिम्बड़ी संघ के अति आग्रह से वहां किया। वि.सं. 1947 माघ शुक्ल 5 के शुभदिन आपश्री ने जिनशासन के अमूल्यरत्न बनानेवाले, संयमाभिलाषी श्री हेमचंद्र को प्रवज्जित कर मुनिश्री आनंदसागरजी (आगमोद्धारक आचार्य देवश्री) के नाम से स्व.शिष्य घोषित किया।

वि.संवत् 1948 अगहन शुक्ला-11 मौन एकादशी को पूज्यश्री यकायक इस पार्थिक देह का त्याग कर स्वर्ग की ओर प्रयाण कर गये। पूज्यश्री झवेरसागरजी म. के शिष्य भगवान महावीर की 71 वीं पाट-परम्परा में आनेवाले, आगमोद्धारक, अप्रतिम प्रभावशाली, ध्यानस्थ स्वर्गत पूज्य आचार्यदेव श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी म. हुए जिनके कार्य-कलापों से सागर समुदाय का नाम जिनशासन के कीर्तिस्तम्भ पर लिखा जा चुका है। तपागच्छ के अन्याय समुदायों की श्रेणी में सागर समुदाय अग्र पंक्ति में विराजमान है। वर्तमान में सागर समुदाय के झंडे तले लगभग 125 साधु भगवंत एवं 750 साध्वीजी महाराज संयम साधना में निमग्न हो रचनात्मक कार्यों द्वारा जिनशासन की सेवा कर रहे हैं।

सागर का जन्म महोत्सव- सूरत में एक अद्भुत प्रसंग

विक्रम संवत 2004 की आषाढी अमावस्या वृहस्पतिवार दिनांक 5/8/1948 का मंगलमय दिवस सूर्यपुर (सूरत) के आंगन में पूज्यपाद प्रातःस्मरणीय आगमोद्धारक श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराज की 74वें जन्म महोत्सव प्रसंग पर हुआ स्वर्ण महोत्सव के रूप में याद किया जाता है। इस मंगलमय प्रसंग पर ताम्रपत्र जैनागम मंदिर में आंगी पूजा भावना श्री अनंतनाथजी मंदिर में आंगी पूजा व्याख्यान में लड्डू की प्रभावना रखी गई थी।

इस अवसर पूज्य आगमोद्धारश्री ने लगभग एक घंटा 10 मिनट व्याख्यान दिया था और फरमाया था कि हीरे की कीमत जानकार ही करता है, बालक नहीं, बच्चा उसे कांच की गोटी ही समझता है। बच्चा उसके वास्तविक स्वरूप को जाने बगैर देखता है जबकि जवेरी हीरे के स्वरूप को देखकर समझता है। व्याख्यान की समाप्ति के बाद पूज्य गुरुदेव के जीवन पर श्राविका बहनों ने एक ऐसी गहुली का गान किया जिसमें उनके सम्पूर्ण जीवन की झलक मिलती थी। गहुली सुन श्रीसंघ आनंदित हो गया। इसके बाद सेठ श्री डाकोरभाई वकील ने गुरुदेव की यशोगान से आनंद ला दिया। उन्होंने कहा कि -व्याख्यान में कहा गया कि सिद्ध वस्तु का विवेचन करने की जरूरत नहीं होती है जैन गगन में पूज्यपाद आगमोद्धारक श्री एक सिद्ध प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित अजोड़ आचार्यश्री है। समस्त जैन संघ और सूरत के जैन संघ आपश्री की 74वीं वर्षगांठ के शुभ अवसर पर दीर्घायुष्यवान हो ऐसी इच्छा है। इसके बाद सुश्रावक धर्म परायण डाकोरभाई दयाचंदमलजी ने बताया कि- शासन प्रभावक श्री देवार्दिकगणि सश्रमण के बाद आगम की अमूल्य विरासत चतुर्दिक संघ को प्रदान कर और सुस्थिर बनाकर पूज्य आगमोद्धारक आचार्य देवेश ने वर्तमानकालीन आचार्यों में कीर्तिरूप नदी के प्रवेश बगैर यशसागर भरा गया उसे जैन शासन में अखण्डित रखने का आपश्री ने विशिष्ट कार्य किया है उपसंहार करने के लिये पूज्यपाद प्रातः स्मरणीय श्री आनंद सागर सूरीश्वरजी महाराज के परम विद्वान सुशिष्य पन्यासप्रवर श्री चंद्रसागरजी गणि जी ने पूज्य गुरुदेव के गुणगान किये एवं अपना सारगर्भित व्याख्यान दे सर्वमंगल का श्रवण कराया ओर संघ विसर्जन हुआ।

कथ्यम्.... पूज्य सागरजी म.सा.

❋ मोहवासना के आधीन बना व्यक्ति संयम का त्याग कर सकता है तो किसी की प्रेरणा पाकर व्यक्ति संयम में स्थिर भी हो सकता है।

❋ आलोचना, निंदा, गर्हा, प्रायश्चित, प्रत्याख्यानादि करता हुआ जीव पुनः शुद्धरूप से चारित्र की आराधना कर सकता है और सर्वकर्मों का मूलतः क्षय कर सकता है।

❋ अपने श्रेष्ठ कुल, धर्म और स्वीकृत मर्यादाओं को पुनः पुनः याद करते रहने से व्यक्ति हीन आचरण से बच सकता है।

❋ व्रतों की अखंडरूप से आराधना का संकल्प खुद को और अन्य को उन्मार्ग-कुमार्ग से बचा सकता है।

❋ जो स्वयं नियमों का पालन करता हो वो यदि किसी को नियम का उपदेश दे तो उसका उपदेश अवश्यमेव प्रभावी बनता है।

❋ उत्तामकुल में उत्पन्न व्यक्ति प्राण छोड़ सकते है मगर किसी भी परिस्थिति में अपनी स्वीकृत मर्यादाओं का त्याग नहीं कर सकते।

❋ धीरज दृढ़ता और संकल्प से व्यक्ति हर आपदा में से अपने लिये सुरक्षित मार्ग खोज सकता है, बना लेता है।

❋ असंयमी को धिक्कार और संयमी को धन्यवाद। संयम और असंयम का संबंध मात्र ब्राह्य वेषभूषा से ही नहीं बल्कि आंतर्भावनाओं से भी है। यदि आंतर्भावना शुद्ध और दृढ़ है तो वैसा व्यक्ति किसी भी निमित्त को पाकर कभी असंयमी नहीं बनता।

सागरजी महाराज अर्थात् जंगम पुस्तकालय

जैन धर्म विशाल एवं महान है...!

अनेकविध देशों के विद्वानों ने जैन धर्म का अध्ययन करने का सदैव प्रयास किया है।

बात उन दिनों की है जब जर्मनी से डॉ. क्राउन उर्फ सुभद्रादेवी का भारत आगमन हुआ था। जैन धर्म का अध्ययन करना उसका प्रमुख उद्देश्य था। आचार्यश्री धर्मसूरीजी म.अपने शिष्यों के साथ बम्बई में विचरण कर रहे थे। जर्मनी की विदुषी क्राऊन आचार्यश्री के दर्शनार्थ प्रायः सविशेष जाती थी और अपनी शंकाओं का सदैव समाधान करती रहती थी। उसका अध्ययन-मनन चल रहा था। अध्ययन करते करते एक दिन उसके मन में शंका की सूक्ष्म लहर लहराई कि जैन धर्म तो पूर्ण अहिंसा का उपदेशक है। तो फिर जैन मंदिरों में विशेषतया मुख्य गर्भगृह के द्वार पर दोनों तरफ हिंसक सिंह की आकृतियाँ क्यों रहती है?

उसने अपनी शंका का निराकरण करने हेतु तत्कालीन विद्वानों.... आचार्यो से सम्पर्क किया। परन्तु उसकी शंका का समाधान कहीं से नहीं हो पाया था। समय यूं ही गुजर रहा था। डॉ. क्राऊन का अध्ययन जारी था। परन्तु शंका का क्रीड़ा प्रायः छुलबुलाता रहता था। ऐसे में किसी ने कहा-'आप पूज्य आचार्य देवश्री सागरानन्द सूरीजी म.सा.के पास क्यों नहीं जाती? वहां आपकी हर शंका का समाधान-निराकरण हो जायेगा।'

डॉ.क्राऊन ने पूज्यसागरजी महाराज का पता लगाया। पूज्य सागरजी महाराज अहमदाबाद दोसीवाड़ा की पोल में उन दिनों विराजमान थे। लगभग विक्रम संवत् १९८७ की साल होगी।

डॉ. क्राऊन अहमदाबाद आई। पूज्य सागरजी म. को वन्दन कर विनय भाव से उसने अपनी शंका प्रस्तुत की।

'गुरूदेव...! सम्पूर्ण अहिंसक देव के मंदिर में दोनों ओर मुंह फैलाये हिंसक सिंह की आकृतियाँ क्यों होती है?'

तत्क्षण उत्तर देते हुए सागरजी महाराज ने कहा-'वे राग-द्वेष की सूचक आकृतियाँ है। संसार में राग और द्वेष ही प्राणीमात्र को अपने फौलादी पंजे में फंसाकर भटकने के लिये विवश करते है। जिनेश्वर देव ने राग और द्वेष पर विजय प्राप्त कर उन्हें अपना गुलाम बनाया है। उसी का वे प्रतीक है।

डॉ.क्राऊन आनंद से झूम उठी। उसके मन का समाधान.... निराकरण हो गया था। तभी उसने दूसरा प्रश्न उपस्थित किया-

लेकिन इसका आधार ग्रन्थ कौन सा है गुरूदेव...?

'उपमिति भव प्रपंचा...!' पूज्य सागरजी महाराज ने उत्तर देते हुए कहा- 'सिद्धर्षि गणि ने लिखा है- 'राग द्वेषों सिंह व्याघ्रौ', राग और द्वेष सिंह व्याघ्र है।'

फिर तो डॉ. क्राऊन ने अनेक प्रश्न किये,जिसके उत्तर पूज्य सागरजी महाराज देते गये और प्रत्येक उत्तर के साथ संबंधित आधार ग्रंथ बताते गये। फलतः डॉ. क्राऊन के मुंह से सहसा शब्द प्रस्फुटित हो गये। **'पूज्य सागरजी महाराज तो जंगम पुस्तकालय है।'**

आगमधरसूरी आगम वाचनादाता आगमिक प्रवर व्याख्याता सागरजी महाराजा की कुछ विशिष्टताऐं :-

1. 821457 श्लोक प्रमाण में 175 छोटे बड़े आगम प्रकरण ग्रंथों, सैद्धांतिक ग्रंथों आदि का सुंदर सम्पादन।

2. 70 हजार श्लोक प्रमाण आगमिक प्राकृत ग्रंथों ओर अनेक विविध संकलना ग्रंथों का अभिनव सर्जन।

3. 60 से 70 हजार श्लोक प्रमाण में 150 ग्रंथों प्रकरणों का मौलिक सृजन।

4. 20 हजार श्लोक प्रमाण गुजराती, हिन्दी साहित्य के 25 ग्रंथों का सृजन।

5. 2,00,000 (दो लाख) श्लोक प्रमाण आगम प्रकरण ग्रंथों की आरस (पत्थर) की 60 गुणा 24 की शिला पर उकेरवाना।

6. दो लाख श्लोक प्रमाण आगम आदि ग्रंथ को 24 गुणा 30 आकार के लेजर कागज पर सर्वांग शुद्ध रूप से मुद्रण करवाना।

7. प्राचीन 80 ग्रंथों पर प्रौढ़ संस्कृत भाषा में 15000 श्लोक प्रमाण विशिष्ठ प्रस्तावना लेखन।

8. वि.सं. 1971 से 1977 के मध्य सात आगम वाचना में कुल 2,33,200 श्लोक प्रमाण वाचना प्रदान की।

9. आगम मंदिर, पालीताना प्रतिष्ठा विक्रम संवत 1999 महावद 5

10. आगम मंदिर, सूरत प्रतिष्ठा विक्रम संवत 2004 महासुद 3

11. अर्द्ध पद्मासन स्थिति विक्रम संवत 2006 वैशाख सुद 5 दोपहर 3बजे से वैशाख वद 5 दोपहर 4.32 तक सूरत में।

24 तीर्थंकर के नाम का अर्थ

1- प्रथम स्वप्न में माता के द्वारा वृषभ देखने के कारण ऋषभ।

2- सोगठ बाजी में माता ने राजा को जीत लिया अतः अजित।

3- गर्भ में आने पर धरती पर अनाज काफी बढ़ने लगा अतः संभव।

4- गर्भ रुप में भी हमेशा इन्द्र ने जिनका अभिनंदन किया अतः अभिनंदन।

5- एक बच्चे के लिए झगड़नेवाली 2 शौक (माताओं) का न्याय देने में माता की बुद्धि संतुलित रही अतः सुमति।

6- माता को कमलपत्र की शय्या में सोने की इच्छा हुई अतः पद्मप्रभ।

7- गर्भ में आने पर माता के दोनों पार्श्व सुवर्णवर्णी और सुकोमल बने अतः सुपार्श्व।

8- गर्भ में आने पर माता को चन्द्र पीने की इच्छा हुई तथा प्रभु चन्द्र समान उज्वल थे अतः चन्द्रप्रभ।

9- गर्भ में आने पर माता ने विधिपूर्वक धर्म किया अतः सुविधि।

10-माता के कर-स्पर्श से पिता का दाह-ज्वर शांत हो गया अतः शीतल।

11-गर्भ के प्रभाव से शय्या पर उपसर्ग करनेवाली देवता का नाश हुआ अतः श्रेयः (कल्याण) करने से श्रेयांस।

12-वासुपूज्य के पुत्र होने से/वासव (इन्द्र) द्वारा पूजित होने से वासुपूज्य।

13- गर्भ में आने पर माता का शरीर एवं मन विमल (स्वच्छ) बन गया अतः विमल।

14-गर्भ में आने पर माता ने अनंत मणियों की माला देखी अतः अनंत।

15-गर्भ में आने पर माता ने धर्म का सुंदर व अधिक पालन किया अतः धर्मनाथ।

16- गर्भ में आने पर पूरे देश में शांति स्थापित हो गयी। मरकी का उपद्रव शांत हो गया अतः शांतिनाथ।

17- स्वप्न में माता ने जमीन में रहे हुए रत्न स्तूप को देखा अतः कुंथुनाथ।

18-स्वप्न में माता ने रत्न का बना हुआ आरा देखा अतः अरनाथ।

19-गर्भ में आने पर माता को एक रात्री में छः ऋतुओं के फूलों की शय्या पर सोने की इच्छा हुई अतः मल्लिनाथ।

20-गर्भ में आने पर माता को मुनि की तरह सुव्रत पालन की इच्छा हुई अतः मुनिसुव्रत।

21-गर्भ में आने पर शत्रु राजा भी माता के चरणों में झुक गये अतः नमि।

22-गर्भ के समय माता ने अरिष्ट (रिष्ट) रत्नमय नेमि चक्र की धार देखी अतः नेमि।

23-माता ने अंधेरी रात में पास में से जाते हुए काले सर्प को देखा अतः पार्श्व।

24-धन-धान्य, सुख-समृद्धि बढ़ने के कारण-वर्धमान महाशक्तिशाली होने से महावीर, अत्यधिक तपस्वी होने से-श्रमण।

मुनि विरक्तसागरजी ठाणा-2 का चार्तुमास प्रवेश

मुंबई- शासन प्रभावक आचार्य श्री हर्षसागर सूरीश्वरजी के शिष्यरत्न 76 राई प्रतिक्रमण मंडल एवं शत्रुंजय महातीर्थ की भावयात्रा के प्रेरक प्रखर प्रवचनकार पू.मुनि श्री विरक्तसागरजी, मुनि मंगलरत्नसागरजी म.सा. एवं निमीसूरीजी की साध्वी मृगनयनश्रीजी ठाणा-4 का चार्तुमास प्रवेश 22 जुलाई को मुंबई बोरीवली वेस्ट के सुमेरनगर जैन संघ में भव्यातिभव्य रुप से सम्पन्न हुआ पूज्यश्री की मांगलिक के पश्चात स्वागत गीत गाया एवं स्वागत भाषण संघ के श्री जवेन्द्रभाई दोशी ने दिया। पश्चात पूज्यश्री ने चार्तुमास महत्व के बारे में बताया कि महान पुण्य के उदय से आत्मा साधना करने के लिये चार्तुमास पर्व हमारे दरवाजे पर दस्तक देने आ रहा है। पूज्यश्री ने बताया कि यदि कृषक फसल की बोनी के समय, व्यापारी, लग्नसरा के समय व विद्यार्थी परीक्षा के समय पमाद करें तो उनको केवल एक वर्ष पछताना पड़ता है किन्तु जो व्यक्ति चार्तुमास आराधना करने में प्रमाद करें तो उन्हें कई जन्मों तक पछताना पड़ता है, चार्तुमास में प्रकृति भी अनुकुल रहती है, मेघराजा पानी की वर्षा करते है, धरती गिलीछम रहती है एवं चार्तुमास में संतगण सर्थखास करके जिनवाणी की वर्षा करते है।

पूज्यश्री चार्तुमास में प्रतिदिन उपदेश, कल्पवेली एवं विक्रमादित्य चरित्र पर आत्म लक्ष्म व तात्विक प्रवचन देंगे, प्रवचन के बाद प्रश्नोत्तरी होगी, विजेता का बहुमान किया जावेगा। आराधना में वेग जाने के लिये चौमासी 14 से 50 दिवसीय पाईंट कार्ड योजना भी रखी गई है। कार्यक्रम के अन्त में सुरेन्द्रनगर संघ ने संघ पूजन किया एवं सकल संघ की नवकारसी का आयोजन किया।

✽ अनु दीपक जैन, जयपुर, मो.नं. 9782499999

आगमोद्धारक भविष्य फल अगस्त -2018

मेष– यह मास आपके लिये मिश्रित फलदायक रहेगा, व्यापारिक लाभ में वृद्धि होगी परन्तु व्ययों की अधिकता भी रहेगी,परिवार में किसी प्रकार का महोत्सव आदि संभावित है, यात्रा शुभ फलदायक रहेगा।

वृष– आपके लिये यह मास शुभ फलदायक सिद्ध होगा, व्यापारिक लाभ बाधा सहित प्राप्त होंगे परन्तु आशा अनुसार आय से मन उत्साहित रहेगा, दूर स्थानों से कोई विशेष लाभ संभावित है धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में रुचि रहेगी।

मिथुन–आपके लिये यह मास मिश्रित फलदायक रहेगा, अधिकारी वर्ग का सहयोग पदोन्नति में सहायक बनेगा, विलासिता संबंधी व्ययों की अधिकता रहेगी, दूर स्थानों की यात्रा संभावित है, पारिवारिक वातावरण बेहतर रहेगा, विद्यार्थी वर्ग में उत्साह रहेगा।

कर्क– आपके लिये यह मास सामान्य फलदायक रहेगा, व्यापारिक लाभ के प्रति मानसिक तनाव रहेगा, महिला वर्ग का सहयोग बेहतर फलदायक सिद्ध होगा इस समय स्वास्थ्य के प्रति ध्यान रखना आवश्यक है, कोई पुरानी बीमारी और बढ़ सकती है, विद्यार्थी वर्ग के लिये तनाव का समय रहेगा।

सिंह- आपके लिये यह मास सामान्य फलदायक रहेगा, व्यापारिक प्रतिष्ठा के प्रति चिंता रहेगी, इस समय कर्मचारी वर्ग हानि पहुंचाने की कोशिश कर सकते हैं, सतर्क रहकर कार्य करें, दूर स्थानों से लाभकारी सूचना प्राप्त होगी, विद्यार्थी वर्ग को रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे।

कन्या– आपके लिये यह मास मिश्रित फलदायक रहेगा, व्यापारिक लाभ में वृद्धि होगी, निवेश संबंधी योजनाएं बनेगी, भूमि भवन संबंधी कोई महत्वपूर्ण कार्य संभावित है, पारिवारिक वातावरण में तनाव संभावित है, विद्यार्थी वर्ग के लिये बेहतर समय रहेगा।

तुला– आपके लिये यह मास शुभ फलदायक रहेगा, वाद-विवाद में विजय प्राप्त होगी, व्यापार में बेहतर लाभ रहेंगे, धार्मिक व सामाजिक क्षेत्र में वर्चस्व बढ़ेगा, धार्मिक कार्यों पर व्यय भी होगा, विद्यार्थी वर्ग के लिये परिश्रम का समय रहेगा।

वृश्चिक– आपके लिये यह माह सामान्य फलदायक रहेगा, अधिकारी वर्ग के सहयोग से कार्य क्षेत्र का विस्तार होगा साथ ही परिश्रम की अधिकता भी रहेगी, मनोबल बनाए रखना अति आवश्यक है, स्वविवेक से किये गये निर्णय बेहतर साबित होंगे, दूर स्थानों की यात्रा शुभ फलदायक रहेगी, विद्यार्थी वर्ग को बेहतर परिणाम प्राप्त होंगे।

धनु– यह माह आपके लिये मिश्रित फलदायक रहेगा, दूर स्थानों से व्यापारिक लाभ प्राप्त होंगे, बनते हुए कार्य में किसी प्रकार की बाधा संभावित है, पारिवारिक वातावरण सुखमय रहेगा, विद्यार्थी वर्ग के लिये बेहतर समय रहेगा।

मकर– यह माह आपके लिये सामान्य शुभ फलदायक रहेगा, व्यापारिक लाभ में वृद्धि होगी एवं परिवारजनों का सहयोग उत्साहजनक रहेगा, कार्य में किसी प्रकार के निवेश की योजना संभावित है, आकस्मिक लाभ प्राप्ति के साधन बनेंगे, विद्यार्थी वर्ग के लिये शुभ अवसर प्राप्त होंगे।

कुम्भ- यह मास आपके लिये शुभ फलदायक रहेगा, व्यापारिक लाभ में आशा अनुसार प्राप्ति होगी, परिश्रम की अधिकता रहेगी, शुभ समाचार संभावित है, यात्रा आदि का योग बन सकता है, विद्यार्थी वर्ग में परिणाम को लेकर उत्सुकता रहेगी।

मीन– यह मास आपके लिये सामान्य फलदायक रहेगा, धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में अधिकांश समय व्यतीत होगा, ख्याति वृद्धि हेतु शुभ समय है, परन्तु व्यापारिक ------

वर्ग पहेली क्रमांक-282

1		2		■	3	4		5
	■		■	6	■		■	
7		■	8			■	9	
	■	10	■		■	11	■	
■	12			■	13			■
14	■		■	15	■		■	16
17		■	18			■	19	
	■	20	■		■	21	■	
22				■	23			

बांये से दांये :-

1- ध्यान का एक प्रकार (4)
3- इस नदी के किनारे शूलप्राणी यक्ष द्वारा भगवान महावीर पर उपसर्ग किया गया था (4)
7- भगवान पार्श्वनाथ का लांछन (2)
8- माता सुमीमा के तीर्थंकर पुत्र का ज्ञानस्थल (3)
9- भगवान वासुपूज्य का छद्‌मस्थकाल इतने माह का था (2)
12-नौ बलदेवों में से एक (3)
13-नौ वासुदेवों में से एक (3)
17-अष्ठकर्मो में से एक (2)
18-मल्लीनाथ भगवान का पूर्वभव (3)
19-चन्द्रपुरी में जन्में तीर्थंकर भगवान का चिन्ह (2)
22-श्रेयांसनाथ भगवान के शासनदेव (4)
23-सौरीपुर में जन्में तीर्थंकर भगवान के प्रधान गणधर (4)

ऊपर से नीचे :-

1- जैनियों के प्रथम तीर्थंकर (4)
2- तप का एक भेद (2)
4- अजितनाथ भगवान का लांछन (2)
5- जो स्वयं तरे व औरों को तारे वे कहलाते है.... (4)
6- महाराज चेटक इस नगर के अध्यक्ष थे (3)
10-कौशाम्बी नगरी में जन्में तीर्थंकर के पिता (3)
11-भगवान महावीर का एक पूर्वभव....वासुदेव (3)
14-मंदिर, देवालय, जिनगृह (4)
15-अष्ट द्रव्यों में एक (3)
16-वासुपूज्य भगवान का पूर्वभव (2)
20-विमलनाथ भगवान की प्रथम साध्वी (2)
21-वह स्थान जहां भक्तामरधाम स्थित है (2)

वर्ग पहेली क्रमांक-281का परिणाम

अ	श्व	से	न	■	ज	रा	सं	ध
र	■	ना	■	भ	■	म	■	र्म
ना	ग	■	ध	र	णी	■	ऊ	ना
थ	■	जि	■	त	■	चं	■	थ
■	पा	ता	ल	■	नं	द	न	■
वा	■	री	■	वि	■	न	■	पु
मा	न	■	वि	ज	य	■	पु	ष्प
दे	■	ध	■	य	■	प	■	व
वी	त	रा	गी	■	प	द्मा	व	ती

***मानव देह का मूल्य-** मनुष्य के शरीर की चर्बी से सात टीकियाँ साबुन, कार्बन से नव हजार पेन्सिल बन सकते हैं और उसमें जमा किये पानी से दस गेलन के बर्तन को भर सकते हैं। इसलिये मानवी के शरीर का ज्यादा मूल्य नहीं है, लेकिन आध्यात्मिक दृष्टि से वह अमूल्य है।*

सर्व शास्त्रों में मानव-भव अमूल्य-जैनों के उत्तराध्ययन में, बौद्धों के धम्मपद में, शंकराचार्य के विवेक चूडामणि में, मुस्लिम के कुरान में, वैदिकों के वेद-उपनिषदों में, वैष्णवों के रामायण-महाभारत में, ईसाईयों के बाईबल में ।

पेट भर-भर के मानव अवतार की प्रशंसा की गई है और 'मानवता' की मांग की गई है।

सूचना- अब पहेली के लिये ड्रा द्वारा प्रोत्साहन राशि पुरस्कार में दी जायेगी। इसके लिये ड्रा निकालकर क्रमशः तीन पुरस्कार तीन विजेताओं को रुपये 31/-, 21/-, 11/- एम.ओ.भेजे जावेंगे। सही उत्तरवाले नाम हम छापेंगे ही। आप सहयोग बनाये रखिये। धन्यवाद।

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-281

✻ आचार्य प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा.

सही जोड़ी मिलाइये:-

1- मालव भूषण	1- हरिभद्रसूरी
2- कलिकाल सर्वज्ञ	2- कलापूर्ण सूरी
3- सरस्वतीलब्धप्रसाद	3- वल्लभसूरी
4- आगमोद्धारक	4- नेमिसूरी
5- सवाइहीरला	5- हीरसूरी
6- जगत्गुरु	6- सेनसूरी
7- शासन सम्राट	7- आनंदसागरसूरी
8- साधर्मिक उद्धारक	8- रत्नसुंदरसूरी
9- अध्यात्मयोगीजी	9- हेमचंद्रसूरी
10-याकिनीमहतरासुनु	10-नवरत्नसागरसूरी

शिला पर उत्कीर्ण आगम ग्रंथ

आगम ग्रंथों को मकराना के संगमरमर सफेद पत्थर पर उत्कीर्ण करवाने का कार्य आरंभ होने पर सबसे पहले अलग-अलग तरीके से कार्य करवाया गया। इसके नमूने तैयार करवाये गये। इसके बाद एक ही कारीगर के हाथ से श्री तत्वार्थ सूत्र उत्कीर्ण करवाया गया। कार्य से संतुष्टि होने पर ठेका देकर श्री आयारंग श्री सूत्र वृतांग, श्री दशाश्रुत स्कंध, श्री उत्तराध्ययन और श्री दशवैकालिक इन पांच निर्युक्तियों ओर श्री सिद्धप्राभृत आदि आगम ग्रंथों को शिला पर उत्कीण्र करवाया गया। यह सभी श्रीसिद्धचक्रगणधर मंदिर में लगाये गये है। इसके उपरांत 11 अंग, 12 उपांग, 10 पयना, श्री याह्य प्रतिक्रमण, 6 छेद, जीतकल्पभाष्य, पंच कल्प भाष्य और महानिशीथ 4 मूल (आवश्यक औघनिर्युक्ति, दशवैकावि, पिंडानिर्युक्ति और उत्तराध्ययन, नंदी, अनुयोगद्वार, इन आगम को शिला पर उत्कीर्ण करवाया। ये शिला 1/1 से 335/1 तक हे। इसके बाद कर्मप्रकृति, पंच संग्रह, ज्योतिष करंडक, विशेषणवती, पंच सूत्र, पंचाशक और पंचवस्तु प्रकरण शिला पर उत्कीर्ण किये गये। ये शिला क्रमांक 335/2 से 360/3 तक में पूर्ण हुए हैं। ये आगम के मूल मात्र ही उत्कीर्ण किये गये हैं। सभी उत्कीर्ण शिलाओं पर श्री सिद्ध क्षेत्रीय श्री वर्धमान जैनागम मंदिर भी लिखा गया है ये शिला क्रमांक 1/1 से 360/1 तक है।

वर्गपहेली क्रमांक-279 के परिणाम

विजेता :-

1-श्रीमती विद्या संघवी, बदनावर (म.प्र.) -प्रथम
2-भारती जैन, देवास (म.प्र.) -द्वितीय
3-शांता बापना, इंदौर (म.प्र.) -तृतीय

इनके भी उत्तर सही थे :-

स्नेहलता जैन, मंदसौर, कला मेहता, रतलाम, चंदनबाला जैन, जवाहरलाल जैन, उज्जैन

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-280 के परिणाम

विजेता :-

1-दिलीपकुमार शाह, नवसारी (गुज.) -प्रथम
2-हर्षा पारेख,घाट कोपर(वेस्ट)(महा.) -द्वितीय
3- स्नेहलता जैन, मंदसौर (म.प्र.) -तृतीय

सही उत्तर-

1- नीवी, 2- धन्नाजी, 3- चम्पा श्राविका, 4- 16 उपवास, 5- उणोदरी, 6- एक लठाना, 7- 1180645, 8- मोक्ष दंडक तप, 9- तत्वार्थधिगम 10-50।

सुख का मार्ग- *सारा जगत सुख को ढूंढ रहा है। सुख कहां से मिले ? शांति से मिले ! शांति कहां से मिले ? चित्त की स्थिरता से मिले ! चित्त की स्थिरता कहां से मिले ? आशाओं का त्याग करने से मिले ! आशा किस प्रकार छूटे ? अनासक्ति आने से ! अनासक्तिकैसे मिले ? बुद्धि से मोह को दूर करने से मिले !*

नोट- पोस्टकार्ड पर अपने पते के साथ शहर के पिनकोड नंबर अवश्य डाले।

प्रिय पाठकों! उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर हमें पोस्टकार्ड पर लिखकर हमें दिनांक 25-8-2018 तक भेज दीजिये। सही उत्तरों में से लक्की ड्रा निकालकर प्रथम तीन को क्रमशः51/-, 31/-, 21/- रूपये की राशि से सम्मानित किया जायेगा साथ ही उत्तीर्ण होने वालों के नाम ''आगमोद्धारक'' मासिक में प्रकाशित किये जायेंगे। भेंट राशि एम.ओ. द्वारा भेजी जायेगी। - सम्पादक

आचार्यश्री मृदुरत्नसागरसूरीजी का चार्तुमास के पहले महामांगलिक मेहसाणा में हुई

चार्तुमास प्रवेश 22 जुलाई को विसनगर में हुआ

मेहसाणा-पूज्यपाद आचार्य देवेश मालव भूषण गुरुदेव श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा के सुशिष्य आचार्य देवेश श्री मृदुरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा. की महामांगलिक का आयोजन 14 जुलाई को मेहसाणा श्री सीमंधर स्वामी जिनालय परिसर में हुआ। पूज्यश्री का विहार विसनगर की ओर हुआ जहां आपश्री का भव्य चातुमार्सिक प्रवेश 22 जुलाई को सम्पन्न हुआ। प्रवेश के प्रसंग पर राजस्थान के वागड़ मालवा, गुजरात आदि स्थानों से बड़ी संख्या में धर्मिष्ठों का मंगल आगमन हुआ। पूज्यश्री की निश्रा में अनेक धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन चार्तुमास में होगा।

अनुयोगाचार्य श्री वीररत्नविजयजी म.सा. का शिवपुर मातमोर में 24 वर्ष बाद चार्तुमास

मातमोर- मालवा के अनेक श्री संघों में विगत कई वर्षो से शासन प्रभावना करने वाले सहज, सरल, अनुयोगाचार्य श्री वीररत्नविजयजी म.सा. और साध्वी श्री विजयप्रभा श्रीजी म.सा.आदि ठाणा का भव्य चार्तुमास प्रवेश 20 जुलाई को हुआ। यहां आपश्री का चार्तुमास 24 वर्ष बाद हो रहा है। चार्तुमास प्रवेश के शुभ अवसर पर इन्दौर, उज्जैन, बागली, चापड़ा, शाजापुर, उन्हेल आदि स्थानों से बड़ी संख्या में धर्मिष्ठ गुरुभक्तों का आगमन हुआ। प्रवेश अवसर पर अनेक विशिष्ट अतिथियों का आगमन हुआ। विशिष्ट संघ पूजा भी रखा गया था। चार्तुमास में अनेक विशिष्ट धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जावेगा। सम्पर्क स्थल- श्री त्रिभुवन पार्श्वनाथ जैन मंदिर, पोस्ट-मातमोर, वाया बागली (देवास) मातमोर-455332 (म.प्र.)

बेल्लारी में चातुर्मास

पूज्यपाद मालवभूषण आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरी जी महाराजा के सुशिष्य उपाध्याय प्रवर श्री वैराग्य रत्न सागरजी म.सा.एवं मुनि श्री पार्श्व रत्न सागर जी म.सा. का विहार कर्नाटक प्रांत में चल रहा है। आप का चातुर्मास बेल्लारी के श्री पार्श्वनाथ जैन श्वेताबर जिन मंदिर कार स्टीट बेल्लारी 483101 कर्नाटक मे हो रहा है प्रवेश 21 जुलाई को हुआ।

मुनिश्री आदर्शरत्नसागरजी म.सा. का चार्तुमास प्रवेश हुआ

आगर- सागर समुदाय के मुनिश्री आदर्शरत्नसागरजी म.सा.,साध्वी श्री गुणज्ञाश्रीजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास प्रवेश 20 जुलाई को भव्य रुप से हुआ। श्री वासुपूज्य तारकधाम जैन मंदिर से चार्तुमास यात्रा आरंभ हुई जो जैन ओसवाल भवन आकर एक विशाल धर्मसभा में बदल गई। चार्तुमास प्रवेश पर बड़ी संख्या में देश के विभिन्न नगरों से धर्मिष्ठों का आगमन हुआ था।

ज्योतिर्विद प.पू.आ.देवेश श्री जिनरत्नसागरसूरीजी म.सा. की निश्रा में कालसर्प योग निवारण महा अनुष्ठान

धार- संसारी व्यक्ति किसी ने किसी ग्रह से पीड़ित है, उसमें भी कालसर्प योग व्यक्तिको ज्यादा परेशान करता है। क्या आप अपने जीवन में कालसर्प योग से पीड़ित है ? तो आप अवश्य ही यह अनुष्ठान कर ले...! यह अनुष्ठान आपको सम्पूर्ण जैन विधि-विधानों से करवाया जावेगा...!

अपने शरीर में रही आधि-व्याधि-उपाधि एवं संसार के रुके हुए सारे कार्य अच्छी सफलता पूर्वक हो इस पवित्र उद्देश्य से (संसारी व्यक्ति इधर-उधर न भटके) यह काल सर्प योग एवं अन्य सभी ग्रहों की शांति हेतु यह अनुष्ठान रखा है। श्रावण सुद-5 बुधवार दिनांक 15/8/2018 को प्रातः 9.00 बजे।

इस महाअनुष्ठान में चांदी का नाग नागिन का जोड़, सफेद माला, आसन, पुष्प, फल, नैवेद्य, अक्षत, धूप, दीप बरास, खीर, रेश्मी वस्त्र आदि यहीं से दिये जावेंगे।

इस महा अनुष्ठान में बैठनेवाले व्यक्ति को **1800/- रुपये** जमा करवाना होंगे। इसमें संख्या सीमित है। अतः अपनी सीट प्रथम से ही बुक करवा लें ! संख्या पूर्ण होने पर फिर आप इस अनुष्ठान से वांछित रह न जावे इसका विशेष ध्यान दें।

सूचना- जो भी व्यक्ति हो उसे सफेद वस्त्र स्वच्छ हो उसमें ही आना है। विशेष जानकारी हेतु **88151-56489** पर कॉन्टेक्ट करें- **अनुष्ठान स्थल-** श्री भक्तामर महातीर्थ-देवीजी मंदिर के आगे, इन्दौर-अहमदाबाद रोड़, धार (म.प्र.)

INTERNATIONAL 1-FOUNDATION

2022 से 2025 के मध्य प्रदेश के 17 प्रतिशत उच्च अधिकारी (IPS आदि) जैन होंगे, जिन्हें 9 जैन संस्थाएं तैयार कर रही है, अगर आप सोश्यल मीडिया सर्च कर रहे है और किसी पेज पर न्याय सरकार विरोधी कोई भी शिकायत नहीं हो और मात्र धर्म विकास की बात हो तो इसका अर्थ है कि आप जैन समाज की किसी संस्था के पेज पर हो !

सौजन्य-प्रेमगंगा

पांच कर्त्तव्य-पांच परमेष्ठी

अमारि प्रवर्तन- मेरा ठीक पालन करना हो तो साधु बन जाव ! क्योंकि संपूर्ण अहिंसा पालन साधु ही कर सकता है। **साधर्मिक भक्ति-** मेरा ठीक तरह से पालन करना हो तो उपाध्याय की उपासना करो ! वे साधुओं को शिक्षा देते हुए कैसी सुन्दर साधर्मिक भक्ति कर रहे हैं ! साधु उनके साधर्मिक है ! अन्नदान से ज्ञानदान महान है ! **क्षमापना-** आचार्य भगवंत की आराधना से मेरा पालन ठीक तरह से हो सकता है ! आश्रितों को भूलों बताने पर भी जो क्षमाशील रह सके, वे ही आचार्य बन सकते हैं। **तप-** मेरा पालन करना हो तो सिद्ध बन जावे ! सिद्ध सदा के लिये अणाहारी है ! **चैत्य परिपाटी-** सच्चे अर्थ में प्रभु के दर्शन करने हों तो प्रभु बन जाव ! देवों भूत्वा देवं यजेत्' जो देव बनता है वही देव को पहचान सकता है, पूजा कर सकता है !

किसको कब भूख लगे ?

✻ नारक जीवों को अंतर्मुहूर्त में भूख लगती है ! ✻ पृथ्वी आदि स्थावर जीव हरेक समय आहार लेते है ! ✻ विकलेन्द्रिय को अंतमुहूर्त में भूख लगती है ! ✻ तिर्यच पंचेन्द्रिय को जघान्य से अंतमुहूर्त में और उत्कृष्ट से दो दिन में भूख लगती है ! ✻ मनुष्य को जघन्य से अंतर्मुहूर्त में और उत्कृष्टसे तीन दिन में भूख लगती है ! (अवसर्पिणी के पहले आरे में युगलिकों को तीन दिन में, दूसरे आरे में दो दिन में, तीसरे आरे में एक दिन में, चौथे आरे में एक दिन में एक बार, पांचवें आरे में दिन में दो बार भूख लगती है और छट्ठे आरे में तो कोई भी मर्यादा नहीं !) दस हजार वर्ष के आयुष्यवाले देव को एक दिन में, पल्योपम के आयुष्यवाले देव को दो दिन से नव दिन तक, एक सागरोपम आयुष्यवाले देव को एक हजार वर्ष में और छट्ठे आरे में तो कोई भी मर्यादा नहीं !) दस हजार वर्ष के आयुष्यवाले देव को एक दिन में, पल्योपम के आयुष्यवाले देव को दो दिन से नव दिन तक, एक सागरोपम आयुष्यवाले देव को एक हजार वर्ष में और तेतीस सागरोपम आयुष्यवाले देव को तेंतीस हजार वर्ष में भूख लगती है ! **- पन्नवणा पद-28**

आचार्यश्री नित्यसेन सूरीजी का प्रवेश 21 जुलाई को हुआ

उज्ञैन- त्रिस्तुतिक श्री संघ के वर्तमान गच्छाधिपति पूज्य आचार्य श्री नित्यसेनसूरीजी म.सा.आदि साधु-साध्वीवृंद का चार्तुमास प्रवेश 21 जुलाई को हुआ। उज्ञैन के नमकमंडी क्षेत्र में स्थित राजेन्द्र सूरी उपाश्रय भवन में आपका मंगल प्रवेश हुआ।

साध्वी स्वर्णज्योतिश्रीजी का चार्तुमास बेरछा में

बेरछा- सागर समुदाय की साध्वी श्री स्वर्णज्योति श्रीजी म.सा.आदि ठाणा का भव्य चार्तुमास बेरछा उज्जैन के समीप हो रहा है। आपका चातुमार्सिक प्रवेश 20 जुलाई को हुआ।

पांच प्रकार के अनुष्ठान

विष अनुष्ठान- इस लोक की (कीर्ति, लब्धि आदि) इच्छा से किया जाता अनुष्ठान ! **गरल अनुष्ठान-** परलोक की (स्वर्गादि) इच्छा से किया जाता अनुष्ठान ! विष (सर्प विष) से तत्काल मृत्यु होती है ! गरल (पागल कुत्ते का विष) से कालान्तर से मृत्यु होती है ! इस तरह इस लोक की इच्छा से होता हुआ धर्म यहां ही भावप्राण की कत्ल करता है और परलोक की इच्छा से होता हुआ धर्म परलोक में (कालान्तर से) कत्ल करता है ! **अनुष्ठान-** भाव-उपयोग शून्य सम्मूच्छिंम तुल्य अनुष्ठान ! **तद्हेतु अनुष्ठान-** मोक्ष की इच्छा से आदरपूर्वक किया जाता अनुष्ठान ! जो अमृत-अनुष्ठान का हेतु है। **अमृत अनुष्ठान-** मोक्ष की इच्छा से अति आदर पूर्वक किया जाता, विस्मय, रोमांच, आनंद और भावोल्लास वृद्धि से व्यक्त होता अति परिशुद्ध अनुष्ठान ! **- योगबिन्दु**

श्री भक्तामर महातीर्थ अभ्युदय धाम में अंजन प्रतिष्ठा का महोत्सव 10-11 फरवरी 2019 को आयोजित होगा

*** श्री चन्द्ररत्नसागरसूरीजी चार्तुमास भक्तामर तीर्थ मे।**
*** प्रतिष्ठा संबंधी तैयारियां आरम्भ हुई।**
*** 150-200 साधु-साध्वी की अमृत निश्रा रहेगी।**
*** प्रतिष्ठा की रुपरेखा को अंतिम रुप दिया जा रहा है।**

धार- विगत दिनों श्री भक्तामर महातीर्थ अभ्युदयधाम तीर्थ में 47 दिन से चल रहे उपधान तपाराधना की पूर्णाहुति एवं दीक्षार्थीभाई भावेश की दीक्षा महोत्सव में ज्योर्तिविद् आचार्य श्री जिनरत्नसागर सूरीजी म.सा. वाणी के जादूगर आचार्य श्री जितरत्नसागर सूरी जी म.सा., आचार्य श्री चन्द्ररत्न सागर सूरीजी म.सा.के साथ अनेक साधु-साध्वी भगवंत की निश्रा रही। भक्तामर धाम में 44 देहरियों की प्रतिष्ठा का मुहूर्त प्रदान करने की बोली लगी जो चैन्नई के श्री शांतिलालजी ने ली और श्री संघ के समक्ष अंजन-प्रतिष्ठा का मुहूर्त श्री संघ के समक्ष जाहिर किया गया। **अंजन 10 फरवरी एवं प्रतिष्ठा 11 फरवरी 2019 को होगी।** इसके बाद दीक्षार्थी भाई के नामकरण की घोषणा हुई । नूतन दीक्षित का नामकरण मुनिश्री गोयमसागरजी रखा गया। आचार्यश्री जितरत्नसागरसूरीजी मुनिश्री ज्ञानेशरत्नसागरजी एवं नूतन मुनिश्री गोयमसागरजी म.सा.आदि साधु-साध्वीजी मंगल विहार कर मलाड़ मुंबई पंहुचे जहां आपका मंगलमय चातुमार्सिक प्रवेश 25 जुलाई को हुआ । जैनाचार्य श्री चन्द्ररत्नसागरसूरीजी म.सा.का चार्तुमास श्री भक्तामर तीर्थ में ही होगा । प्रतिष्ठा संबंधी तैयारी का अंतिम रुप दिया जाना है।

मालवा के श्रीसंघों के लिये खुशखबरी जिन मंदिर उपकरणों के लिये सम्पर्क करें

मालवा के समस्त जैन श्वेतांबर श्रीसंघों के लिये यह खुश खबरी है कि आपके यहां जिन मंदिर सम्बन्धी जिन भी उपकरणों की आवश्यकता है उसकी व्यवस्था हम करेंगे।

श्री केशरवाड़ी तीर्थ चैन्नई के श्री शांतिभाई ने पूज्य आचार्य भगवंत श्री जिनरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा. के समक्ष हमें आश्वासन दिया है मालवा के जिन मंदिर में सभी आवश्यक उपकरण हम प्रदान करेंगे। श्री अभ्युदयधाम भक्तामर तीर्थ, धार (म.प्र.) को स्थानीय स्तर पर कार्यालय बनाया गया है। आप श्रीसंघ के लेटरपेड पर आवेदन नाम, फोन नंबर के साथ आगमोद्धारक कार्यालय- डॉ. सुभाष जैन, 46, संखीपुरा उज्जैन (म.प्र.) के पते पर भिजवा देवें। आगे बाद में हम सम्पर्क करेंगे, उपकरणों की व्यवस्था करेंगे।

23 वें तीर्थकर प्रभु के 23 लाख महाभिषेक का आयोजन

बैंगलोर- सागर समुदाय के जैनाचार्य श्री मुक्तिसागरसूरीजी के द्वारा एक शाम पारस के नाम के साथ अभिषेक आदि का आयोजन 30 अगस्त को परमात्मा के जन्म कल्याणक निमित्त किया जा रहा है। इस अवसर पर भव्य रथयात्रा का आयोजन भी होगा।

अनुयोगाचार्य श्री लब्धि-सागरजी का प्रवेश हुआ

मुंबई- सागर समुदाय के पूज्य पंन्यास अनुयोगाचार्य श्री लब्धि सागर जी म.सा.,साध्वी पूर्णप्रज्ञा श्रीजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास प्रवेश 22 जुलाई को हुआ। अंधेरी गुजराती संघ दो सामैया आरंभ होकर श्री जुहुलेन जैन संघ ए–103-104 स्वाति अपार्टमेंट पहला माला, जुहुलेन अंधेरी वेस्ट, मुंबई-400058 (महा.) पहुंचा जहां विशाल धर्मसभा हुई। चार्तुमास से चक्रध्यान शिविर, तप आदि होंगे।

साध्वीश्री मयणाश्रीजी का चार्तुमास इन्दौर में

इन्दौर- पूज्य साध्वी श्री मयणा श्रीजी का चार्तुमास श्री पार्श्वनाथ जैन संघ, रेसक्रोर्स रोड़, इन्दौर (म.प्र.) में हो रहा है । आपका चार्तुमास प्रवेश 22 जुलाई को हुआ। आपके द्वारा ''जैन जागरण'' शिविर के आयोजन होंगे।

युवा जैनाचार्यश्री विश्वरत्नसागर सूरीजी के चार्तुमास प्रवेश पर मुंबई में सर्वाधिक गुरुभक्तों-धर्मिष्ठों का मेला लगा

* हजारों की संख्या में देशभर से लोगों का आगमन हुआ।
* कांदिवली का चार्तुमास तीन श्रीसंघों को लाभ देगा।
* श्री वासुपूज्य स्वामीजी, श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ प्रभु, श्री मुनिसुव्रतस्वामीजी के संघों में चार्तुमास
* 14 जुलाई की महामांगलिक अच्छी रही।
* चार्तुमास में शिविर, धार्मिक आयोजन होंगे।

मुंबई- पूज्यपाद गुरुदेवश्री मालव भूषण जैनाचार्य श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा के द्वितीय सुशिष्य पूज्य युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा. के मुंबई के विभिन्न संघों में जोरदार अगवानी करते हुए शासन प्रभावना की ओर चार्तुमास आरंभ होने के पूर्व 14 जुलाई को विलेपार्ले में हजारों धर्मिष्ठों के मध्य महामांगलिक करवाई। 22 जुलाई को चातुर्मासिक प्रवेश के पूर्व आपश्री का आगमन कांदिवली के निकट हो गया। यहां से पूरे क्षेत्र में फ्लेक्स के द्वारा आपके चार्तुमास की जानकारी जैन-अजैन सब लोगों को मिल रही थी। 22 जुलाई को प्रातःकाल से ही प्रवेश का नजारा देखने को मिलने लगा था।

बड़ी संख्या में देश के विभिन्न प्रांतों से गुरुभक्त-धर्मिष्ठों का आगमन हो गया था। युवा जैनाचार्य नवरत्न गुरु कृपा पात्र श्री विश्वरत्नसागरसूरीजी म.सा. के चार्तुमास प्रवेश ने मुंबई में हुए सभी चार्तुमास प्रवेश को पीछे छोड़ दिया। हजारों-हजार की संख्या में धर्मिष्ठों का भव्य सामैया मुंबई की सड़कों पर जैनत्व का डंगा बजा रहा था। यह चार्तुमास इस मायने में भी महत्वपूर्ण बन गया है कि कांदिवली चार्तुमास कांदिवली के साथ ईरानीवाड़ी श्रीसंघ, श्री मुनिसुव्रत स्वामीश्री संघ ऐसे तीन संघों का संयुक्त चार्तुमास बन गया है। भव्य चार्तुमास सामैया सर्वप्रथम श्री कांदिवली वासु पूज्य स्वामी श्रीसंघ पहुंचा जहां जैना चार्यश्री ने प्रवेश की प्रक्रिया पूर्ण करवाई फिर ईरानीवाड़ी में चिंतामणी पार्श्वनाथ परिसर में आगमन हुआ और इसके बाद श्री मुनिसुव्रत स्वामीजी जिनालय पहुंचा। यहां से पुनः सामैया धर्मसभा स्थल पहुंचा यहां पहले से 2-3 हजार धर्मिष्ठों की उपस्थिति भी युवाचार्यश्री के आते ही धर्मसभा आरंभ हो गई और उपस्थित लोगों की संख्या 4-5 हजार तक पहुंच गई। आचार्यश्री एवं मुनि भगवंतों के सामायिक प्रवचन हुए। बाहर से आये धर्मिष्ठों के साथ सांसद आदि ने संबोधित किया। धर्मसभा लगभग तीन बजे तक चली।

साध्वीश्री भव्यव्रताश्रीजी का चार्तुमास मझगांव में

मुंबई- सागर समुदायवर्तीय साध्वी श्री भव्यव्रताश्रीजी म.सा. का चातुर्मासिक प्रवेश 21 जुलाई को गाजे-बाजे के साथ श्री उन्नति वासुपूज्य जैन संघ प्रेमसागर बिल्डिंग उपाश्रय हॉल पहला माला, सेलटेक्स ऑफिस के सामने, सरदार बलवंतसिंह गोदी मार्ग, मझगांव, मुंबई-400010 (महा.) में हुआ।

साध्वी भव्यपूर्णाश्रीजी का चार्तुमास मांडवला में

मांडवला- सागर समुदाय की साध्वीवर्या श्री भव्यपूर्णाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास श्री जैन संघ मांडवला (जालोर) (राज.)-343042 में होने जा रहा है। आपका चार्तुमास प्रवेश 22 जुलाई को हुआ।

पंन्यास श्री विरागसागरजी का प्रवेश 15 जुलाई को हुआ

अहमदाबाद- शत्रुंजय सेवल क्रांतिकारी पूज्य पंन्यास प्रवर श्री विरागसागरजी म.सा. साध्वी श्री सिद्धिपूर्णाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा का मंगल चार्तुमास प्रवेश 15 जुलाई को सोतारोड़ जैन संघ चित्राकुल, अहमदाबाद में हुआ।

शासन प्रभावक जैनाचार्यश्री अशोकसागर सूरीजी म.सा. का प्रवेश 22 जुलाई को विलेपार्ले में हुआ

तीन आचार्य, दो गणि का भी चार्तुमास साथ में।

मुंबई- सागर समुदाय के वरिष्ठ जैनाचार्य श्री अशोकसागरसूरीजी महाराजा के साथ आचार्यश्री सागरचंद सागरसूरीजी म.सा., आचार्य श्री सौम्य चंदसागरसूरीजी म.सा. आचार्य श्री मति चंदसागर सूरीजी म.सा. के साथ गणि वर्य श्री दिव्येशचंदसागरजी एवं श्री तीर्थ चंदसागरजी म.सा.आदि विशाल साध -साध्वी मंडल का चातुर्मासिक भव्य प्रवेश 22 जुलाई को श्री विर्लेपार्ले मूर्तिपूजक जैन संघ चेरीटी-कला कांति भवन, पोंडरोड, विलेपार्ले (वेस्ट) मुंबई-400056 (महा.) में हुआ । प्रवेशोत्सव में राजस्थान, म.प्र., गुजरात, महाराष्ट्र के साथ देश के अनेक नगरों से गुरुभक्त का आगमन हुआ। पूज्यश्री का चार्तुमास की आगामी धार्मिक कार्यक्रमों की रुपरेखा देखी। संघ में हो रहे चार्तुमास से धर्मिष्ठों में अपार उत्साह है। चार्तुमास के दौरान विविध धार्मिक आयोजन होंगे ।

मुनिपुंग श्री गणधररत्नविजयजी ने 700 अट्ठ तप किये

सूरत- श्री नानपुरा जैन श्री संघ में दीक्षा दानेश्वरी आचार्य भगवंत श्री गुणरत्नसूरीजी म.सा.,आचार्य श्री कुलचंदसूरीजी म.सा.आदि 200 से अधिक साधु-साध्वी भगवंतों की पावन निश्रा में पूज्य आचार्यश्री रश्मिरत्न सूरीजी म.सा. के सुशिष्य मुनिपुंग श्री गणधररत्नविजयजी म.सा.के द्वारा 6 वर्ष के अल्प समय में किये गये 700 अट्ठम तप, 2100 उपवास की पूर्णाहुति पर दिनांक 3 जुलाई को प्रातः धर्मसभा का आयोजन का मुनिश्री की अनुमोदना की गई बाद में पूज्यश्री का पारणा हुआ।

आचार्यश्री पद्मसागरसूरीजी का चार्तुमास भायंदर में

मुंबई- राष्ट्रसंत पूज्य जैनाचार्य श्री पद्मसागर सूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा का भव्य चातुमार्सिक मंगल प्रवेश 18 जुलाई को हुआ। पूज्यश्री प्रवेश भव्य रुप से सैकड़ों की संख्या मे उपस्थित गुरुभक्तों की उपस्थिति में हुआ। चार्तुमास श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ बावन जिनालय जैन श्वेतांबर पेढ़ी ट्रस्ट देवचंद्रनगर, स्टेशनरोड, भायंदर (वेस्ट) में हो रहा है।

साध्वी श्री शीलगुप्ताश्रीजी का चार्तुमास देवास में

देवास- कलिकुण्ड तीर्थोद्धारक आचार्यश्री राजेन्द्र सूरीजी की आज्ञानुवींय साध्वी श्री शीलगुप्ता श्रीजी म.सा. का चार्तुमास श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ मंदिर तुकोगंज रोड़, देवास में हो रहा है। प्रवेश 16 जुलाई को हुआ।

जैनाचार्य श्री महोदयसागर सूरीजी का चार्तुमास प्रवेश 15 जुलाई को

मुंबई- महाराष्ट्र की मायानगरी मुंबई के बोरीवली (वेस्ट) उपनगर की पावन धन्य धरा पर अखण्ड 52 वें वर्षीतप के आराधक, अचल गच्छा धिपति प.पू.आ.भगवंत श्री गुणोदय सागर सूरीजी म.सा. के आज्ञानुवर्तिनी आगम दिवाकर जैनाचार्य श्री महोदय सागरसूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा का 15 जुलाई को श्री संभवनाथ जैन देरासर पेढ़ी जांबली गली, बोरीवली (वेस्ट) में भव्य चार्तुमास प्रवेश हुआ। इस अवसर पर आसपास के कई नगरों से कई गुरुभक्त पधारें।

जैनाचार्य श्री मणिप्रभसागरजी का प्रवेश 22 जुलाई को हुआ

इन्दौर- पूज्य गच्छाधिपति जैनाचार्य श्री मणिप्रभसागर सूरीश्वरजी म.सा. का इन्दौर चार्तुमास प्रवेश 22 जुलाई को हुआ। मुनिश्री मुक्तिप्रभ सागरजी, मुनिश्री मनीषप्रभसागरजी, मुनिश्री मंयकसागरजी म.सा.आदि ठाणा-6 एवं साध्वीजी म.सा. का चार्तुमास हुआ। चार्तुमास महावीरबाग इन्दौर में हो रहा है।

श्री अवंति पार्श्वनाथ तीर्थ में अंजन-प्रतिष्ठा महोत्सव 18 फरवरी 2019 को

उज्जैन- श्री अवंति पार्श्वनाथ महातीर्थ में अंजन-प्रतिष्ठा का आयोजन 18 फरवरी 2019 को होगा। 17 फरवरी को अंजन एवं 18 फरवरी को प्रतिष्ठा सम्पन्न होगी। प्रतिष्ठा में निश्रा प्रदान करने के लिये इस पर पूज्य गच्छाधिपति जैनाचार्य श्री जिनमणिप्रभ सागरसूरीजी म.सा. का चार्तुमास इन्दौर दादावाड़ी में हो रहा है।

सागर सरताज पूज्यपाद गच्छाधिपति का चार्तुमास प्रवेश 21 जुलाई को आगममंदिर पालीताना में हुआ

* देशभर से गुरु भगवंत जुड़े।
* बाजेगाजे के साथ प्रवेश जोरदार रहा।

पालीताना-सागर समुदाय के गच्छाधिपति पूज्यपाद आचार्य देवेश जिनागमसेवी श्री दौलतसागर सूरीजी महाराजा, पूज्य आचार्य श्री नंदीवर्धन सागरसूरीजी म.सा., पूज्य आचार्य श्री हर्षसागरसूरीजी म.सा., मुनि श्री पद्मकीर्तिसागरजी म.सा., श्री हीरसागर सूरीजी म.सा., श्री हर्षकीर्तिसागरजी म.सा. श्री तत्वरत्नसागरजी म.सा., श्री हितसागरजी म.सा., श्री दीपरत्न सागरजी म.सा.आदि साधु-साध्वी भगवंत का आगम मंदिर, पालीताना में जोरदार चातुमार्सिक प्रवेश, सागर गच्छाधिपति की गरिमा के अनुकूल हुआ। बड़ी संख्या में गुजरात, महाराष्ट्र मध्यप्रदेश के साथ देश के अनेक राज्यों से गुरुभक्तों का आगमन हुआ। चार्तुमास प्रवेश प्रातः 6.30 बजे हुआ। प्रांसगिक धर्मसभा के बाद प्रभावना, स्वामी वात्सल्य हुआ। अनेक धर्मिष्ठ चार्तुमास (दो माह) एवं महापर्व की आराधना करने के लिये आनेवाले है।

पूज्यपाद जैनाचार्यश्री जगतचंदसूरीजी म.सा. का वेपेरी जैन श्री संघ चैन्नई में चार्तुमास प्रवेश हुआ

चैन्नई- पूज्यपाद जैनाचार्य श्री विजय जगतचंदसूरीजी म.सा. (डेहलावाले) आदि ठाणा-31 साध्वी श्री रत्नचुला श्रीजी आदि ठाणा-16 एवं साध्वी श्री राजप्रज्ञा श्रीजी आदि ठाणा-13 का भव्य चातुर्मासिक प्रवेश वेपेरी श्री संघ में हुआ। दिनांक 14 जुलाई को हुए प्रवेश में गुजरात, महाराष्ट्र मध्यप्रदेश से बड़ी संख्या में गुरुभक्त चैन्नई पहुंचे थे। प्रासंगिक प्रवचन के साथ बाहर से पधारे गुरुभक्तों ने भी अपने विचार व्यक्त किये। चार्तुमास श्री वेपेरी श्वेतांबर श्री संघ-59 इ.वी.के. सम्पत रोड़, वेपेरी, चैन्नई-600007 (टीएन) में हो रहा है।

गुमास्तानगर इन्दौर में प्रवेश

इन्दौर- श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ जैन मंदिर, गुमास्ता नगर, इन्दौर (म.प्र.) में पूज्य साध्वी अमितगुणा श्रीजी की सुशिष्या साध्वी श्री अर्हता श्रीजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास प्रवेश 22 जुलाई को हुआ।

साध्वीवर्या श्री शशिप्रभा श्रीजी का चार्तुमास राजोद में

राजोद-धार के समीप श्री जैन श्वेतांबर श्रीसंघ राजोद में साध्वीवर्या श्री शशिप्रभा श्रीजी म.सा.आदि ठाणा का भव्य चार्तुमास आरंभ हो गया है। विगत दिनों उज्जैन से विहार कर आप जुलाई के अंतिम सप्ताह में राजोद पधारी जहां आपके चार्तुमास प्रवेश पर भव्य शोभायात्रा का आयोजन किया गया। प्रवेश पर अनेक स्थानों से श्रावक-श्राविका का आगमन हुआ था।

देवलोकगमन

पूज्य बंधु त्रिपुरी आचार्यदेव श्री अशोकसागरसूरीजी म.सा., आचार्य श्री जिनचंद्रसागरसूरीजी म.सा. आचार्यश्री हेमचंदसागर सूरीजी म.सा. की मासी म.सा. बापजी समुदाय के आचार्यश्री नररतनसूरीजी म.सा. की आज्ञानुवर्तीय पू.साध्वी श्री हर्षकांताश्रीजी म.सा. का देवलोकगमन 7 जुलाई को श्री अयोध्यापुरम् तीर्थ में हुआ इसी दिन दोपहर मे अग्नि संस्कार हुआ।

कात्रज तीर्थ में ग्रीष्मकालीन उपधान हुआ

पूना- पूज्य आचार्य श्री देवचंद सागर सूरीजी म.सा. गणिवर्य श्री दिव्यचंद सागरजी म.सा., मुनिश्री मनमीत सागरजी म.सा.आदि ठाणा की पावन निश्रा में यहां ग्रीष्मकालीन उपधान तप में बड़ी संख्या में बच्चों ने आराधना की। लगभग 65 बच्चों को युवा मुनिप्रवर श्री मनमीतसागरजी ने किया आदि के साथ आराधना करवाई। साध्वी हर्षरत्नाश्रीजी ने श्राविकाओं को आराधना कराने में योगदान दिया।

साध्वी पूर्णयशाश्रीजी का प्रवेश हुआ

उज्जैन-सागर समुदायवर्तीय साध्वीवर्या श्री पूर्णयशा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा का चातुमार्सिक प्रवेश 20 जुलाई को सम्पन्न हुआ। श्री शीतलनाथ जैन श्वेतांबर कांच मंदिर से चार्तुमास प्रवेश आरंभ होकर श्री ऋषभदेव छगनीराम पेढ़ी पहुंचा जहां धर्मसभा का आयोजन किया गया। प्रवेश पर महिला मंडल के साथ बड़ी संख्या मे श्रावक-श्राविका उपस्थित थे।

खरतर गच्छाधिपति जैनाचार्य श्री जिनमणि प्रभसागर सूरीजी ने श्री अवंति पार्श्वनाथ जिनालय प्रतिष्ठा की तैयारी का जायजा लिया

- ✻ प्रतिष्ठा 18 फरवरी 2019 में होगी।
- ✻ 15 जुलाई को उज्जैन श्रीसंघ की बैठक हुई।
- ✻ प्रतिष्ठा की व्यापक चर्चा हुई।
- ✻ पूज्यश्री का चार्तुमास इन्दौर में।

उज्जैन- चार्तुमास आरंभ होने के पूर्व खरतर गच्छाधिपति पूज्य जैनाचार्य श्री जिनमणिप्रभसागरसूरीजी म.सा. आदि ठाणा का भव्य आगमन उज्जैन में हुआ। आपश्री 15 जुलाई को प्रातः उज्जैन पधारे। श्रीसंघ ने आपकी अगवानी की। आपश्री निश्रा में श्री अवंति पार्श्वनाथ जिनालय में 18 फरवरी 2019 में होनेवाली भव्य प्रतिष्ठा महोत्सव को सफलता पूर्वक सम्पन्न करवाने हेतु उज्जैन श्री संघ की बैठक का आयोजन किया गया। प्रतिष्ठा समिति के अध्यक्ष श्री पारस जैन (ऊर्जा मंत्री, म.प्र.शासन) की विशेष उपस्थिति रही। श्री संघ अनेक धर्मिष्ठों की प्रतिष्ठा अच्छी तरह से सम्पन्न करवाने हेतु अपने विचारों से अवगत कराया। प्रतिष्ठा से संबंधित समितियां बनाने के साथ अनेक सुझाव दिये गये जिनकी तैयारियां आरंभ हो गई है। पूज्यश्री का चार्तुमास इन्दौर रामबाग दादावाड़ी में हो रहा है।

जैनाचार्य श्री जितरत्नसागरसूरीजी का चार्तुमास प्रवेश 25 जुलाई को धूमधाम से हुआ

- ✻ कु.सोनल ने प्रवज्या ग्रहण की साध्वी तरंगरत्ना बनी।
- ✻ जैनाचार्य ज्योतिर्विद श्री जिनरत्नसागरसूरीजी का चार्तुमास धार में।

मुंबई- पूज्यपाद प्रवचन प्रभावक जैनाचार्य श्री जितरत्नसागरसूरीजी म.सा. चार्तुमास हेतु मुंबई पहुंचने के बाद मुंबई के संघों विहार किया। 22 जुलाई को आपश्री की निश्रा में कु.सोनल का भव्य दीक्षा महोत्सव डोंगरी में मनाया गया। उत्साह भरे वातावरण में प्रवज्या महोत्सव सम्पन्न हुआ। पूज्य आचार्य भगवंत का चातुमार्सिक प्रवेश 25 जुलाई को मालवा से आये भक्तों की उपस्थिति मे धूमधाम से हुआ। पूज्य ज्योतिर्विद जैनाचार्य श्री जिनरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा. आयंबिल आराधक जैनाचार्य श्रीचन्द्ररत्नसागर सूरीजी म.सा. का चार्तुमास श्री भक्तमर महा तीर्थ अभ्युदयधाम, धार में हो रहा है जहां 10-11 फरवरी 2019 में प्रतिष्ठा का पंचान्हिका महोत्सव आयोजित होने जा रहा है। पूज्य आचार्यश्री का चार्तुमास के बाद तुरन्त ही विहार मालवा के लिये होगा।

साध्वीवर्या सुरेखाश्रीजी म.सा. का चार्तुमास प्रवेश हुआ

उज्जैन- पूज्यपाद जैनाचार्य मालव भूषण गुरुदेवश्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा के पट्टधर सुशिष्य आचार्य देवेश मालव विभूति श्री अपूर्वमंगल रत्न सागरसूरीजी म.सा.की बहन महाराज साध्वी श्री सुरेखाश्रीजी म.सा.आदि ठाणा का मंगलमय चातुमार्सिक प्रवेश 15 जुलाई को हुआ। श्री अवंति पार्श्वनाथ जिनालय से प्रवेश यात्रा श्री हीरविजय बड़ा उपाश्रय पहुंची जहां धर्मसभा का आयोजन और नवकारसी रखी गई थी। प्रवेश पर बाहर से अनेक धर्मिष्ठ आये थे।

साध्वी दमिताश्रीजी का चार्तुमास नयापुरा में

उज्जैन- सागर समुदाय की वरिष्ठ साध्वीवर्या श्री दमिताश्रीजी म.सा. का चातुमार्सिक प्रवेश 15 जुलाई को सम्पन्न हुआ। श्री चंद्रास्वामीजी जैन श्वेतांबर मंदिर, नयापुरा उज्जैन में आपका प्रवेश हुआ।

जैनाचार्यश्री कलाप्रभ सागरसूरीजी का चार्तुमास पालीताना में

पालीताना-पूज्य आचार्य देवेश श्री कलाप्रभसागरसूरीजी म.सा. का चातुमार्सिक प्रवेश23 जुलाई को धूमधाम से हुआ। आपका चार्तुमास श्री पन्नारुपा धर्मशाला में हो रहा है।

आचार्यश्री नयपद्मसागर सूरीजी का चार्तुमास ताड़देव में

मुंबई- पूज्य जैनाचार्य श्री नयपद्मसागर सूरीजी म.सा.का चार्तुमास प्रवेश 25 जुलाई को गाजे-बाजे के साथ हुआ, चातुर्मास वास्तुशिल्य गामड़िया कालोनी रोड़ ताड़देव-मुंबई (महा.) में हो रहा है।

जैनाचार्य श्री मुक्तिसागरसूरीजी का प्रवेश राजाजीनगर में हुआ

✻ साध्वी श्री दिव्ययशाजी का भी चार्तुमास हो रहा है।

बैंगलोर- श्री पार्श्व सुशीलाधाम में सफल उपधान तप आराधना सम्पन्न करवाने के बाद पूज्यपाद पंन्यास प्रवर श्री अभ्युदयसागरजी म.सा. के सुशिष्य जैनाचार्य मालव मार्तण्ड श्री मुक्तिसागरसूरीजी म.सा., मुनिश्री अंचलरत्नसागरजी म.सा. एवं साध्वीवर्या श्री दिव्ययशा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा का भव्य चातुमार्सिक प्रवेश 18 जुलाई को बैंगलौर के राजाजी नगर जैन श्वेतांबर श्री संघ में हुआ। चार्तुमास प्रवेश पर मालवा आदि स्थानों से बड़ी संख्या में धर्मिष्ठों का आगमन हुआ था। पूज्यश्री ने चार्तुमास की रुपरेखा रखी। प्रासंगिक प्रवचन, सधर्मिक वात्सल्य हुआ।

पूज्यपाद मालव विभूति जैनाचार्य श्री अपूर्वमंगलरत्न सूरीजी के शिष्यों का चार्तुमास सिद्धाचल में

✻ नवांणु यात्रा नवंबर के अंतिम सप्ताह में
✻ वल्लभीपुर में 500 आचार्यो का खमासणा दिये।
✻ प्रवेश 25 जुलाई को बनासकांठा धर्मशाला में।

पालीताना-पूज्यपाद मालव भूषण गुरुदेव श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा के पट्टधर सुशिष्य आचार्य श्री अपूर्वमंगलरत्न सागर सूरीजी म.सा. के सुशिष्य मुनिप्रवर श्री आगम रत्नसागरजी,श्री प्रशमरत्न सागर जी, श्री वज्ररत्न सागर जी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास प्रवेश 25 जुलाई को भव्य सामैया के साथ हुआ। चार्तुमास बनासकांठा धर्मशाला में हो रहा है। चार्तुमास की पूर्णाहुति होते ही आपकी निश्रा में नव्वांणु यात्रा का आयोजन होने जा रहा है। चार्तुमास एवं नव्वांणु की व्यवस्था का प्रभार बैंगलोर के सुरेन्द्रगुरुजी देखेंगे। चार्तुमास प्रवेश के पूर्व वल्लभीपुर में मुनि भगवंतों ने 500 आचार्यो की प्रतिमा के समक्ष 500 खमासणा देकर शासन प्रभावना की भव्य अनुमोदना भी करी।

परमात्मा की भव्य रथयात्रा निकलेगी

अहमदाबाद- श्री जिनज्ञा युवा ट्रस्ट के द्वारा 12 अगस्त को अहमदाबाद में विशाल रथयात्रा का आयोजन होने जा रहा है। आचार्यश्री शीलरत्नसूरीजी की प्रेरणा से होनेवाली परमात्मा की रथयात्रा 5000 प्रतिमा की प्रदक्षिणा देगी। अहमदाबाद में विराजित सभी साधु-साध्वी के साथ हजारों की संख्या में धर्मिष्ठ सम्मिलित होंगे।

साध्वी श्री मुक्तिनिलयाश्रीजी का चार्तुमास इन्दौर में

इन्दौर- सागर समुदाय की साध्वी श्री मुक्ति निलया श्रीजी म.सा. का चार्तुमास जैन उपाश्रय पिपली बाजार इन्दौर में हो रहा है। प्रवेश 25 जुलाई को हुआ।

जैनाचार्यनिपुणरत्नसूरीजी का चार्तुमास दलोट में

दलोट- पूज्य आचार्य श्री जिनेन्द्र सूरीजी म.सा. के सुशिष्य आचार्यश्री निपुणरत्न सूरीश्वरजी म.सा.आदि साधु-साध्वी मंडल का चार्तुमास श्री शीतलनाथ जैन मंदिर दलोट (प्रतापगढ़) राज. में होने जा रहा है। आपका चार्तुमास प्रवेश 21 जुलाई को हुआ। नूतन आराधना भवन का उद्-घाटन भी होगा।

मातृहृदया साध्वी अमितगुणाश्री का चार्तुमास खण्डवा में

खण्डवा- सागर समुदाय की वरिष्ठ साध्वीवर्या श्री अमितगुणा श्रीजी का चार्तुमास खण्डवा में हो रहा है। मालवा, महाराष्ट्र के अनेक लोगों की उपस्थिति में आपका प्रवेश 18 जुलाई को हुआ। आनंद वाटिका, श्री नेमिनाथ जैन श्वेतांबर मंदिर के पास, रामकृष्ण गंज खण्डवा-450001 (म.प्र.) चार्तुमास स्थल है। प्रवेश पर साध्वीवर्या ने सद् गुणों को सेव दुर्गणों को डिलीट एवं सद्विचारों को फारवर्ड करने का मंत्र दिया। चार्तुमास में अनेक धार्मिक कार्यक्रम होंगे।

मुनिश्री सम्यकचंद्रसागरजी का चार्तुमास इन्दौर में

इन्दौर- पूज्य बंधु बेलड़ी आचार्य श्री जिनचंदसागरसूरीजी एवं आचार्य श्री हेमचंदसागरसूरीजी म.सा.के शिष्यरत्न मुनिश्री सम्यकचंदसागरजी का चार्तुमास प्रवेश 25 जुलाई को हुआ। आपका चार्तुमास श्री अंर्बुजगिरी जैन उपाश्रय, पिपली बाजार, इन्दौर (म.प्र.) में हो रहा है।

आगामी कुछ महत्वपूर्ण तिथियां

1- श्रावण वदी-30	शनिवार	11 अगस्त 2018
		- पूज्यपाद आगमोद्धारक श्री सागरानंद सूरीजी का जन्मदिन
2-श्रावण सुद-5	बुधवार	15 अगस्त 2018
		- महिने का घर
3- श्रावण सुद-11	बुधवार	22 अगस्त 2018
		- ईद-बकरा आयंबिल दिन
4- भादवा वदी-4	गुरुवार	30 अगस्त 2018
		- पन्द्रह का घर
5- भादवा वदी-11	गुरुवार	6 सितम्बर 2018
		- महापर्व पर्युषण आरंभ
6- भादवा वदी-30	रविवार	9 सितम्बर 2018
		- कल्पघर कल्पसूत्र वांचन
7- भादवा सुदी-1	सोमवार	10 सितम्बर 2018
		- श्री महावीर जन्मवाचन
8- भादवा सुदी-2	मंगलवार	11 सितम्बर 2018
		- तेलाघर गणधरवाद
9-भादवा सुदी-4	गुरुवार	13 सितम्बर 2018
		- संवत्सरी महापर्व बारसा सूत्र वांचन, प्रतिक्रमण क्षमापना
10-आसो सुद-7	मंगलवार	16 अक्टूबर 2018
		- आसोज नवपद ओली प्रारंभ
11-कार्तिक वदी-13	सोमवार	5 नवंबर 2018
		- धनतेरस
12-कार्तिक वदी-14	मंगलवार	6 नवंबर 2018
		- काली चवदस
13-कार्तिक वदी-30	बुधवार	7 नवंबर 2018
		- श्री महावीर निर्वाण दिवस, दीपावली-लक्ष्मीपूजन
14-कार्तिक सुदी-1	गुरुवार	8 नवंबर 2018
		-नूतन वर्षारंभ, श्री गौतमस्वामी- केवलज्ञान (वि.सं.2075) वीर संवत् 2545
5-कार्तिक सुदी-5	सोमवार	12 नवंबर 2018
		- ज्ञान पंचमी, लाभ पांचम

सारंगपुर में चार्तुमास- सारंगपुर- सागर समुदाय की साध्वी श्री शासनज्योतिश्रीजी म.सा. का चार्तुमास सारंगपुर श्रीसंघ में होगा। प्रवेश 25 जुलाई को हुआ।

जैनाचार्य धर्मधुरंधर सूरीजी का चार्तुमास कालाचौकी

मुंबई- श्री दीपक ज्योति जैन संघ काला चौकी के तत्वावधान में पंजाब केसरी विजय वल्लभसूरि समुदाय के गुरु आत्म वल्लभ समुद्र इन्द्र रत्नाकर सूरीजी म.सा. के पट्टधर वर्तमान गच्छाधिपति श्रुत भास्कर प.पू. आचार्य देव श्रीमद् विजय धर्मधुरंधर सूरीजी म.सा.आदि साधु-साध्वी भगवंतों का भव्यातिभव्य चार्तुमास प्रवेश 18 जुलाई को प्रातः शुभ मुहूर्त में हुआ। पूज्य गुरु भगवंतों का स्वागत सामैया के साथ प्रवेश जुलूस नगर के मुख्य मार्गो से होता हुआ चार्तुमास स्थल श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जैन मंदिर, दीपक ज्योति कॉ. ऑप. सोसायटी, परेल टेंक रोड़, काला चौकी मुंबई पहुंचा जहां पूज्याचार्यश्री का मांगलिक प्रवचन एवं स्वागत समारोह आयोजित हुआ।

जैनाचार्य श्री पद्म सागर सूरीजी का चार्तुमास भायंदरनगर में

भायंदर- महाराष्ट्र की मुंबई महानगर स्थित भायंदर उपनगर की धर्म धरा पर श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ बावन जिनालय जैन पेढ़ी ट्रस्ट के तत्वावधान में श्री बावन जिनालय के प्रांगण में राष्ट्रसंत प.पू.आचार्यदेव श्रीमद् पद्मसागर सूरीश्वरजी म.सा.आदि श्रमण-श्रमणीवृंदो का कल्याणकारी चार्तुमास होगा। पूज्य गुरु भगवंतों का चार्तुमास प्रवेश 18 जुलाई को हजारों गुरुभक्तों की उपस्थिति में धूमधाम से हुआ।

सरस्वती पुत्र जैनाचार्य श्री रत्नसुन्दर सूरीजी के चार्तुमास प्रवेश पर जैन श्रेष्टीवर्य का बड़ नगर में मेला लगा

***चातुर्मास प्रवेश जोरदार रहा।**

*** देश के लब्धि प्रतिष्ठित श्रावकों का आगमन हुआ**

*** मालवा के जैन श्रीसंघों सानिध्य मिला।**

*** उज्जैन आगमन हुआ।**

उज्जैन- सरस्वती नंदन के रुप में प्रसिद्ध श्रुतज्ञान आराधक जैनाचार्य श्री रत्नसुंदरसूरीश्वरजी म.सा. का मंगलमय चातुमार्सिक प्रवेश 21 जुलाई को बड़नगर मे हुआ। चार्तुमास प्रवेश का लम्बे समय से इंतजार कर रहे धर्मिष्ठों ने पूज्यश्री की जोरदार अगवानी की। प्रवेश के अवसर पर देशभर से लब्धि प्रतिष्ठित श्रावकों का आगमन हुआ था। बम्बई से श्री मोंटेक्स ग्रुप से रमणभाई, चैन्नई से रमेश मुथा, अहमदाबाद से प्रकाश सिरोही के साथ अनेक सुश्रावक आये थे। हजारों की संख्या में श्रावक-श्राविका प्रवेश जुलूस में नाचते-गाते एवं नारे लगाते हुए चल रहे थे। सारा शहर रत्नसुन्दरमय हो गया था। विशाल डोम को प्रवचन हाल बनाया गया है जहां सामैया पहुंचने पर विशाल धर्मसभा का आयोजन किया गया। अनेक वक्ताओं ने पूज्यश्री के गुणगान गाये। रतलाम के साथ में चैन्नई के 68 श्रीसंघों ने आगामी चार्तुमास की विनंती की। विशेष रुप से वेपेरी श्री संघ ने गुरु पूजा और कांबली का लाभ लेते हुए चार्तुमास करने की भावभरी विनंती की। धर्मसभा के बाद में सधर्मिक वात्सल्य का आयोजन हुआ। पूज्यश्री के प्रतिदिन हो रहे प्रवचन में जैन-अजैन एवं बाहर से बड़ी संख्या में श्रावकों का आगमन हो रहा है। 52 वें संयम वर्ष मे चल रहे पूज्यश्री आपका यह तीसरा चार्तुमास है। इसके पूर्व इन्दौर, रतलाम में आपके चार्तुमास हो गये हैं।

सागर समुदाय के जैनाचार्य श्री बंधुबेलड़ी का रतलाम में चातुमार्सिक प्रवेश 22 जुलाई को हुआ

***दीक्षा भी हुई।**

रतलाम- सागर समुदाय के वरिष्ठ आचार्य भगवंत दर्शन प्रभावक श्री जिनचंद्रसागर सूरीश्वरजी म.सा. प्रवचन प्रभावक श्री हेमचंद्रसागर सूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा का मंगल चार्तुमास रतलाम श्रीसंघ में हो रहा है। पूज्यपाद बंधुबेलड़ी आचार्य भगवंत चार्तुमास के पूर्व अनेक शासन प्रभावक कार्यो से जिनशासन के साथ मालवा का गौरव बढ़ाया। मालवा के श्रीसंघों में शासन प्रभावना करते हुए आपश्री ने 15 जुलाई को रतलाम प्रवेश किया एवं श्री संघों मे विहार कर जिनशासन की प्रभवना की। **22 जुलाई को आपश्री का भव्य चातुमार्सिक प्रवेश रतलाम श्रीसंघ में हुआ बड़ी संख्या में देश के विभिन्न प्रांतों से गुरुभक्त-धर्मिष्ठों का आगमन हो गया था।**

* पू. आचार्यश्री कल्याणसागर सूरीजी म.सा.,आचार्य श्री राजतिलक सागरसूरीजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास श्री नागेश्वर महातीर्थ, नागेश्वर, उन्हेल (राज.) में हो रहा है।

साध्वीश्री पद्मलताश्रीजी का चार्तुमास इन्दौख में

आष्टा- विगत दिनों पूज्य साध्वी श्री पद्मलताश्रीजी म.सा. की सुशिष्या बनी नूतन साध्वीवर्या श्री तत्वरुचिश्री म.सा. अपनी गुरुवर्या के साथ प्रथम चार्तुमास इन्दौख जिला उज्जैन में कर रहे है। इन्दौख श्री संघ में अपार हर्ष है।

मुनि श्री मुनिरत्नसागरजी का चार्तुमास

इन्दौर- सागर समुदाय के श्री मुनि मुनिरत्नसागरजी म.सा.का आगामी चार्तुमास आगमोध्दारक की नगरी कपडवंज, गुजरात में हो रहा है।

पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय जयानन्दसूरीश्वरजी म.सा. का पवेश 23 जुलाई को

राजगढ़- सौधर्म बृहत्पागच्छीय त्रिस्तुतिक समुदाय के परम पूज्य आचार्य देव श्रीमद् विजय विद्याचंद्र सूरीश्वरजी म.सा. के पट्टधर शासन प्रभावक परम पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय जयानन्दसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा का मोहनखेड़ा तीर्थ समीपस्थ राजगढ़ (जिला-धार) (म.प्र.) में चातुर्मासिक प्रवेश आषाढ़ सुदी-11, सोमवार, 23 जुलाई को हुआ।

हमारे तीज-त्यौहार

1-	श्रावण वदी-11	मंगलवार	7/8/2018	रोहिणी
2-	श्रावण वदी-30	शनिवार	11/8/2018	आगमोद्धारकश्री सागरानंदसूरीजी का जन्म दिन
3-	श्रावण सुद-3	सोमवार	13/8/2018	श्री सीमंधरस्वामीजी आदि का निर्वाणक कल्याणक
4-	श्रावण सुद-5	बुधवार	15/8/2018	महिने का घर
5-	श्रावण सुद-8	शनिवार	18/8/2018	श्री पार्श्वनाथ प्रभु का निर्वाण कल्याणक
6-	श्रावण सुद-11	बुधवार	22/8/2018	आयंबिल दिन (बकराईद)
7-	भादवा वदी-4	गुरुवार	30/8/2018	पन्द्रह का घर

पुष्प नक्षत्र :- **आरम्भः-** श्रवण वद-14, शुक्रवार, दिनांक-10/8/2018, प्रातः 05.45 बजे
समाप्तः- श्रवण वद-30, शनिवार, दिनांक-11/8/2018, प्रातः 02.55 बजे

पंचक :- **आरम्भः-** भादवा सुद-08, शनिवार, दिनांक-18/8/2018, प्रातः 23.15 बजे
समाप्तः- भादवा वदि-04, गुरुवार, दिनांक-30/8/2018, प्रातः 20.02 बजे

"आगमोद्धारक" 2018 अंक के -: आगामी विशेषांक :-

✻ सितंबर 2018 पर्युषण पर्व।

✻ नवंबर 2018 दीपावली।

आपकी रचनाएं भेजिए।

सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है

जैन जगत की प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध मासिक पत्रिका आगमोद्धारक के सदस्यता अभियान के लिये सारे देश में प्रतिनिधियों की नियुक्ति की जा रही है। सक्रिय युवा भाई-बहन जो जिनशासन के प्रचार-प्रसार हेतु अपनी सेवा देना चाहते है वे तुरन्त निम्न पते पर संपर्क करें।

प्रतिनिधि को कम से कम 25 सदस्य बनाना आवश्यक है। आपकी सहमति प्राप्त होने पर रसीद कट्टे एवं प्रचार-प्रसार सामग्री आपको भेजी जायेगी। सम्पादक से सम्पर्क करें।

तू 'मनुष्य' तो बन.... *हे मानव ! तू वकील, डॉक्टर, संगीतकार, न्यायाधीश, सेनापति मंत्री या प्रधानमंत्री बाद में बनना, पहले तुम 'मनुष्य' बनना ! सिर्फ आकृति से तुम मनुष्य बन गया है, लेकिन प्रकृति से तू शायद 'मनुष्य' नहीं बना है ! मानवता को प्राप्त करना अभी बाकी है ! प्रभु के पास मांगते हुए कहना, ' मैं मनुष्य मानव बनूँ तो बहुत ! '*

सादर आमंत्रण

✻ पूज्य साधु-साध्वीजी से विनंती है कि आपके चार्तुमास एवं सभी धार्मिक कार्यक्रमा की जानकारी एवं धार्मिक महोत्सव की सूचना आगमोद्धारक तक पहुंचाने का कष्ट करें, ताकि अंक आपको लगातार भेजा जा सके तथा समाचार प्रकाशित किया जा सकें।

✻ आगमोद्धारक के लिये आपकी रचनाएं भी प्रकाशन के लिये निरंतर भेजते रहे। आपकी रचना से हम प्रोत्साहित होंगे।

✻ पत्रिका को और अच्छा बनाने के लिये आपके सुझाव, मार्गदर्शन भी भेजते रहे ताकि आगमोद्धारक की गुणवत्ता बढ़ाई जा सके।

✻ अंक आपके तक नियमित रुप से नवीन स्वरुप के साथ 10 तारीख तक पहुंचे ऐसा हमारा प्रयास रहता है, अंक अप्राप्ति पर शीघ्र सूचित करें।

- सम्पादक

आगमधरसूरी आगम वाचनादाता आगमिक प्रवर व्याख्याता श्रीसागरजी महाराजा की कुछ विशिष्टताऐं

1. 821457 श्लोक प्रमाण में 175 छोटे बड़े आगम प्रकरण ग्रंथों, सैद्धांतिक ग्रंथों आदि का सुंदर सम्पादन।
2. 70 हजार श्लोक प्रमाण आगमिक प्राकृत ग्रंथों ओर अनेक विविध संकलना ग्रंथों का अभिनव सर्जन।
3. 60 से 70 हजार श्लोक प्रमाण में 150 ग्रंथों प्रकरणों का मौलिक सृजन।
4. 20 हजार श्लोक प्रमाण गुजराती, हिन्दी साहित्य के 25 ग्रंथों का सृजन।
5. 2,00,000 (दो लाख) श्लोक प्रमाण आगम प्रकरण ग्रंथों की आरस (पत्थर) की 60 गुणा 24 की शिला पर उकेरवाना।
6. दो लाख श्लोक प्रमाण आगम आदि ग्रंथ को 24 गुणा 30 आकार के लेजर कागज पर सर्वांग शुद्ध रूप से मुद्रण करवाना।
7. प्राचीन 80 ग्रंथों पर प्रौढ़ संस्कृत भाषा में 15000 श्लोक प्रमाण विशिष्ठ प्रस्तावना लेखन।
8. वि.सं. 1971 से 1977 के मध्य सात आगम वाचना में कुल 2,33,200 श्लोक प्रमाण वाचना प्रदान की।
9. आगम मंदिर, पालीताना प्रतिष्ठा विक्रम संवत 1999 महावद 5
10. आगम मंदिर, सूरत प्रतिष्ठा विक्रम संवत 2004 महासुद 3
11. अर्द्ध पद्मासन स्थिति विक्रम संवत 2006 वैशाख सुद 5 दोपहर 3बजे से वैशाख वद 5 दोपहर 4.32 तक सूरत में।

वर्ष-23 ज्येष्ठ-आषाढ़-श्रावण अगस्त2018 अंक-8 प्रकाशन उज्जैन

मूल्य 10/- रुपये

आर.एन.आई. नं. 0048570/29/30/982
पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन. नं. एम.डी. 08/2018-2020

बुक-पोस्ट

प्रति,
श्रीमान्

प्राप्त न होने पर कृपया लौटायें –
प्रति,
डॉ. सुभाष जैन (सम्पादक)
आगमोद्धारक
46, सखीपुरा, उज्जैन – 456 001 (म.प्र.)
फोन : 0734 – 2558353, मोबा. 09425091012

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन उज्जैन के लिये डॉ. सुभाष जैन – संपादक द्वारा प्रकाशित एवं एम.बी. ऑफसेट प्रिंटर्स
285, एम.जी. रोड, इंदौर से मुद्रित। फोन : 0734 – 2412232, संपादक फोन : 0734 – 2558353, मोबा. 09425091012